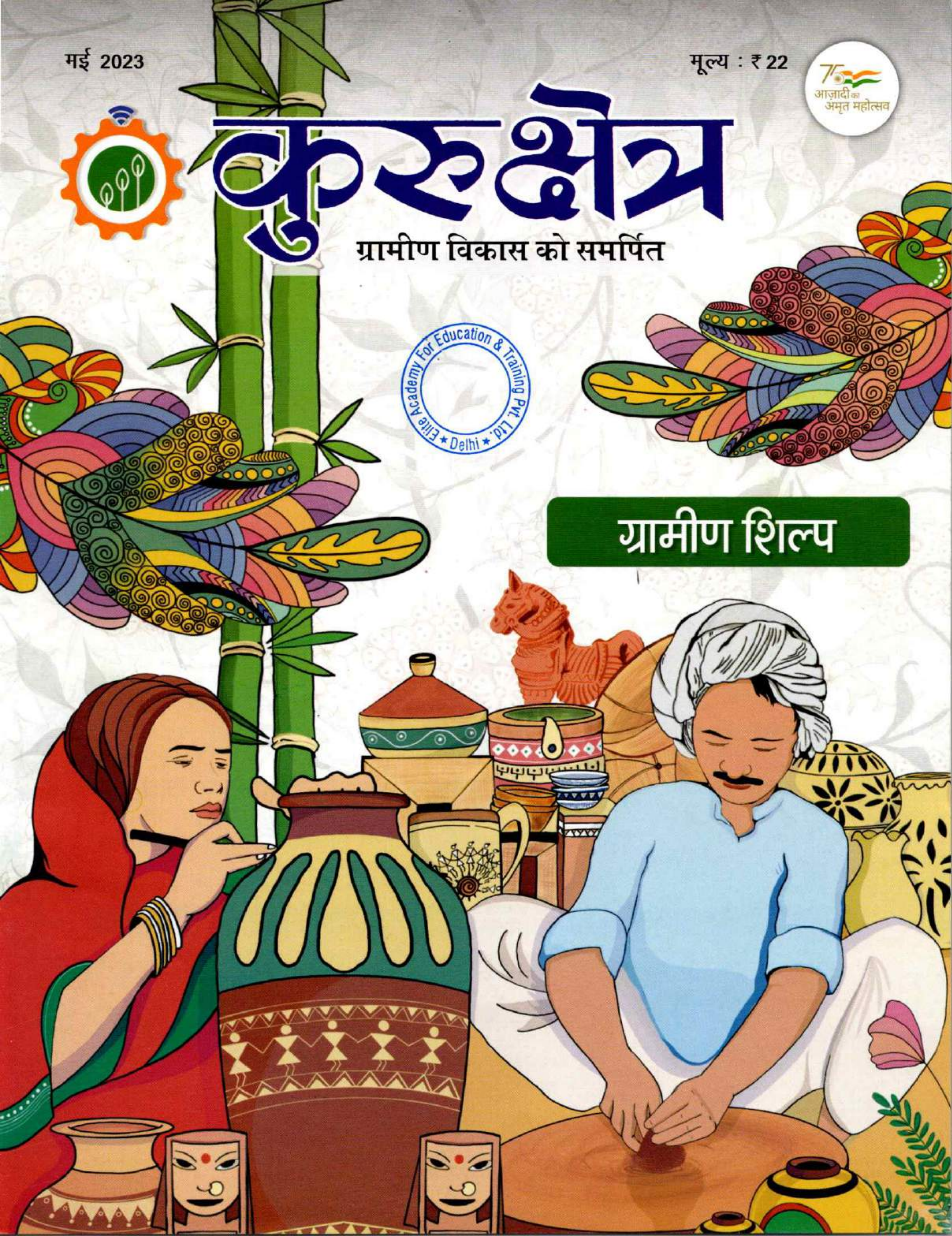

Elite Academy For Education & Training Pvt. Ltd. ★ Delhi ★

ELITE IAS

(A PREMIER INSTITUTE FOR CIVIL SERVICES PREPARATION)

ARE YOU DREAMING TO BE AN

IAS ?

CRACK UPSC IN 1ST ATTEMPT NOW

Our Offerings

- Personal Mentorship 1:1 by Subject Expert
- GS Integrated Live Classes
- Exclusive NCERT Coverage
- Intergrated Prelims Cum Mains + Essay Test Series
- Weekly Test, Revision and Personal Guidance
- Online/Offline Sessions

TALK TO US

8410000036, 7065202020, 8899999931

BOOK FREE DEMO SESSION

www.eliteias.in

हमारी पत्रिकाएँ

योजना
विकास को समर्पित मासिक
(हिंदी, अँग्रेज़ी, उर्दू व 10 अन्य भारतीय भाषाओं में)

प्रकाशन विभाग
सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

कुरुक्षेत्र
ग्रामीण विकास पर मासिक
(हिंदी और अँग्रेज़ी)

आजकल
साहित्य एवं संस्कृति का मासिक
(हिंदी तथा उर्दू)

बाल भारती
बच्चों की मासिक पत्रिका
(हिंदी)

Elite Academy For Education & Training Pvt. Ltd. ★ Delhi ★

घर पर हमारी पत्रिकाएँ मंगाना है काफी आसान...

आपको सिर्फ नीचे दिए गए 'भारत कोश' के लिंक पर जा कर पत्रिका के लिए ऑनलाइन डिजिटल भुगतान करना है–
https://bharatkosh.gov.in/Product/Product

सदस्यता दरें

प्लान	योजना या कुरुक्षेत्र या आजकल		बाल भारती	
वर्ष	साधारण डाक	ट्रैकिंग सुविधा के साथ	साधारण डाक	ट्रैकिंग सुविधा के साथ
1	₹ 230	₹ 434	₹ 160	₹ 364

ऑनलाइन के अलावा आप डाक द्वारा डिमांड ड्राफ्ट, भारतीय पोस्टल आर्डर या मनीआर्डर से भी प्लान के अनुसार निर्धारित राशि भेज सकते हैं। डिमांड ड्राफ्ट, भारतीय पोस्टल ऑडर या मनीआर्डर '**अपर महानिदेशक, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय**' के पक्ष में **नई दिल्ली** में देय होना चाहिए।

अपने डीडी, पोस्टल आर्डर या मनीआर्डर के साथ नीचे दिया गया 'सदस्यता कूपन' या उसकी फोटो कॉपी में सभी विवरण भरकर हमें भेजें। भेजने का पता है-
संपादक, पत्रिका एकांश, प्रकाशन विभाग, कक्ष सं. 779, सूचना भवन, सीजीओ कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003

अधिक जानकारी के लिए ईमेल करें- pdjucir@gmail.com

हमसे संपर्क करें- **फोन : 011-24367453** (सोमवार से शुक्रवार सभी कार्य दिवस पर प्रात: साढ़े नौ बजे से शाम छह बजे तक)

कृपया नोट करें कि सदस्यता शुल्क प्राप्त होने के बाद सदस्यता शुरू होने में कम से कम आठ सप्ताह लगते हैं। कृपया इतने समय प्रतीक्षा करें और पत्रिका न मिलने की शिकायत इस अवधि के बाद करें।

सदस्यता कूपन (नई सदस्यता/नवीकरण/पते में परिवर्तन)

कृपया मुझे 1 वर्ष के प्लान के तहत .... पत्रिका .... भाषा में भेजें।

नाम (साफ व बड़े अक्षरों में) ....

पता : ....

.... ज़िला .... पिन ....

ईमेल .... मोबाइल नं. ....

डीडी/पीओ/एमओ सं. .... दिनांक .... सदस्यता सं. ....

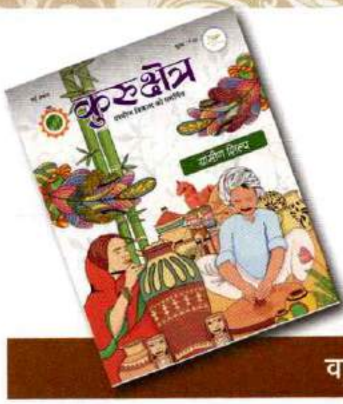

कुरुक्षेत्र

इस अंक में

वर्ष : 69 ★ मासिक अंक : 07 ★ पृष्ठ : 56 ★ वैशाख–ज्येष्ठ 1945 ★ मई 2023

ग्रामीण शिल्प की संभावनाएं 5
-अविनाश मिश्रा, मधुबंती दत्ता

स्थानीय परंपराओं के परिप्रेक्ष्य में ग्रामीण शिल्प 10
-हेमंत मेनन

भारतीय शिल्पकला का विस्तृत होता फलक 16
-हेना नकवी

ग्रामीण अर्थव्यवस्था में हस्तशिल्प का योगदान 22
-ऋषभ कृष्ण सक्सेना

हस्तशिल्प विकास कार्यक्रम 30
-परमेश्वर लाल पोद्दार

शिल्पकला : आजीविका के साथ पर्यटन का महत्वपूर्ण घटक 36
-डॉ. पीयूष गोयल

पूर्वोत्तर भारत के पारंपरिक शिल्प 44
-अनुपमा गोरे

हथकरघा और हस्तशिल्प क्षेत्र का विकास और बढ़ावा 48
-रीता प्रेम हेमराजानी, मधुलिका तिवारी

पारंपरिक हस्तशिल्प कौशल से महिलाएं बन रहीं आत्मनिर्भर 51
-डॉ. मनीष मोहन गोरे

वरिष्ठ संपादक : **ललिता खुराना**

संयुक्त निदेशक (उत्पादन) : डी.के.सी. हृदयनाथ

आवरण : विपुल मिश्रा

सज्जा : मनोज कुमार

संपादकीय कार्यालय
कमरा नं. 655, प्रकाशन विभाग, सूचना भवन,
सी.जी.ओ. काम्प्लेक्स, लोधी रोड,
नई दिल्ली-110 0 03

ई-मेल : kuru.hindi@gmail.com

वेबसाइट : publicationsdivision.nic.in

@publicationsdivision

@DPD_India

@dpd_India

कुरुक्षेत्र सदस्यता शुल्क

पत्रिका ऑनलाइन खरीदने के लिए bharatkash.gov.in/product पर तथा ई–पुस्तकों के लिए Google play, Kobo या।mazon पर लॉग–इन करें।

वार्षिक साधारण डाक: ₹ 230

ट्रैकिंग सुविधा के साथ : ₹ 434

कुरुक्षेत्र की सदस्यता की जानकारी लेने, एजेंसी संबंधी सूचना तथा विज्ञापन छपवाने के लिए संपर्क करें–

अभिषेक चतुर्वेदी, संपादक, पत्रिका एकांश
प्रकाशन विभाग, कमरा सं. 779, सातवां तल,
सूचना भवन, सीजीओ परिसर,
लोधी रोड, नयी दिल्ली–110003

नोट : सदस्यता शुल्क जमा करने के बाद पत्रिका प्राप्त होने में कम से कम 8 सप्ताह का समय लगता है।

पत्रिका न मिलने की शिकायत हेतु ई–मेल : pdjucir@gmail.com या दूरभाष: 011–24367453 पर संपर्क करें।

कुरुक्षेत्र में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। यह आवश्यक नहीं कि सरकारी दृष्टिकोण भी वही हो। पाठकों से आग्रह है कि कॅरियर मार्गदर्शक किताबों/संस्थानों के बारे में विज्ञापनों में किए गए दावों की जांच कर लें। पत्रिका में प्रकाशित विज्ञापनों की विषय–वस्तु के लिए 'कुरुक्षेत्र' उत्तरदायी नहीं है।

प्रकाशन विभाग के विक्रय केंद्र

नई दिल्ली	पुस्तक दीर्घा, सूचना भवन, सीजीओ कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड	110003	011–24367260
दिल्ली	हाल सं. 196, पुराना सचिवालय	110054	011–23890205
नवी मुंबई	701, सी-विंग, सातवीं मंज़िल, केंद्रीय सदन, बेलापुर	400614	022-27570686
कोलकाता	8, एसप्लानेड ईस्ट	700069	033-22488030
चेन्नई	'ए विंग, राजाजी भवन, बसंत नगर	600090	044-24917673
तिरुअनंतपुरम	प्रेस रोड, नई गवर्नमेंट प्रेस के निकट	695001	0471-2330650
हैदराबाद	कमरा सं. 204, दूसरा तल, सीजीओ टावर, कवादिगुड़ा सिकंदराबाद	500080	040-27535383
बैंगलुरु	फर्स्ट फ्लोर, 'एफ विंग, केंद्रीय सदन, कोरामंगला	560034	080-25537244
पटना	बिहार राज्य कोऑपरेटिव बैंक भवन, अशोक राजपथ	800004	0612-2683407
लखनऊ	हॉल सं-1, दूसरा तल, केंद्रीय भवन, क्षेत्र-ए, अलीगंज	226024	0522-2325455
अहमदाबाद	4–सी, नैप्च्युन टॉवर, चौथी मंज़िल, एचपी पेट्रोल पंप के निकट, नेहरू ब्रिज कार्नर, आश्रम रोड, अहमदाबाद	380009	079-26588669

संपादकीय

शिल्पकला भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, हमारी जीवंत विरासत हैं। देश के दूरदराज क्षेत्रों में पनपने वाले अधिकांश शिल्प परिवार और अतीत की विरासत के रूप में प्रचलित हैं। शिल्पकारों को शिल्प अपने पूर्वजों से विरासत में मिला है। सदियों से इस परंपरा का पालन किया जा रहा है। हमारे उत्कृष्ट शिल्पकार भारत की सांस्कृतिक विविधता का प्रतिनिधित्व करते हैं।

हस्तशिल्प क्षेत्र देश की अर्थव्यवस्था में एक आवश्यक एवं महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में शिल्पकारों के एक बड़े वर्ग को रोज़गार प्रदान करता है और अपनी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करते हुए देश के लिए पर्याप्त विदेशी मुद्रा का भी सृजन करता है। हस्तशिल्प क्षेत्र रोज़गार सृजन और निर्यात में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। हस्तशिल्प वस्तुओं का उत्पादन ग्रामीण इलाकों में महिलाओं के आर्थिक सशक्तीकरण के लिए भी विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, चूंकि वे अपने घरेलू कामकाज निपटाने के साथ ही घर बैठे हस्तशिल्प वस्तुओं को तैयार कर सकती हैं। महिलाएं इस क्षेत्र का एक बहुत बड़ा हिस्सा हैं जो कुल कार्यबल का करीब 50 प्रतिशत हिस्सा हैं।

हमारे शिल्पकारों ने सदियों से अपने खुद के- आमतौर पर अनूठे तरीके ईजाद कर और उन्हें अपना कर पत्थर, धातुओं, चंदन और मिट्टी में जीवन का संचार किया। उन्होंने बहुत पहले ही वैज्ञानिक और इंजीनियरिंग प्रक्रियाओं में महारत हासिल कर ली और वो अपने समय से बहुत आगे थे। उनकी रचनाओं में उनके परिष्कृत ज्ञान और अति विकसित सौंदर्यबोध का परिचय मिलता है। हमारे गाँव में रहने वाले लाखों लोग बहुत कम लागत में हस्तशिल्प वस्तुओं का उत्पादन कर न सिर्फ इसके ज़रिए अपनी आजीविका चलाते हैं बल्कि हमारे पास भारत की संस्कृति, विरासत और परम्परा को दर्शाने वाली इन हस्तशिल्प वस्तुओं का एक बहुत बड़ा घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार भी है।

सरकार 'वस्त्र को पर्यटन से जोड़ने' की एक पहल के रूप में प्रमुख पर्यटन स्थलों को हस्तशिल्प समूहों और बुनियादी ढांचे के समर्थन से जोड़ रही है। इसके संबंध में, गाँवों के समग्र विकास के लिए 8 शिल्पग्राम स्थापित किए जा चुके हैं। इन गाँवों में शिल्प संवर्धन और पर्यटन को आगे बढ़ाया जा रहा है। ये क्राफ्ट विलेज हस्तशिल्प को समूहों में कारीगरों के लिए व्यावहारिक और आजीविका विकल्प के रूप में बढ़ावा देंगे। साथ ही, भारत की समृद्ध कलात्मक विरासत की रक्षा करेंगे। इस कार्यक्रम ने इन शिल्प गाँवों में पर्यटकों की संख्या में भी वृद्धि की है।

हस्तशिल्प और हथकरघा क्षेत्र शेष विश्व के साथ जुड़ने के लिए भारत को आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता प्रदान करने का महत्वपूर्ण आधार है। हस्तशिल्प को प्रोत्साहन देने से न केवल देश के परंपरागत मूल्यों और समकालीन दृष्टिकोण के बीच संतुलन सुनिश्चित होता है बल्कि देश के कुशल शिल्पकारों को आश्रय भी मिलता है। माननीय प्रधानमंत्री के शब्दों में 'हथकरघा और हस्तशिल्प भारत की विविधता और अनेक बुनकरों और कारीगरों की निपुणता को प्रकट करते हैं।'

निसंदेह शिल्पकार हमारी संस्कृति और रचनात्मकता के सबसे प्रभावी हस्ताक्षर हैं। अपनी शिल्पकला से उन्होंने विश्व को यह दिखा दिया है कि भारत के पास असाधारण प्रतिभा है। जरूरत है तो भारतीय हस्तशिल्प उत्पादों के संगठित विपणन और उनकी ब्रांडिंग को बढ़ावा देने की। सरकार इस दिशा में प्रयासरत है और उम्मीद करते हैं कि आने वाले कुछ सालों में हाथों के इन जादूगरों की भी तकदीर बदलेगी।

Elite Academy For Education & Training Pvt. Ltd. ★ Delhi ★

ग्रामीण शिल्प की संभावनाएं

-अविनाश मिश्रा, मधुबंती दत्ता

भारत इतिहास, संस्कृति और प्राकृतिक सुंदरता से परिपूर्ण है और कई गाँवों में अनूठे पर्यटक आकर्षण मौजूद हैं। भारत आने वाले पर्यटकों के लिए ग्रामीण शिल्प एक महत्वपूर्ण आकर्षण हो सकता है जो कौशल विकास और उद्यमिता के अवसर भी प्रदान करता है। ये शिल्प कई ग्रामीण समुदायों के लिए आजीविका का स्रोत हैं और देश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देने की क्षमता रखते हैं।

भारत में ग्रामीण शिल्प की समृद्ध परंपरा पीढ़ियों से चली आ रही है। ये शिल्प अनेक ग्रामीण समुदायों के लिए आजीविका का स्रोत हैं। साथ ही, कौशल विकास और उद्यमशीलता के लिए अवसर प्रदान करते हैं और इस प्रकार अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देने की उनकी क्षमता में की व्यापक संभावनाएँ हैं। ग्रामीण शिल्प भारत आने वाले पर्यटकों के लिए एक महत्वपूर्ण आकर्षण हो सकते हैं। सरकार स्थानीय समुदायों को होमस्टे और सामुदायिक पर्यटन के अनुभव प्रदान करने के लिए प्रोत्साहित कर सकती है जिससे उनकी आय और रोज़गार के अवसर पैदा हो सकें। साथ ही, सरकार वन्य जीवन के संरक्षण और पर्यावरण पर्यटन को बढ़ावा देने जैसे संरक्षण प्रयासों को प्रोत्साहित कर सकती है। इस प्रकार भारत में ग्रामीण पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं। सरकार बुनियादी ढांचे में निवेश, स्थानीय शिल्प और परंपराओं को बढ़ावा देकर, होमस्टे और सामुदायिक पर्यटन की सहायता करके और स्थायी पर्यटन पद्धतियों को बढ़ावा देकर इस क्षमता को हासिल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

भारत की समृद्ध सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत का

लेखक एडवाइज़र (पर्यटन, जल संसाधन), नीति आयोग और लेखिका यंग प्रोफेशनल, नीति आयोग हैं।
ई-मेल : amishra-pc@gov.in; dutta.madhubanti@gov.in

संरक्षण करते हुए ग्रामीण पर्यटन भारतीय गाँवों के अनूठे आकर्षणों का दोहन करके स्थानीय समुदायों के लिए आय और रोज़गार का एक स्रोत हो सकता है। इसके लिए सरकार ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा दे सकती है और विभिन्न क्षेत्रों के पारंपरिक शिल्पों को प्रदर्शित करने के लिए बुनियादी ढांचा तैयार कर सकती है। इससे न केवल स्थानीय कारीगरों के लिए रोज़गार का सृजन होगा बल्कि स्थानीय समुदाय की आय में भी वृद्धि होगी।

एक ज़िला एक उत्पाद एक ऐसा ग्रामीण विकास कार्यक्रम है जो भारत सरकार द्वारा देश के हर ज़िले में पारंपरिक उद्योगों और हस्तशिल्प को बढ़ावा देने के लिए शुरू किया गया है। इस कार्यक्रम के तहत प्रत्येक ज़िले का चयन उसके विशिष्ट उत्पाद के आधार पर किया जाता है और ब्रांडिंग, मार्केटिंग और बुनियादी ढांचे के विकास के माध्यम से इस उत्पाद को बढ़ावा देने का प्रयास किया जाता है। कार्यक्रम का उद्देश्य पारंपरिक शिल्प और कौशल को संरक्षित करते हुए रोज़गार के अवसर पैदा करना और ग्रामीण कारीगरों और उद्यमियों की आय में वृद्धि करना है। स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देकर और पारंपरिक शिल्प और कौशल को संरक्षित करके यह कार्यक्रम देश के समग्र विकास में योगदान करते हुए ग्रामीण समुदायों की आय और जीवन-स्तर को बढ़ा सकता है। सरकार ने एक ही स्थान पर शिल्प और पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए 'वस्त्र को पर्यटन से जोड़ना' ('लिंकिंग टेक्सटाइल विद टूरिज़्म') पहल के तहत देश भर में आठ शिल्प गाँव चयनित किए हैं। इस पहल का उद्देश्य भारत के पारंपरिक शिल्प की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और बढ़ते पर्यटन उद्योग को एक साथ लाना है।

साथ ही, 'लिंकिंग टेक्सटाइल विद टूरिज़्म' पहल का उद्देश्य पर्यटकों को पारंपरिक शिल्प के माध्यम से भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के अनुभव का अवसर प्रदान करना है। सरकार इन शिल्प गाँवों में होमस्टे, पर्यटन सूचना केंद्र जैसे बुनियादी ढांचे का विकास करके और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन द्वारा पर्यटन को बढ़ावा देती है। भारत के माननीय उपराष्ट्रपति ने भारत के शिल्पकारों को भारत की विरासत के राजदूत और भारतीय संस्कृति के प्रकाश स्तंभ कहा है। उन्होंने भारत के पारंपरिक शिल्प और कौशल को खोजने और संरक्षित करने के महत्व पर ज़ोर दिया है और रोज़गार के अवसर पैदा करने के लिए इन शिल्पों को बढ़ावा देने की हिमायत की। वे पारंपरिक शिल्प को प्रोत्साहित करने के लिए एक मज़बूत बुनियादी ढांचे के विकास पर भी बल देते हैं जिसमें शिल्प संग्रहालयों, प्रदर्शनियों और दीर्घाओं की स्थापना शामिल है। उन्होंने पारंपरिक शिल्प की पहुँच और दृश्यता बढ़ाने और इन उत्पादों के विपणन और ब्रांडिंग में सहायता के लिए आधुनिक तकनीक के विकास और प्रोत्साहन देने की आवश्यकता पर बल दिया है।

ग्रामीण पर्यटन भी पारंपरिक शिल्प और कौशल को संरक्षण और प्रोत्साहन देकर, स्थानीय कृषि और खाद्य उत्पादन में सहायता करके और पर्यावरण-पर्यटन गतिविधियों को बढ़ावा देकर सतत विकास में योगदान दे सकता है। ग्रामीण क्षेत्रों की अनूठी सांस्कृतिक विरासत को उजागर करके ग्रामीण पर्यटन सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा दे सकता है और शहरी और ग्रामीण समुदायों के बीच समझ और परस्पर सराहना के भाव को बढ़ावा दे सकता है। यह बेहतर रोज़गार के अवसरों की तलाश में ग्रामीण

सरकार ने ग्रामीण कारीगरों को प्रशिक्षित करने और उनकी सहायता करने के लिए नीतियां और कार्यक्रम बनाए हैं जिससे वे अपना व्यवसाय शुरू कर सकें और 'आत्मनिर्भर' बन सकें। ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक संभावनाएं पैदा करने से लोगों की रोज़गार के अवसरों की तलाश में शहरी क्षेत्रों की ओर पलायन करने की मजबूरी कम हो जाती है।

एक ही स्थान पर शिल्प और पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए 'लिंकिंग टेक्सटाइल विद टूरिज़्म' पहल के तहत देश भर में चयनित आठ शिल्पग्राम

- रघुराजपुर (ओडिशा)
- तिरुपति (आंध्र प्रदेश),
- वदज (गुजरात)
- नैनी (उत्तर प्रदेश)
- अनेगुंडी (कर्नाटक)
- महाबलीपुरम (तमिलनाडु)
- ताज गंज (उत्तर प्रदेश)
- आमेर (राजस्थान)

Elite Academy For Education & Training Pvt. Ltd. ★ Delhi ★

क्षेत्रों से शहरों में युवाओं के प्रवास को रोकने में मदद कर सकता है और इस प्रकार ग्रामीण क्षेत्रों के समग्र विकास में योगदान कर सकता है।

संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन (यूएनडब्ल्यूटीओ) ने भारत के तेलंगाना राज्य के नलगोंडा ज़िले के पोचमपल्ली गाँव को सर्वश्रेष्ठ पर्यटन गाँवों की फेहरिस्त में शामिल करके वैश्विक मान्यता दी है। ये गाँव हथकरघा उद्योग के लिए प्रसिद्ध है विशेष रूप से पोचमपल्ली साड़ी के लिए जिसे इकत साड़ी के नाम से भी जाना जाता है। पोचमपल्ली साड़ियों को एक अनूठी रंगाई तकनीक का उपयोग करके बनाया जाता है जिसमें रंगे जाने से पहले अलग-अलग सूत को एक विशेष पैटर्न में बांधना होता है। गाँव अन्य हथकरघा उत्पाद जैसे पोशाक, चादर आदि के लिए भी जाना जाता है। पोचमपल्ली हथकरघा पार्क, जो 2018 में स्थापित किया गया था, इस गाँव में आने वाले पर्यटकों के लिए एक प्रमुख आकर्षण है। पार्क पोचमपल्ली हथकरघा उद्योग का इतिहास और विकास प्रदर्शित करता है और बुनकरों को अपना उत्पाद प्रदर्शित करने के लिए एक मंच प्रदान करता है। यह आकांक्षी बुनकरों के लिए एक प्रशिक्षण केंद्र के रूप में भी कार्य करता है।

इसके अलावा, भारतीय शिल्प परिषद, ट्राइब्स इंडिया, भारत सरकार के ग्रामीण विकास मंत्रालय की सरस जैसी एजेंसियां और राज्य एम्पोरियम द्वारा वर्षों से जन जागरूकता बढ़ाने, कुटीर उद्योगों को बड़े बाज़ारों तक पहुँच प्रदान करने और बाज़ार की बदलती मांगों के अनुकूल बदलने में सहायता कर रही हैं। सर्दियों पुराने गूढ़ ज्ञान, कौशल और स्थानीय श्रमबल का उपयोग करके बनाए गए स्थानीय शिल्प उत्पाद 'मेक इन इंडिया' विचारधारा और 'आत्मनिर्भर भारत' के मूल्यों को मूर्त रूप देते हैं।

भारत सरकार के कपड़ा मंत्रालय द्वारा जारी वार्षिक रिपोर्ट 2020-21 के अनुसार, हाल के वर्षों में भारत से हस्तशिल्प का निर्यात लगातार बढ़ रहा है। वित्त वर्ष 2019-20 में हस्तशिल्प का निर्यात 19,171 करोड़ रुपये था जो कोविड-19 महामारी से उत्पन्न चुनौतियों के बावजूद वित्त वर्ष 2020-21 में बढ़कर 20,151 करोड़ रुपये हो गया। सरकार ने हस्तशिल्प के निर्यात को बढ़ावा देने के लिए कई कदम उठाए हैं जिनमें निर्यात संवर्धन परिषदों की स्थापना, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेलों और प्रदर्शनियों में भागीदारी, और कारीगरों और शिल्पकारों को वित्तीय सहायता प्रदान करना शामिल है। आने वाले वर्षों में भारत से हस्तशिल्प निर्यात में बढ़ोतरी की प्रबल सम्भावना है।

पलायन रोकने में मदद

ग्रामीण शिल्प आर्थिक अवसर पैदा कर सकते हैं जो पलायन को रोकने में मदद करते हैं। ग्रामीण शिल्प उद्योग ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों को रोजगार के अवसर प्रदान कर सकते हैं जो उन्हें काम की तलाश में शहरी क्षेत्रों में पलायन किए बिना आजीविका कमाने में मदद कर सकते हैं। इससे ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों में लोगों के पलायन को रोकने में मदद मिल सकती है। ग्रामीण शिल्प उद्यमशीलता के अवसर भी पैदा कर सकते हैं जिनके द्वारा लोग अपने शिल्प व्यवसाय शुरू कर सकते हैं और अपने उत्पादों को बड़े बाज़ारों में बेच सकते हैं। ग्रामीण शिल्प स्थानीय संस्कृति और कलाओं में रुचि रखने वाले पर्यटकों को भी आकर्षित कर सकते

हैं। यह लोगों के लिए अपने ही क्षेत्र में अधिक आर्थिक अवसर पैदा कर सकता है और शहरों में पलायन को घटा सकता है। ग्रामीण शिल्प ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों के लिए आय विविधीकरण का एक स्रोत प्रदान कर सकता है जो उनकी कृषि या अन्य पारंपरिक आजीविका पर निर्भरता कम करने में मदद कर सकता है। इससे बेहतर आर्थिक अवसरों की तलाश में पलायन की मजबूरी को कम किया जा सकता है।

केवड़िया, गुजरात में स्टैच्यू ऑफ यूनिटी में एकता मॉल ग्रामीण शिल्प को बढ़ावा देने की आदर्श मिसाल है। मॉल स्थानीय दस्तकारों और शिल्पकारों को देश और दुनिया भर के पर्यटकों और आगंतुकों के समक्ष अपने उत्पाद प्रदर्शित करने एवं बेचने और कौशल का प्रदर्शन करने के लिए एक मंच प्रदान करता है। इससे ग्रामीण शिल्प को बढ़ावा देने और स्थानीय कारीगरों को आजीविका प्रदान करने में यह मदद कर सकता है। एकता मॉल स्थानीय कारीगरों को अपने उत्पादों को बेचने के लिए एक बाज़ार प्रदान करके और उन्हें अपना व्यवसाय स्थापित करने में मदद करके उद्यमशीलता को प्रोत्साहित कर सकता है। यह मॉल यहाँ आने वाले पर्यटकों और आगंतुकों को आकर्षित कर सकता है जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिल सकता है और स्थानीय समुदाय के लिए अधिक आर्थिक अवसर पैदा हो सकते हैं। एकता मॉल स्थानीय कारीगरों के लिए एक मंच प्रदान करने, उद्यमशीलता को प्रोत्साहित करने, पारंपरिक शिल्प को संरक्षित करने, स्थानीय संस्कृति को प्रोत्साहित करने और पर्यटन को बढ़ावा देने के विभिन्न माध्यमों द्वारा ग्रामीण शिल्प को प्रोत्साहन देने की एक मौलिक मिसाल बन सकता है।

एक भारत श्रेष्ठ भारत

ग्रामीण क्षेत्रों की प्राकृतिक और सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करते हुए ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए स्थायी और ज़िम्मेदार पर्यटन व्यवस्था को विकसित करने की प्रतिबद्धता आवश्यक है। 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के दर्शन को इसमें सम्मिलित करने का संकल्प भी ग्रामीण भारत की विविध और समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं को जानने निकले देश के विभिन्न क्षेत्रों के यात्रियों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान और समझ को बढ़ावा दे सकती है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सभी हितधारकों को स्थायी पर्यटन पद्धतियों का विकास करना चाहिए जो स्थानीय समुदायों को लाभान्वित करें और पर्यावरण को संरक्षित करें। पर्यावरण और स्थानीय समुदायों पर अपनी गतिविधियों के प्रभाव के प्रति सचेत रहते हुए ज़िम्मेदार पर्यटन को बढ़ावा देने में पर्यटकों की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वे पर्यावरण अनुकूल आवास में रह सकते हैं, स्थानीय व्यवसायों और शिल्प की सहायता कर सकते हैं और स्थानीय समुदायों को लाभ पहुँचाने वाली ज़िम्मेदार पर्यटन गतिविधियों में भाग ले सकते हैं। कुल मिला कर कहा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में स्थायी और ज़िम्मेदार पर्यटन विकसित करने की प्रतिबद्धता इन क्षेत्रों की प्राकृतिक और सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करते हुए पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक है। यह एक ऐसा लक्ष्य है जिसके लिए स्थानीय समुदायों, पर्यावरण और पर्यटकों को लाभ पहुँचाने वाली ज़िम्मेदार पर्यटन पद्धतियों को पोषित करने और बढ़ावा देने के लिए सभी हितधारकों के सामूहिक प्रयासों की दरकार है।

माननीय प्रधानमंत्री ने 'पीएम विश्वकर्मा कौशल सम्मान' पर

भारत 2023 INDIA

जी20 भारतीय हस्तशिल्प को अंतरराष्ट्रीय बाज़ारों तक बेहतर पहुँच प्रदान करने में मदद कर सकता है। यह व्यापार बाधाओं को कम करके, सीमा शुल्क प्रक्रियाओं को सरल बनाकर और व्यापार मेलों और प्रदर्शनियों को बढ़ावा देकर किया जा सकता है। कई भारतीय कारीगरों के पास अपने कारोबार का विस्तार करने के लिए आवश्यक पूंजी और वित्तीय संसाधनों तक पहुँच नहीं है। जी20 इन कारीगरों को ऋण, अनुदान और सब्सिडी के रूप में वित्तीय सहायता प्रदान कर सकता है जो उन्हें नई तकनीकों में निवेश करने, उत्पादों में विविधता लाने, और उनकी उत्पादन क्षमता बढ़ाने में मदद कर सकता है। जी20 भारतीय कारीगरों के कौशल विकास कार्यक्रमों में भी निवेश कर सकता है।

मध्य प्रदेश, ओरछा में स्थित राजा महल पैलेस की सीलिंग पर चित्रित रामायण का एक दृश्य

बजट उपरांत आयोजित वेबिनार को संबोधित करते हुए पारंपरिक भारतीय शिल्प और कौशल के महत्व के बारे में बात की और चर्चा की कि कैसे उनका लाभ पर्यटन को बढ़ावा देने और ग्रामीण क्षेत्रों में रोज़गार के अवसर पैदा करने के लिए उठाया जा सकता है। उन्होंने विश्वकर्मा कौशल सम्मान जैसी पहल के माध्यम से पारंपरिक कला और शिल्प को संरक्षित करने और बढ़ावा देने पर ज़ोर दिया। माननीय प्रधानमंत्री ने गांधी जी की ग्राम स्वराज की अवधारणा का उल्लेख करते हुए कृषि के साथ-साथ ग्रामीण जीवन में इन व्यवसायों की भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा, "भारत की विकास यात्रा के लिए गाँव का विकास ज़रूरी है और इसके लिए गाँव के हर वर्ग को सशक्त बनाना आवश्यक है।" उन्होंने यह भी कहा, "हमारा लक्ष्य आज के विश्वकर्माओं को कल के उद्यमियों के रूप में विकसित करना है"।

वैश्विक मान्यता

जी20 भारतीय हस्तशिल्प को अंतरराष्ट्रीय बाज़ारों तक बेहतर पहुँच प्रदान करने में मदद कर सकता है। यह व्यापार बाधाओं को कम करके, सीमा शुल्क प्रक्रियाओं को सरल बनाकर और व्यापार मेलों और प्रदर्शनियों को बढ़ावा देकर किया जा सकता है। कई भारतीय कारीगरों के पास अपने कारोबार का विस्तार करने के लिए आवश्यक पूंजी और वित्तीय संसाधनों तक पहुँच नहीं है। जी20 इन कारीगरों को ऋण, अनुदान और सब्सिडी के रूप में वित्तीय सहायता प्रदान कर सकता है जो उन्हें नई तकनीकों में निवेश करने, उत्पादों में विविधता लाने, और उनकी उत्पादन क्षमता बढ़ाने में मदद कर सकता है। जी20 भारतीय कारीगरों के कौशल विकास कार्यक्रमों में भी निवेश कर सकता है। जी20 देश के बौद्धिक संपदा कानूनों और प्रवर्तन तंत्र को मजबूत करने के लिए भारत सरकार के साथ काम कर सकता है जिससे भारतीय कारीगरों द्वारा उपयोग किए जाने वाले डिज़ाइन और तकनीकों को बचाने में मदद मिलेगी। जी20 विश्व स्तर पर भारतीय हस्तशिल्प को बढ़ावा देने के लिए अपनी सॉफ्ट पॉवर का प्रयोग कर सकता है मसलन :

1. सरस आजीविका मेला ग्रामीण आजीविका और उत्पादों को प्रदर्शित करने और बढ़ावा देने के लिए ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित किया जाने वाला एक वार्षिक मेला है। यह आयोजन ग्रामीण कारीगरों, शिल्पकारों और उद्यमियों को अपने उत्पादों को प्रदर्शित करने, खरीदारों के साथ बातचीत करने और व्यावसायिक अवसरों को तलाशने का एक मंच प्रदान करता है। मेले में आमतौर पर देश के विभिन्न क्षेत्रों के हस्तशिल्प, वस्त्र, खाद्य और पेय पदार्थ, जैविक उत्पाद और अन्य पारंपरिक और कुटीर उत्पादों की व्यापक विविधता प्रदर्शित होती है। मेले के दौरान ग्रामीण विकास और उद्यमिता पर सांस्कृतिक प्रदर्शन, कार्यशालाएं और सेमिनार भी आयोजित किए जाते हैं।

2. सूरजकुंड शिल्पमेला भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करता है और देशभर के कारीगरों, शिल्पकारों और कलाकारों को अपने कौशल और कृतियों को प्रदर्शित करने के लिए एक मंच प्रदान करता है। यह आयोजन पर्यटकों, कला प्रेमियों और खरीदारों सहित बड़ी संख्या में आगंतुकों को आकर्षित करता है।

3. आदि महोत्सव दिल्ली के मेजर ध्यानचंद नेशनल स्टेडियम में आयोजित किया जाने वाला मेगा राष्ट्रीय जनजातीय महोत्सव जनजातीय संस्कृति, शिल्प, व्यंजन, वाणिज्य और पारंपरिक कला की भावना का उत्सव है जो राष्ट्रीय स्तर पर जनजातीय संस्कृति को प्रस्तुत करने का प्रयास है। यह जनजातीय कार्य मंत्रालय के अधीन जनजातीय सहकारी विपणन विकास महासंघ लिमिटेड (ट्राइफेड) की वार्षिक पहल है। ❑

स्थानीय परंपराओं के परिप्रेक्ष्य में ग्रामीण शिल्प

-हेमंत मेनन

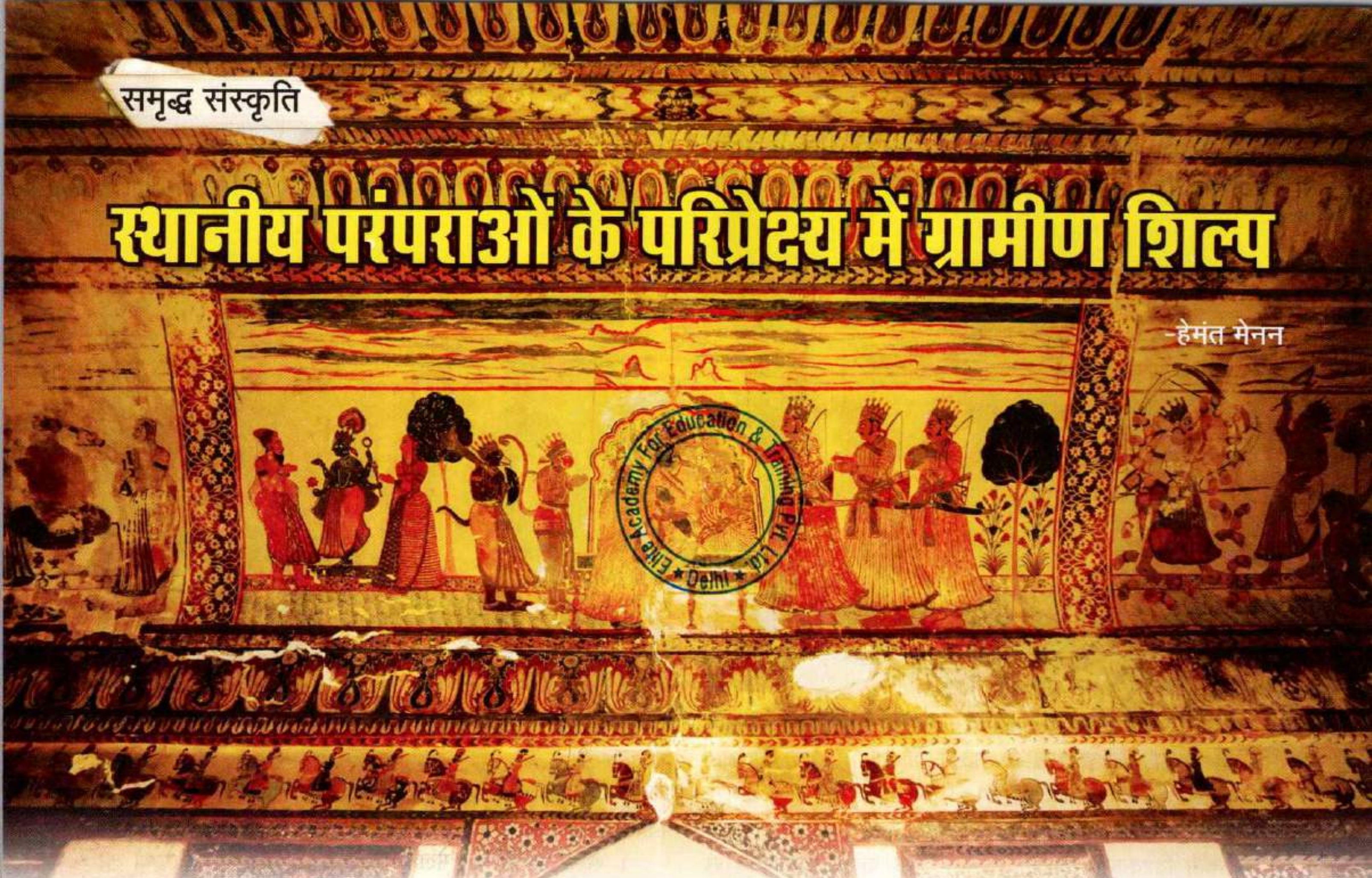

हमारे ग्रामीण शिल्प देश के सांस्कृतिक और आर्थिक परिदृश्य का एक अभिन्न अंग बने हुए हैं। इन शिल्पों का विकास समय के साथ हुए सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनों को दर्शाता है और वे भारत की सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बने हुए हैं। सतत सहायता और जागरूकता के साथ, भारत के ग्रामीण शिल्प फल-फूल सकते हैं और देश की सांस्कृतिक और आर्थिक पहचान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बने रह सकते हैं।

भारत में ग्रामीण शिल्पों का बहुधा एक प्रबल सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व होता है और वे उनको गढ़ने वाले समुदायों की परंपराओं में गहरे जड़ जमाए होते हैं। कई शिल्प विशेष प्रयोजनों जैसे धार्मिक समारोहों, घरेलू उपयोग और कृषि कार्यों के लिए बनाए जाते हैं। उदाहरण के लिए ग्रामीण भारत में मिट्टी के बर्तन बनाने का एक लंबा इतिहास रहा है और यह समुदाय की कृषि पद्धतियों के साथ गहरा जुड़ा है। मिट्टी के बर्तनों का उपयोग जल, अनाज और अन्य कृषि उत्पादों के भंडारण और एक जगह से दूसरी जगह ले जाने के लिए किया जाता है। इसी तरह बुनाई एक अन्य ग्रामीण शिल्प है जिसका एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक महत्व है और इसका उपयोग अक्सर पारंपरिक वस्त्रों, धार्मिक समारोहों और घरेलू सामान जैसे गलीचे और कंबल बनाने के लिए किया जाता है। इसके अतिरिक्त, कई शिल्प धार्मिक प्रयोजनों के लिए भी बनाए जाते हैं जैसे कि मंदिरों और अन्य धार्मिक स्थलों में प्रतिष्ठित की जाने वाली प्रतिमाएं और दीप व सजावटी वस्तुएं। इन शिल्पों को अक्सर पीढ़ी-दर-पीढ़ी सौंप दिया जाता है और सदियों से उपयोग की जाने वाली पारंपरिक तकनीकों और सामग्रियों का उपयोग करके बनाया जाता है।

विरासत की खोज

भारत में ग्रामीण शिल्प का एक लंबा और संपन्न इतिहास है जो हजारों साल पुराना है। भारत की आबादी विविध है और इसकी सांस्कृतिक विरासत समृद्ध है जिसके कारण सदियों से कई अनूठे ग्रामीण शिल्पों का विकास हुआ है।

भारत में ग्रामीण शिल्प का प्राचीनतम प्रमाण सिंधु घाटी सभ्यता का है जो लगभग 2600 ईसा पूर्व में फली-फूली।

लेखक स्पिक मैक के राष्ट्रीय संयोजक हैं। ई-मेल : hemanth@spicmacay.com

पुरातात्विक खुदाई से इस प्राचीन सभ्यता में मिट्टी के बर्तन बनाने, बुनाई और धातु के काम करने के प्रमाण मिले हैं। सदियों से इन शिल्पों का प्रयोग और विकास जारी रहा, भारत के प्रत्येक क्षेत्र ने अपनी विशिष्ट शैलियों और तकनीकों का विकास किया। सिंधु घाटी सभ्यता के शिल्प हजारों साल पहले वहाँ रहने वाले लोगों के कौशल और प्रतिभा के प्रमाण हैं। इनमें से कई शिल्प जैसे मिट्टी के बर्तन बनाना, टोकरी बनाना, बुनाई और गहने बनाना आज भी उपयोग किए जाते हैं।

प्रारंभिक मानव सभ्यताओं के बाद से शिल्प के विभिन्न प्रकार मौजूद हैं। सिंधु घाटी सभ्यता उनके अस्तित्व का प्रमाण प्रदान करने वाली सबसे शुरुआती सभ्यताओं में से एक है पर पुरातात्विक खोजों से ज्ञात होता है कि वे मानव इतिहास के आरंभ से ही उपयोग में रहे हैं। प्रारंभिक काल से लोगों ने पत्थर, हड्डी, लकड़ी, मिट्टी और रेशे जैसी सामग्रियों का उपयोग करके उपकरण, कपड़े और सजावटी वस्तुओं के निर्माण के लिए अपनी रचनात्मकता और दक्षता का उपयोग किया है। जैसे-जैसे मानव समाज अधिक व्यवस्थित और संगठित होता गया, शिल्प ने व्यापार, धर्म और अन्य सामाजिक उद्देश्यों के लिए वस्तुओं का उत्पादन करने वाले कुशल कारीगरों के साथ नया महत्व प्राप्त किया। पूरे इतिहास में वस्त्रों का विकास एक दिलचस्प विषय है जो समय गुज़रने के साथ हुए सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनों की जानकारी प्रदान करता है। प्राचीन भारत में कपास कपड़े बनाने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले मूल रेशों में से एक था और कताई और बुनाई के लिए तकुआ (स्पिंडल), कोड़े (वर्ल) और करघे (लूम) के तोल का उपयोग किया जाता था। वैदिक काल में वेदों में उल्लिखित विभिन्न प्रकार के वस्त्रों और उनके रंगों के संदर्भ में धार्मिक और सामाजिक रीति-रिवाजों में वस्त्रों के महत्व को देखा गया। इस काल में रंजक और कढ़ाई भी लोकप्रिय हुई।

मौर्य साम्राज्य के दौरान वस्त्रों के उत्पादन को बढ़ावा दिया गया और वस्त्रों की बुनाई और रंगाई के लिए विशेष शिल्पशालाएं स्थापित की गईं। भली-भांति विकसित व्यापार तंत्र की सहूलियत ने अन्य क्षेत्रों के साथ वस्त्रों के आदान-प्रदान को सक्षम किया। मुगलकाल में विभिन्न वस्त्र कलाओं जैसे ब्लॉक प्रिंटिंग, चिकनकारी कढ़ाई और ज़रदोजी के काम के विकास के साथ वस्त्र उद्योग फला-फूला। रेशम और ब्रोकेड जैसे शानदार वस्त्र भी इस काल में लोकप्रिय हुए। मुगल फारस और मध्य एशिया से कुशल कारीगरों को लाए जिन्होंने भारत में नई तकनीकों और शैलियों की शुरुआत की। आज भी भारतीय पहनावा देश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक बना हुआ है। साड़ी और धोती जैसे बिना सिले वस्त्रों से लेकर सिले हुए वस्त्रों तक हर तरह के वस्त्र समय की कसौटी पर खरे उतरे हैं। भारतीय वस्त्रों के उत्पादन में उपयोग किए जाने वाला शिल्प कौशल और तकनीक अद्वितीय हैं। जटिल कढ़ाई, ब्लॉक प्रिंटिंग और अन्य अलंकरण प्रत्येक परिधान को कला की एक अनूठा बानगी बनाते हैं।

बेपनाह प्रयोग से आकस्मिक खोजें अक्सर हो सकती हैं। आरंभिक मानव ने अनजाने ही पत्थरों को आपस में रगड़ा जिससे चिंगारी पैदा हुई और इस प्रकार आग की खोज हुई। प्रकाश के साथ छाया का आगमन हुआ और छाया एक तरह से मनोरंजन का साधन बन गई। मनोरंजन के रूप में छाया की खोज और जोड़-तोड़ ने अंततः विभिन्न कला रूपों का विकास किया। जैसे-जैसे लोग शिल्पकारी में अधिक कुशल होते गए, उन्होंने कला के अधिक जटिल और सौंदर्यपूर्ण रूप से मनभावन कृतियों का निर्माण करने के लिए विभिन्न प्रकार की सामग्रियों और तकनीकों का उपयोग करके अपनी रचनाओं को अलंकृत करना शुरू कर दिया। इसने कला और शिल्प कौशल की एक समृद्ध परंपरा की शुरुआत की जो आधुनिक समय में विकसित और फलती-फूलती रही है। थोलपावाकूथू और थोलू बोम्मलता छाया कठपुतली के पारंपरिक रूप हैं जिनकी उत्पत्ति दक्षिण भारत में हुई थी। थोलपावाकूथू और थोलू बोम्मलता दोनों में चमड़े की कठपुतलियों का उपयोग शामिल है जिन्हें जटिल रूप से नक्काशा और चित्रित किया जाता है। फिर इन कठपुतलियों का इस्तेमाल कहानियों को

मौर्य साम्राज्य के दौरान वस्त्रों के उत्पादन को बढ़ावा दिया गया और वस्त्रों की बुनाई और रंगाई के लिए विशेष शिल्पशालाएं स्थापित की गईं। आज भी भारतीय पहनावा देश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक बना हुआ है। साड़ी और धोती जैसे बिना सिले वस्त्रों से लेकर सिले हुए वस्त्रों तक हर तरह के वस्त्र समय की कसौटी पर खरे उतरे हैं। भारतीय वस्त्रों के उत्पादन में उपयोग किए जाने वाला शिल्प कौशल और तकनीक अद्वितीय हैं।

Elite Academy For Education & ... Delhi

बताने के लिए किया जाता है जो अमूमन हिंदू पौराणिक कथाओं से ली जाती हैं। कठपुतलियों को चलाने वाला एक सफेद परदे के पीछे खड़े होकर कठपुतलियों को हिलाता-डुलाता है और छाया बनाने के लिए कठपुतलियों पर प्रकाश डाला जाता है। दर्शकों को अक्सर कठपुतलियों की जटिल गतिविधियों और प्रकाश और छाया की मंत्रमुग्ध कर देने वाली लीला से, जो कहानियों को जीवंत करती है, लुभाया जाता है। समय के साथ कठपुतली के ये रूप सांस्कृतिक उत्सवों और समारोहों के अभिन्न अंग बन गए हैं।

कुछ समुदायों में कठपुतली के खेल में उपचारात्मक गुण भी माना जाता है। इस धारणा के अनुसार कठपुतलियां दर्शकों से नकारात्मक ऊर्जा और बीमारियों को अवशोषित करने में सक्षम हैं और कठपुतली प्रदर्शन के अंत में कठपुतली चलाने वाला इन नकारात्मक शक्तियों को प्रतीकात्मक रूप से नष्ट कर देता है। ऐसा माना जाता है कि यह आध्यात्मिक और शारीरिक रूप से समुदाय को शुद्ध और चंगा करने में मदद करता है।

कठपुतली कला हमेशा से भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और परंपराओं का एक अभिन्न अंग रही है। कठपुतली के लिए मशहूर राजस्थान के अलावा कठपुतली देश के अन्य भागों जैसे केरल, तमिलनाडु और कर्नाटक में भी लोकप्रिय है। प्रत्येक क्षेत्र की कठपुतली चालन की अपनी अनूठी शैली और तकनीकें हैं जो भारत के इतिहास को आकार देने वाले विविध सांस्कृतिक प्रभावों और परंपराओं को दर्शाती हैं। वास्तव में भारत में कठपुतली के कुछ आरम्भिक उल्लेख नाट्यशास्त्र और महाभारत जैसे प्राचीन ग्रंथों में मिलते हैं जो नाट्य प्रदर्शनों में कठपुतलियों के उपयोग का वर्णन करते हैं।

खिलौने और कठपुतलियों का अक्सर चोली-दामन का साथ रहता है और कई पारंपरिक भारतीय खिलौने भी कठपुतली के समान तकनीकों और सामग्रियों का उपयोग करके बनाए जाते हैं। उदाहरण के लिए लकड़ी की गुड़िया, मिट्टी और बांस जैसी प्राकृतिक सामग्रियों से बने खिलौने भारत के कई भागों में लोकप्रिय हैं और अक्सर कठपुतली प्रदर्शन में प्रॉप (रंगमंच का सहायक सामान) के रूप में भी उपयोग किए जाते हैं।

माना जाता है कि कोंडापल्ली खिलौनों की उत्पत्ति विजयनगर साम्राज्य के दौरान हुई थी। स्थानीय लोककथाओं के अनुसार आर्य क्षत्रिय समुदाय ने सबसे पहले कोंडापल्ली गुड़िया बनाई, जिन्हें काष्ठ नक्काशी के कौशल के लिए जाना जाता है। विजयनगर के राजाओं ने इन कारीगरों को संरक्षण दिया और उन्हें बच्चों के लिए खिलौने बनाने के लिए प्रोत्साहित किया। शुरुआती कोंडापल्ली गुड़िया साधारण थीं और बिना रंग की लकड़ी से बनी थीं। हालांकि समय के साथ कारीगरों ने विभिन्न आकृतियों और डिज़ाइनों के साथ प्रयोग करना शुरू कर दिया जिसके परिणामस्वरूप अधिक जटिल और रंगीन गुड़ियों का निर्माण हुआ। कारीगरों ने अपने डिज़ाइनों में रोज़मर्रा की ज़िंदगी, पौराणिक कथाओं और लोककथाओं के विषयों को भी शामिल किया।

हर साल जनवरी में मनाए जाने वाले संक्रांति के त्योहार के दौरान बोम्माला कोलुवु नामक एक प्रदर्शन के लिए कोंडापल्ली गुड़िया का उपयोग किया जाता है। इस पारंपरिक प्रथा में एक लकड़ी के मंच पर विभिन्न देवताओं, पौराणिक पात्रों और दैनिक जीवन के दृश्य दर्शाती गुड़ियों और मूर्तियों को एक विशिष्ट क्रम में व्यवस्थित करना शामिल है। इन गुड़ियों का उपयोग अन्य भारतीय त्योहारों और समारोहों में भी किया जाता है जैसे कि नवरात्रि और दिवाली और ये उपहार और स्मृति चिन्हों के रूप में भी लोकप्रिय हैं।

Elite Academy For Education & Training Pvt. Ltd. ★ Delhi ★

कला और शिल्प में अनुष्ठान और परंपराएं

कोई भी शिल्पकार्य शुरू करने से पहले कई समुदाय कुछ प्रारंभिक अनुष्ठानों का पालन करते हैं। एक आम परंपरा कार्यक्षेत्र की शुद्धि के लिए वहाँ पवित्र जल छिड़कना या अगरबत्ती जलाना है जिससे बुरी आत्माएं दूर होती हैं और सकारात्मक ऊर्जा आती है। कर्नाटक में चन्नापटना खिलौना बनाने वाला समुदाय प्रयोग किए जाने वाले उपकरणों की एक छोटी पूजा करता है और खिलौने बनाने से पहले अपने पूर्वजों से उनके आशीर्वाद के लिए प्रार्थना करते हैं। विश्वकर्मा पूजा एक और उदाहरण है। इसी तरह, गुजरात में कच्चा कारीगर अपनी कार्यशाला में दीपक जलाकर, लोकगीत गाकर, और आशीर्वाद तथा सुरक्षा के लिए अपने संरक्षक संत से प्रार्थना करके 'गढ़वी' परंपरा का पालन करते हैं। कुछ समुदायों में शिल्प निर्माण विशिष्ट त्योहारों और अनुष्ठानों से जुड़ा हुआ है। ओडिशा में दशहरा त्यौहार के दौरान पिपली के कारीगर कपड़े पर सुंदर सजावटी काम करते हैं जिसका उपयोग भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा की मूर्तियों को सजाने के लिए किया जाता है। वे कपड़े पर काम शुरू करने से पहले एक विशेष पूजा भी करते हैं।

कुछ समुदायों के शिल्पकार विशिष्ट शिल्पों पर काम करते समय उपवास भी रखते हैं और कुछ प्रकार के खानपान से परहेज़ करते हैं। उदाहरण के लिए छत्तीसगढ़ में ढोकरा समुदाय के धातुकर्मी पीतल और बेल मेटल शिल्प बनाने की प्रक्रिया के दौरान उपवास रखते हैं। कुछ शिल्प विशेष मौसमों या चंद्रमा की अवस्थाओं से जुड़े होते हैं। उदाहरण के लिए बिहार में मधुबनी चित्रकार केवल चंद्रमा के बढ़ते चरण के दौरान चित्रकारी करते हैं जिसे रचनात्मकता और विकास के लिए शुभ माना जाता है। एक अन्य उदाहरण आंध्र प्रदेश की कलमकारी कला है। चित्रकारी प्रक्रिया शुरू करने से पहले कारीगर उपवास रखते हैं और अनुष्ठान स्नान के माध्यम से खुद को शुद्ध करते हैं। फिर वे जल और गाय के गोबर के मिश्रण में डूबी बांस की छड़ी का उपयोग करके डिज़ाइन की रूपरेखा तैयार करते हैं। इसके बाद पौधों और खनिजों से प्राप्त प्राकृतिक रंगों का उपयोग किया जाता है जिनको भैंस के दूध के साथ मिश्रित किया जाता है जिससे कपड़े पर उनका चिपकाव बढ़े। इसके अलावा, शिल्पकार अपने शिल्प पर काम करते समय पारंपरिक गीत भी गाते हैं और प्रार्थना करते हैं। ये गीत न केवल उनके काम के लिए एक लयबद्ध संगत प्रदान करते हैं बल्कि पूर्वजों का सम्मान करने और सफल परिणाम के लिए उनका आशीर्वाद लेने का तरीका भी हैं। भारत में शिल्प-कार्य से जुड़ी परंपराएं और रीति-रिवाज़ कारीगरों के शिल्प और उनके द्वारा उपयोग की जाने वाली सामग्रियों के साथ उनके गहरे सांस्कृतिक और आध्यात्मिक संबंधों का प्रमाण हैं।

भारत में ग्रामीण शिल्प पूजा स्थलों में उपयोगिता की भी एक महत्वपूर्ण वस्तु है जो, व्यावहारिक और प्रतीकात्मक, दोनों प्रयोजनों को पूरा करती है। उदाहरण के लिए हिंदू धर्म में देवी-देवताओं की मिट्टी की मूर्तियां बनाने की कला एक प्राचीन शिल्पकला है जो पीढ़ियों से चली आ रही है। इन मूर्तियों का

वार्ली पेंटिंग

महाराष्ट्र का यह आदिवासी लोकशिल्प भारत में लोकचित्रों के बेहतरीन उदाहरणों में से एक है। वार्ली चित्रों को परंपरागत रूप से गाँव में झोपड़ी की दीवारों के अंदर चित्रित किया जाता है। इसमें बुनियादी ज्यामितीय आकृतियों जैसे कि वृत्त, त्रिकोण और वर्ग का उपयोग किया जाता है। ये ज्यामितीय आकृतियां पौराणिक पात्रों या देवताओं की छवियों को चित्रित नहीं करती हैं, बल्कि ग्रामीणों के सामाजिक रोज़मर्रा के जीवन को दर्शाती हैं। मिट्टी की दीवारों को पेंट करने के लिए, कलाकार चावल को पीसकर सफेद पाउडर में पानी मिलाकर सफेद पेंट का इस्तेमाल करते हैं।

उपयोग त्योहारों और अनुष्ठानों के दौरान परमात्मा के प्रतीक के रूप में किया जाता है। इसी तरह सिख धर्म में चोरी बनाना एक महत्वपूर्ण शिल्प है। इसका उपयोग सम्मान और भक्ति के संकेत के रूप में गुरु ग्रंथ साहिब को पंखा करने के लिए किया जाता है। इसके अतिरिक्त, जैन धर्म में जटिल रंगोली बनाने की कला को अत्यधिक महत्व दिया जाता है। उनका उपयोग त्योहारों और समारोहों के दौरान देवताओं और मेहमानों का घर में स्वागत करने के लिए किया जाता है। मंदिरों की दीवारों पर जटिल नक्काशी एवं चित्रकारी और मस्जिदों में सुलेखन न केवल उनके सौंदर्य में वृद्धि करते हैं बल्कि धर्म से जुड़ी कहानियों और दर्शन को भी चित्रित करते हैं। हिंदू और बौद्ध मंदिरों में दीये, दीपक और अगरबत्ती का उपयोग भी आम है जो न केवल प्रकाश प्रदान करते हैं बल्कि अंधकार को दूर करने और ज्ञान की प्राप्ति का भी प्रतीक हैं। इसी तरह, मस्जिदों में उपयोग किए जाने वाले कालीन और प्रार्थना की चटाई स्वच्छता के प्रतीक के रूप में काम करती हैं और प्रार्थना करने के लिए एक आरामदायक सतह भी प्रदान करती हैं। ईसाई धर्म में वस्तुओं के महत्व और पवित्रता के प्रतीक के रूप में क्रॉस, सुमिरनी और चश्क जैसी कलाकृतियों को जटिल डिजाइन और कीमती सामग्री से तैयार किया जाता है। संस्कारों के लिए पवित्र पात्र बनाने के लिए कुम्हारी शिल्प का भी उपयोग किया जाता है।

शिल्प के माध्यम से परंपराओं का प्रतिनिधित्व

भारत में शिल्प अक्सर विभिन्न अनुष्ठानों और परंपराओं का प्रदर्शन करते हैं। उदाहरण के लिए महाराष्ट्र की वारली जनजाति अपनी दीवारों और फर्श पर जटिल चित्रकारी करती है जो उनके दैनिक जीवन, धार्मिक आस्थाओं और विवाह एवं फसल कटाई जैसी महत्वपूर्ण घटनाओं के दृश्यों को प्रदर्शित करती है।

चित्रकला धार्मिक, सांस्कृतिक या सामाजिक आयोजनों को दर्शाने का एक सशक्त माध्यम है। हालांकि चित्रकारी में मूल रूप से पौराणिक दृश्यों को चित्रित किया जाता था, पर समय के साथ-साथ उन्होंने वास्तविक जीवन के परिदृश्यों और घटनाओं को भी शामिल करना शुरू कर दिया। ब्रिटिश औपनिवेशिक काल के दौरान भारतीय कलाकारों ने भारतीय लोगों के दैनिक जीवन और सांस्कृतिक प्रथाओं के साथ-साथ ब्रिटिश औपनिवेशिक जीवन के दृश्यों को दर्शाने वाली चित्रकारी शुरू की।

गंजीफा एक पारंपरिक ताश का खेल है जिसकी उत्पत्ति फारस में हुई थी और इसे मुगलकाल के दौरान भारत लाया गया था। खेल में वृत्ताकार कार्डों का उपयोग किया जाता है जिसमें हर कार्ड का एक अनूठा डिज़ाइन और प्रतीकात्मकता होती है। यह कार्ड हाथीदांत, कछुए के खोल और यहाँ तक कि कपड़े जैसी विभिन्न सामग्रियों का उपयोग करके बनाए जाते हैं। गंजीफा के अद्भुत पहलुओं में से एक है कार्ड पर विभिन्न हिंदू देवी-देवताओं का उकेरा जाना। प्रत्येक कार्ड एक अलग देवता को दर्शाता है और खिलाड़ियों को खेल को प्रभावी ढंग से खेलने के लिए उनके महत्व और प्रतीकात्मकता को याद रखना आवश्यक है। उदाहरण के लिए चंद्र कार्ड देवी चंडी को दर्शाता है जो शक्ति का प्रतीक है। परंपराओं का चित्रण केवल चित्रों तक ही सीमित नहीं है बल्कि कढ़ाई और अन्य प्रकार के शिल्पों में भी देखा जाता है। चंबा रुमाल और सांझी पेपर कटिंग इसके कुछ उदाहरण हैं।

हमारे ग्रामीण शिल्प देश के सांस्कृतिक और आर्थिक परिदृश्य का एक अभिन्न अंग बने हुए हैं। इन शिल्पों का विकास समय के साथ हुए सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनों को दर्शाता है और वे भारत की सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बने हुए हैं। आज भारत में कई ग्रामीण शिल्प पर्याप्त महत्व न दिए जाने, घटती मांग और बड़े पैमाने पर उत्पादित वस्तुओं से प्रतिस्पर्धा जैसी चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। हालांकि इन शिल्पों को संरक्षित और बढ़ावा देने के प्रयास किए जा रहे हैं, जिनमें सरकारी पहल, भागीदारी अभियान जैसे स्पिक मैके, और डिजाइनरों व उद्यमियों के साथ सहयोग शामिल हैं। सतत सहायता और जागरूकता के साथ, भारत के ग्रामीण शिल्प फल-फूल सकते हैं और देश की सांस्कृतिक और आर्थिक पहचान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बने रह सकते हैं। ❑

ADMISSIONS OPEN 2023 -24

BE THE CHANGE YOU WANT TO SEE

SCHOOL OF GOVERNMENT

MA (POLITICAL LEADERSHIP AND GOVERNMENT) MPG

2 Years | 4 Semesters

PROGRAMME HIGHLIGHT

+ Field Visits to Gram Panchayats, Zilla Parishad, Municipal Corporation, State Legislative Assembly, Cooperatives and Non Governmental Organizations (NGOs).
+ National Academic Immersion Programme to Delhi National Capital Region.
+ Internship on Election Survey and Campaign Management in Parliament/Assembly/Local Government.
+ Not less than 3 months On-field Mapping in Parliamentary or Assembly Constituency
+ Not less than 6 months internship with Political Leaders and Political Parties
+ Internship with Community Based Organisations/ NGOs/Political Consultancy Organizations and Media Houses.

CAREER OPPORTUNITIES

In addition to the large scope and opportunities in **Electoral Politics from Panchayat to Parliament**, opportunities are available in the domains of **Functional Politics** as:

+ Constituency Development Manager
+ Legislative Associate
+ Campaign & Election Manager
+ Social Media Strategist
+ Public Relations officer
+ Psephologist
+ Political Consultant/Strategist
+ Political Analyst
+ Social Researcher in Development and
+ Welfare Organisation
+ Socio-Political Entrepreneur

In addition, there are several opportunities in **Organisational Politics** as well.

Elite Academy For Education & Training Pvt. Ltd. ★ Delhi ★

FOCUS AREAS

+ Political Communication
+ Legislative Procedures
+ Psephology and Election Analysis
+ Election Campaign Management
+ Constituency Development Management
+ Local Government Institutions - Rural,
+ Urban and Tribal
+ Bureaucracy
+ Budgeting Making Analysis
+ Public Policy
+ Foreign Policy

ELIGIBILITY

Graduates from any discipline having minimum aggregate marks of 50% are eligible to apply for the programme. Candidates in their final year of graduation are also eligible to apply for the programme

UNIVERSITY HIGHLIGHTS

100% INTERNSHIP ASSISTANCE | 100,000+ ALUMNI GLOBALLY | ₹ 40 Cr MERIT BASED SCHOLARSHIPS | IMMERSION PROGRAMME INTERNATIONAL, NATIONAL & RURAL

SCAN TO APPLY

mitwpu.edu.in | admissions@mitwpu.edu.in | 020-71177137 | +91-98814 92848 (Message Only)

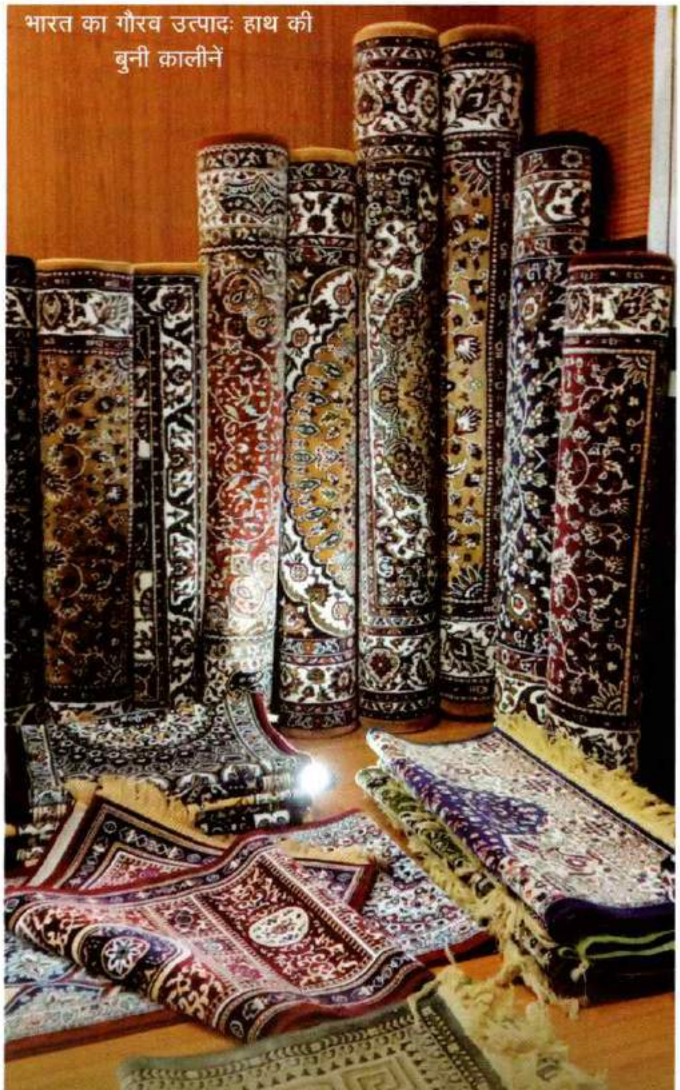

भारत का गौरव उत्पादः हाथ की बुनी क़ालीनें

भारत सरकार के प्रोत्साहनों के चलते भारतीय हस्तशिल्प का निरंतर विस्तार हो रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की पहल पर 'एक जिला-एक उत्पाद' को प्रोत्साहन मिलने से लगभग गुमनाम अस्तित्व वाले उत्पादों को अब राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय फलक पर पहचान मिलने लगी है। इस लेख में ऐसे ही हस्तशिल्पों और हस्त-कारीगरी के बारे में जानकारी दी गई है, जिनके कलाकार और हस्तशिल्पी आज अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान स्थापित कर रहे हैं।

भारतीय शिल्पकला का विस्तृत होता फलक

-हेना नकवी

राष्ट्रपति भवन का दरबार हॉल उनके सम्मान में तालियों से गूंज उठता है, सम्मान केवल उस शिल्पकार का ही नहीं है, उस शिल्प का भी है, जिसने शिल्पकार को गौरव की इस मंज़िल तक पहुँचाया है...। अवसर बहुत ख़ास है, वर्ष 2022-23 के पद्म सम्मान समारोह का जिसमें अन्य पद्मश्री विजेताओं के साथ-साथ बिहार की पेपरमैशे कलाकार श्रीमती सुभद्रा देवी और बिहार के ही बावनबूटी कलाकार श्री कपिलदेव प्रसाद, और कर्नाटक के बिदरी शिल्पकार श्री शाह अहमद राशिद क़ादरी भी महामहिम राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु के हाथों इस सम्मान से नवाज़े गए। वह पल उन समस्त हस्तशिल्पकारों के लिए गौरव का पल था, जिन्होंने हस्तशिल्प की अनेक विधाओं को अपने निरंतर प्रयास से एक नई पहचान दिलाई है।

भारत हस्तशिल्प की विशालकाय शृंखला का जनक भी है, और पोषक भी। कश्मीरी क़ालीन और पश्मीना, पंजाब की फुलकारी कढ़ाई, पूर्वोत्तर राज्यों का बांस-आधारित शिल्प एवं हथकरघा उत्पाद, गुजरात और राजस्थान का बंधेज, उत्तर प्रदेश की ज़री-ज़रदोज़ी, इत्र, चिकनकारी और लकड़ी के खिलौने, केरल-गोवा के सीप के खिलौने, बिहार की मधुबनी पेंटिंग, बावनबूटी, मंजूषा और पेपरमैशे कला, राजस्थान और पश्चिम बंगाल की कठपुतलियां, मध्य प्रदेश का चंदेरी सिल्क, आंध्र प्रदेश की कलमकारी, कर्नाटक का चंदन की लकड़ी आधारित शिल्प; बस कुछेक नाम हैं; इन अनगिनत कलाओं को किसी एक सूची में शामिल करना संभव नहीं है।

कुछ वर्षों पूर्व केवल एक क्षेत्र विशेष तक सीमित, बाज़ार की प्रतिस्पर्धा और आधुनिक तकनीक से दूर, भारतीय हस्तशिल्प क्षेत्र ने आज एक नया और पेशेवर जामा पहन लिया है। हमारे हस्तशिल्प आज हमारी अर्थव्यवस्था का एक सूक्ष्म, लेकिन अत्यंत महत्वपूर्ण संघटक हैं। अल्प लागत और सीमित मानव संसाधनों

लेखिका एक अंतरराष्ट्रीय विकास एजेंसी में वरिष्ठ पद पर कार्यरत हैं। ई-मेल : hena.naqvipti@gmail.com

के साथ चलाया जा सकने वाला यह उद्योग, घरेलू उद्योग की श्रेणी में आता है। भारत की समृद्ध कला-संस्कृति का अभिन्न अंग होने के साथ-साथ, हमारे हस्तशिल्प ग़ैर-कृषि क्षेत्र में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष; दोनों ही रूपों में रोजगार के वैकल्पिक साधन रहे हैं। कभी घर के काम से फ़ुर्सत मिलने पर किए जाने वाले इन उद्यमों ने कई स्थानों पर मुख्य रोजगार और आय के मुख्य स्रोत के रूप में अपनी पहचान बनाई है।

हस्त-कारीगरी क्षेत्र का एक अन्य महत्वपूर्ण संघटक है हथकरघा, जो भारत का सबसे बड़ा कुटीर उद्योग है। इस क्षेत्र में उत्पादित क़ालीनें (जिनमें ग़लीचे और दरी भी शामिल हैं), हमेशा से भारत का गौरव उत्पाद रही हैं। भारत में इन क़ालीनों की एक व्यापक श्रृंखला का उत्पादन होता है, जो घरेलू के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी बेहद लोकप्रिय हैं। गर्व का विषय है कि हाथ की बुनी क़ालीनें, बिक्री और संख्या के मामले में विश्व में अग्रणी हैं। जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, गुजरात और उत्तर प्रदेश की क़ालीनें किसी परिचय की मोहताज नहीं हैं। वाणिज्य विभाग, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा संचालित 'इंडियन ट्रेड पोर्टल' पर उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार, बीस लाख से अधिक कारीगर (मुख्यतः महिलाएं) प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इस क्षेत्र से आय अर्जित करते हैं।

हाल के वर्षों में हस्तशिल्प (हथकरघा उपक्षेत्र समेत) क्षेत्र एक रोज़गार प्रदाता के साथ-साथ राजस्व अर्जक के रूप में तेजी से उभरा है। वाणिज्य विभाग, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार के ट्रस्ट, इंडियन ब्रांड इक्विटी फ़ाउंडेशन के अनुसार, देश भर में तक़रीबन सत्तर लाख हस्तशिल्पी इस क्षेत्र से जुड़े हैं। पूरे देश में कुल 744 हस्तशिल्प क्लस्टर हैं, जिनसे जुड़े हस्तशिल्पी, पैंतीस हज़ार से अधिक हस्तकलाओं को एक नए मुक़ाम तक ले जाने के लिए प्रयासरत हैं।

समय के साथ बढ़ती मांग और लोकप्रियता के मद्देनज़र, इन उत्पादों की एक नई पहचान उभर रही है- एक ऐसी पहचान, जो घरेलू और अंतरराष्ट्रीय बाज़ारों में इन्हें भारतीय संस्कृति के ब्रांड अम्बेसेडर के रूप में स्थापित कर सके। घरेलू बाज़ार में बढ़ती खपत के अलावा, इन उत्पादों की अंतरराष्ट्रीय बाज़ार में

जी.आई.टैग उत्कृष्टता और गुणवत्ता का मानक है। एक बौद्धिक संपदा के रूप में यह संबद्ध कला की, संबंधित भौगोलिक क्षेत्र से पहचान बनाता है, वहीं इन कलाओं की औपचारिक क्षेत्र में प्रविष्टि कराकर उन्हें मज़बूती देता है।

भी तेज़ी से मांग बढ़ रही है। एक्सपोर्ट प्रोमोशन काउंसिल फ़ॉर हैंडीक्राफ्ट्स (ई.पी.सी.एच) के अनुसार, वर्ष 2020-21 की तुलना में वर्ष 2021-22 में विभिन्न हस्तशिल्प उत्पादों के निर्यात में 32 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है, जबकि हाथ की बुनी शॉलों के निर्यात में तो 231 प्रतिशत की शानदार वृद्धि हुई है। काउंसिल के अनुसार, वर्ष 2021-22 में भारतीय हस्तशिल्प क्षेत्र से होने वाले कुल निर्यात का मूल्य 4.35 बिलियन अमेरिकी डॉलर था जोकि पिछले वर्ष की तुलना में 25.7 प्रतिशत अधिक था। वैश्विक स्तर पर हाथ की बुनी कालीनों के निर्यात में भारत का तक़रीबन 40 प्रतिशत का योगदान होता है। अप्रैल 2020-फ़रवरी 2021 के बीच इन क़ालीनों से कुल 1.33 अरब का राजस्व हासिल हुआ था। इस क्षेत्र की असीम क्षमता का अंदाज़ा इन्हीं तथ्यों से लगाया जा सकता है।

हाल के वर्षों में भदोही-मिर्ज़ापुर की क़ालीनों/दरियों, ग़ाज़ीपुर की वॉल हैंगिंग, आगरा की दरी, कश्मीरी क़ालीनों, नवलगण्ड (कर्नाटक) की दरियों, वारंगल (तेलंगाना) के गलीचे, आदि हस्तशिल्पों को जॉग्रफ़िकल इंडिकेशन (जी.आई) टैग प्राप्त हुए हैं। इनके अतिरिक्त, जी.आई.टैग पाने वाले कुछेक अन्य हस्तशिल्प उत्पाद हैंः खुर्जा के बर्तन, राजस्थान की कठपुतली, असम की बेंत और बांस कला, बस्तर की लौह और काष्ठकला, कच्छ की रोगन छपाई, अंडमान के शंख उत्पाद, जयपुर के नीले बर्तन, केरल के नारियल के छिलकों से निर्मित उत्पाद, सहारनपुर के काष्ठ उत्पाद, बिहार की मधुबनी पेंटिंग आदि। जी.आई.टैग उत्कृष्टता और गुणवत्ता का मानक है। एक बौद्धिक संपदा के रूप में यह संबद्ध कला की, संबंधित भौगोलिक क्षेत्र से पहचान बनाता है, वहीं इन कलाओं की औपचारिक क्षेत्र में प्रविष्टि कराकर उन्हें मज़बूती देता है।

Academy For Education & Training Pvt Ltd ★Delhi★

घरेलू बाज़ार में हस्तशिल्प उत्पादों की लोकप्रियता बढ़ाने में ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा आयोजित ग्रामीण हाटों और नियमित 'सरस' मेलों की बहुत अहम भूमिका है। देश के विभिन्न क्षेत्रों और शहरों में प्रत्येक वर्ष लगाए जाने वाले यह मेले, हस्तशिल्पियों के लिए एक महत्वपूर्ण विक्रय मंच होने के साथ-साथ संपूर्ण भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देने वाला एक सुअवसर भी हैं। विपणन के इन महत्वपूर्ण भौतिक मंचों के अतिरिक्त GeM (गवर्नमेंट ई-मार्केट प्लेस) और अन्य लोकप्रिय डिजिटल मंचों की उपस्थिति से इन उत्पादों के विक्रय को काफी प्रोत्साहन मिला है।

शिल्पकारों को संगठित कर उनके उत्पादन में गुणवत्ता लाने के क्रम में एक महत्वपूर्ण भूमिका हैं, 'दीनदयाल अंत्योदय योजना-राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन' के तहत संचालित स्वयं सहायता समूहों की। वर्तमान में 83 लाख स्वयंसहायता समूह संचालित हैं (स्रोतः 'आजीविका' मिशन का पोर्टल) जिनके मंच से ग्रामीण क्षेत्र के निर्धन परिवारों को विभिन्न आय-सृजन गतिविधियों से जोड़ा जाता है। ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा इन समूहों के लिए रियायती ऋण, गतिविधि-आधारित प्रशिक्षण और वित्तीय समावेशन की व्यवस्था की गई है, ताकि इन समूहों के उत्पाद बाज़ार के मानकों पर खरे उतर सकें। इन समूहों में एक बहुत बड़ी संख्या हस्तशिल्प से जुड़ी महिलाओं की है। इन समूहों द्वारा उत्पादित हस्तशिल्पों से जहाँ एक ओर समूह सदस्यों को सतत रोज़गार मिला है, वहीं अनेक मृतप्रायः हस्तकलाओं का जीर्णोद्धार भी हुआ है। अनेक स्वयंसहायता समूहों ने अपने दम पर विदेशों में भी उत्कृष्ट कला का प्रदर्शन करते हुए अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है।

धातुओं से निर्मित ग्रामीण हस्तशिल्प बिदरीवेयर

Elite Academy For Education & Training Pvt. Ltd. ★ Delhi ★

यह कर्नाटक राज्य की एक अद्वितीय धातु हस्तकला है जिसका प्रयोग बहमनी सुल्तानों के शासन के दौरान 14वीं शताब्दी से किया जाता रहा है। इसे बिदरी कला के रूप में भी जाना जाता है।यह पारंपरिक भारतीय हस्तकला अपनी आकर्षक जड़ाई कला के कारण अनोखी होती है। बिदरीवेयर को बनाने के लिए उपयोग की जाने वाली धातु जस्ता और तांबे की एक मिश्र धातु है जिसे काला किया जाता है और फिर शुद्ध चांदी की पतली परतों से उसे ढक दिया जाता है। कर्नाटक राज्य का यह हस्तशिल्प भारत के सबसे लोकप्रिय पारंपरिक शिल्पों में से एक है।

'एक ज़िला - एक उत्पाद' की कुछ ख़ास बातें

- ओडोप (ODOP) GeM बाज़ार को 29 अगस्त, 2022 को सरकारी ई-मार्केटप्लेस (GeM) पर लॉन्च किया गया था, जिसमें देश भर में ओडोप उत्पादों की बिक्री और खरीद को बढ़ावा देने के लिए 200 से अधिक उत्पाद श्रेणियां बनाई गई थीं।
- ओडोप उत्पादों को विभिन्न अंतरराष्ट्रीय मंचों जैसे विश्व आर्थिक मंच, मई 2022 में दावोस, जून 2022 में न्यूयॉर्क, अमेरिका में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस आदि में प्रदर्शित किया गया।
- ओडोप पहल की पहचान अप्रैल 2022 में 'एक जिला एक उत्पाद' श्रेणी के माध्यम से समग्र विकास में लोक प्रशासन में उत्कृष्टता के लिए प्रतिष्ठित प्रधानमंत्री पुरस्कार के लिए की गई है।
- डी.ई.एच. के तहत (क) राज्य निर्यात संवर्धन समिति (एस.ई.पी.सी) और जिला निर्यात प्रोत्साहन समिति (डी.ई.पी.सी) का गठन सभी राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों में किया गया है। (ख) देश भर के 734 जिलों में निर्यात क्षमता वाले उत्पादों/सेवाओं की पहचान की गई है (इन जिलों में कृषि और खिलौना समूहों और जी.आई.उत्पादों सहित); (ग) 28 राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों में राज्य निर्यात रणनीति तैयार की गई है (घ) जिला निर्यात हब (डी.ई.एच) के तहत, राज्य नोडल अधिकारियों को 34 राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों में नामित किया गया है; (ङ) 681 जिलों में डी.ई.पी.सी बैठकें पहले ही आयोजित की जा चुकी हैं; (च) 570 जिलों के लिए मसौदा जिला कार्ययोजना तैयार की गई है; (छ) विदेश व्यापार महानिदेशालय (डी.जी.एफ.टी) द्वारा सभी जिलों में जिला निर्यात कार्ययोजना की प्रगति की निगरानी के लिए एक वेबपोर्टल विकसित किया गया है।

'स्रोत : पसूका

भारत सरकार की नोडल एजेंसी, ऑफ़िस ऑफ़ डेवलपमेंट कमिश्नर (हैंडीक्राफ़्ट्स) इस क्षेत्र के उन्नयन के लिए निरंतर प्रयासरत है। इस क्षेत्र के उन्नयन के लिए सरकार द्वारा किए जा रहे असंख्य प्रयासों में नेशनल हैंडीक्राफ़्ट डेवलपमेंट प्रोग्राम (एन.एच.डी.पी) और कौम्प्रिहेंसिव हैंडीक्राफ़्ट्स क्लस्टर डेवलपमेंट स्कीम (सी.एच.सी.डी.एस) के नाम मुख्य रूप से लिए जा सकते हैं। एन.एच.डी.पी. के तहत सर्वेक्षण, हस्तशिल्पियों के लिए प्रशिक्षण, डिज़ाइनों का उन्नयन एवं प्रौद्योगिकीकरण, आधारभूत संरचनाओं का विकास, ऋण एवं बीमा जैसे क़दम शामिल हैं जबकि सी.एच.सी.डी.एस. योजना में उत्पादन के लिए आवश्यक आधुनिक बुनियादी ढांचों के विकास, प्रौद्योगिकीकरण, प्रशिक्षण के अतिरिक्त बाज़ार से लिंकेज, उत्पादों का विविधिकरण, एवं गाँधी शिल्प बाज़ार, क्राफ़्ट बाज़ार, प्रदर्शनियां तथा वर्चुअल विपणन कार्यक्रम भी शामिल हैं। इसी तरह, नेशनल हैंडलूम्स डेवलपमेंट प्रोग्राम (एन.एच.डी.पी) के तहत उत्पादन से लेकर विपणन को मज़बूती प्रदान करने के अनेक संघटक शामिल हैं।

हस्तशिल्प या किसी भी उत्पाद की सफलता की गारंटी तभी मिल सकती है, जब उत्पादों की विक्रय शृंखला मजबूत हो, जिसमें उत्पाद की मांग, परिवहन, डिलीवरी और भुगतान शामिल हैं। साथ ही, इनकी शो-केसिंग के लिए ऐसे प्लेटफॉर्म हों, जो आम लोगों या संभावित उपभोक्ताओं के बीच लोकप्रिय हों। डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म के उपलब्ध होने से अब यह काम बहुत आसान हो गया है। लेकिन उत्पादक के दरवाज़े पर यह सब कुछ उपलब्ध करवाना महत्वपूर्ण है। उत्पादक अपने उत्पाद का महत्व जाने और उसे उत्पाद का उचित और लाभदायक मूल्य मिले, तभी इन उद्यमों का सतत विकास संभव है।

'एक जिला - एक उत्पाद' (वन डिस्ट्रिक्ट -वन प्रॉडक्ट) जिसे संक्षेप में 'ओडोप' भी कहा जाता है, इन उद्यमों को सतत जीवन प्रदान करता है। ओडोप पहल को अब 'डिस्ट्रिक्ट ऐज़ एक्सपोर्ट हब' पहल से जोड़ दिया गया है। इस पहल का महत्वपूर्ण मार्गदर्शक, वाणिज्य विभाग का उद्योग एवं आंतरिक व्यापार प्रोत्साहन विभाग (डी.पी.आई.आई.टी) है।

एक जिले में एक ख़ास उत्पाद की पहचान होने से देश के लगभग सभी जिलों में उद्यमिता का विकास सुनिश्चित हो रहा है। इससे ग्रामीण उद्यमिता, जिसकी अब तक कोई विशेष पहचान नहीं बन पायी थी, को तीव्र विकास का अवसर मिल रहा है। साथ ही, समान आर्थिक उन्नति को भी प्रोत्साहन मिल रहा है। मूलतः यह गांधीवादी विचार है, जिसमें प्रत्येक ग्राम को एक स्वतंत्र आर्थिक इकाई के रूप में देखा गया है। सरकार की कोशिश है कि जिले को विशिष्ट उत्पाद के निर्माण और निर्यात का 'हब' बनाया जाए। इस पहल के सतत संचालन के लिए राज्य और केन्द्र सरकार के परस्पर समन्वय पर भी बल दिया गया है। ओडोप में न केवल निर्यात बल्कि घरेलू खपत पर भी समान रूप से जोर दिया गया है।

मंजूषा कला : हाथों की जादूगरी

ओडोप के प्रोत्साहन के लिए सर्वोच्च स्तर पर प्रयास किए जा रहे हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी अपने मासिक रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' में ओडोप का जिक्र कर चुके हैं। ओडोप स्थानीय लघु और मध्यम श्रेणी के उद्यमियों और स्टार्टअप्स के लिए भी एक आसान पहल साबित हुआ है। इस योजना का सबसे अच्छा पहलू यह है कि सूक्ष्म और लघु उद्यम से जुड़े राज्य व केन्द्र सरकारों के सभी विभागों के समन्वय से उद्यमियों को सभी सुविधाएं एक ही प्लेटफ़ॉर्म पर मिल जाती हैं, जैसे मार्केटिंग के लिए जेम, नाफेड, लघु एवं मध्यम उद्योग विभाग, बैंक और सरकारी वित्तीय संस्थान; सभी का सहयोग ओडोप के लिए आसानी से मिल जाता है। ओडोप पहल को 'डिस्ट्रिक्ट ऐज़ एक्सपोर्ट हब' पहल से जोड़ दिए जाने के कारण अब निर्यात के लिए भी उद्यमियों या उत्पादकों को कोई भाग-दौड़ नहीं करनी पड़ेगी; उन्हें अधिक-से-अधिक अपने उत्पादन स्थल से ज़िला मुख्यालय ही आना पड़ेगा।

ओडोप की शो-केसिंग लोकप्रिय ई-कॉमर्स साइटों पर तो है ही; रेलवे स्टेशनों, बस अड्डों और हवाई अड्डों पर भी इनकी उपलब्धता होने से यात्रा कर रहे लोगों को उस ज़िले की पहचान स्थापित करने वाले उत्पाद आसानी से मिल रहे हैं। इसके अलावा, पारंपरिक मेलों और उत्सवों के दौरान भी अब नए कलेवर और ब्रांडिंग के साथ ओडोप के उत्पाद उपलब्ध हैं।

भारत के लघु, मध्यम और कुटीर उद्योग; यहाँ तक कि सूक्ष्म घरेलू उद्यम ही भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं। सरकार के सर्वोच्च स्तर पर इन उद्यमों और हस्तशिल्पों को प्रोत्साहन देने और इनके निर्यात की अड़चनों को दूर करने से एक समावेशी अर्थव्यवस्था विकसित हो रही है। यह न सिर्फ देश की प्रति व्यक्ति आय को बढ़ाएगी, बल्कि अर्थव्यवस्था की क्षेत्रीय असमानता को दूर करते हुए एक सशक्त और विकसित राष्ट्र के निर्माण का मार्ग प्रशस्त करेगी।

हस्तशिल्प कलाओं के पुनरुद्धार से अंतरराष्ट्रीय राजस्व के एक अतिरिक्त स्रोत का सृजन हुआ है। चूंकि इस क्षेत्र में एक बहुत बड़ा प्रतिशत महिलाओं का है, इसलिए इस क्षेत्र से प्राप्त आय उन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाती है। पर्यटन उद्योग को सहयोग देने के अतिरिक्त यह क्षेत्र, स्थानीय कला-संस्कृति के संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। लेकिन हर क्षेत्र की तरह, इस क्षेत्र की भी अपनी चुनौतियां हैं। सबसे बड़ी चुनौती तो यह है कि यह क्षेत्र आज भी असंगठित है। हस्तशिल्पीगण, विशेषकर कृषक परिवारों से जुड़े हस्तशिल्प इस क्षेत्र को केवल एक वैकल्पिक रोज़गार के रूप में देखते हैं, जिसके कारण इस क्षेत्र में वांछित निवेश नहीं हो पाता। यह क्षेत्र आज भी आवश्यक शिक्षा और प्रौद्योगिकी के आच्छादन से दूर है, जिसका प्रभाव उत्पादकता और उत्पादों की गुणवत्ता पर पड़ता है।

आने वाले समय में इस क्षेत्र को और अधिक निवेश और सांस्थानिक ढांचों की आवश्यकता होगी ताकि यह भी एक आत्मनिर्भर और सतत रोजगार क्षेत्र के रूप में अपनी पहचान बना सके, और आज़ादी के अमृतकाल में 'आत्मनिर्भर भारत' के निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सके। ❑

Elite Academy For Education & Training Pvt. Ltd. ★ Delhi ★

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

देश के सबसे बड़े सरकारी प्रकाशन समूह संग व्यापार का अवसर

हमारी लोकप्रिय पत्रिकाओं और साप्ताहिक रोज़गार समाचार की विपणन एजेंसी लेकर सुनिश्चित करें आकर्षक नियमित आय

विपणन एजेंसी मिलना... मतलब

- ✓ असीमित लाभ
- ✓ निवेश की 100% सुरक्षा
- ✓ स्थापित ब्रांड का साथ
- ✓ पहले दिन से आमदनी
- ✓ न्यूनतम निवेश-अधिकतम लाभ

रोज़गार समाचार के एजेंसी धारकों के लिए लाभ

प्रतियों की संख्या	खुदरा मूल्य में छूट
20-1000	25%
1001-2000	35%
2001-अधिक	40%

मासिक पत्रिकाओं के एजेंसी धारकों के लिए लाभ

प्रतियों की संख्या	खुदरा मूल्य में छूट
20-250	25%
251-1000	40%
1001-अधिक	45%

विपणन एजेंसी पाना बेहद आसान

- किसी शैक्षणिक योग्यता की बाध्यता नहीं
- कोई व्यावसायिक अनुभव जरूरी नहीं
- खरीद का न्यूनतम तीन गुना निवेश (पत्रिकाओं हेतु) अपेक्षित

रु. 12/-

रु. 22/-

रु. 15/-

सम्पर्क

रोज़गार समाचार
फोन: 011-24365610
ई-मेल: sec-circulation-moib@gov.in

पत्रिका एकक
ई-मेल: pdjucir@gmail.com
फोन: 011-24367453

पत्र भेजें : रोज़गार समाचार, कक्ष संख्या-779, 7वां तल, सूचना भवन, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003

ग्रामीण अर्थव्यवस्था में हस्तशिल्प का योगदान

-ऋषभ कृष्ण सक्सेना

ग्रामीण शिल्प या दस्तकारी लंबे अरसे से भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ रहे हैं। कृषि के बाद देश में सबसे अधिक रोज़गार इन्हीं कलाओं के उद्योग से आता है और ग्रामीण तथा शहरी आबादी को आजीविका का बेहद अहम साधन इन शिल्पों से मिलता है। हस्तशिल्प या दस्तकारी पारंपरिक कलाओं को जीवित तो रखती ही हैं, ग्रामीण इलाकों में परिवार की कुल आय में भी इसका बहुत बड़ा योगदान है। देश के कुछ हिस्सों में महिलाओं का समूह कुटीर उद्योग या लघु उद्यम की तरह शिल्प को संगठित और औपचारिक रूप दे रहा है, जिससे उनका उत्पादन, कारोबार और आय काफ़ी बढ़ रहे हैं।

आपने मधुबनी चित्रकला का नाम सुना होगा या पट्टचित्र का ज़िक्र कभी आपके सामने हुआ होगा? आपने चंदेरी साड़ी, गुजरात की ब्लॉक प्रिंटिंग या ज़री ज़रदोज़ी का नाम तो ज़रूर सुना होगा। ये सभी भारत के अलग-अलग इलाकों की शिल्प कलाएं हैं, जिनमें हाथ की कारीगरी दिखाई देती है। ख़ास बात यह है कि इनमें से ज़्यादातर शिल्पग्रामीण इलाकों में फलते-फूलते हैं। ये ग्रामीण शिल्प या दस्तकारी लंबे अरसे से भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ रहे हैं। कृषि के बाद देश में सबसे अधिक रोज़गार इन्हीं कलाओं के उद्योग से आता है और ग्रामीण तथा शहरी आबादी को आजीविका का बेहद अहम साधन इन शिल्पों से मिलता है।

शिल्प के मामले में भारत हमेशा से बहुत समृद्ध रहा है। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक भारत में करीब 70 लाख शिल्पी हैं मगर अनाधिकारिक स्रोतों के हिसाब से इनकी संख्या कम से कम 2 करोड़ है। आंकड़ों में इतना अंतर इसलिए है क्योंकि यह क्षेत्र अनौपचारिक और असंगठित है। हालांकि बढ़ते शहरीकरण और रोज़गार की तलाश में शहरों की ओर पलायन के कारण कई ग्रामीण शिल्पकलाएं खत्म होती जा रही हैं फिर भी देश में 3,000 से अधिक पारंपरिक शिल्पकलाएं मिलती हैं।

जम्मू-कश्मीर में कागज की लुग्दी की कलाकृतियां, लद्दाख और हिमाचल में थंगका चित्रकारी, पंजाब में फुलकारी तथा बाघ पोशाकें, उत्तर प्रदेश में चिकनकारी और ज़रदोज़ी, मध्य प्रदेश में चंदेरी साड़ी और गोंड चित्रकारी, महाराष्ट्र में टेराकोटा कलाकृतियां और वरली चित्रकारी, कर्नाटक में चंदन की नक्काशी और बंजारा कढ़ाई, तमिलनाडु में तंजावुर कलमकारी, आंध्र प्रदेश में कलमकारी, रूमाल तथा कोंडापल्ली खिलौने तथा तेलंगाना में इकत का काम उनमें से कुछ ख़ास नाम हैं। देश के पूर्वोत्तर और जनजातीय इलाकों में बांस और घास से कई प्रकार की कलाकृतियां बनाई जाती हैं। इसी तरह बिहार में मधुबनी चित्रकारी और रेशम का काम हो अथवा पश्चिम बंगाल तथा ओडिशा में पट्टचित्र हों, देश के कमोबेश हरेक हिस्से में ऐसी शिल्पकला मिल जाती हैं, जो उस हिस्से की पहचान बन गई हैं। इन कलाओं को

लेखक वरिष्ठ आर्थिक पत्रकार हैं। ई-मेल : rishabhakrishna@gmail.com

जीवित रखने का काम ग्रामीण समुदायों ने ही किया है।

ग्रामीण आय का ज़रिया

हस्तशिल्प या दस्तकारी पारंपरिक कलाओं को जीवित तो रखती ही हैं, ग्रामीण इलाकों में परिवार की कुल आय में भी इसका बहुत बड़ा योगदान है। गाँवों में जहां पुरुष आमतौर पर खेती में जुटे रहते हैं, वहां महिलाएं और वंचित वर्गों के लोग हस्तशिल्प में व्यस्त रहते हैं। संस्कृति, रिवाज या सामाजिक प्रचलनों के कारण ये लोग बाहर ज़्यादा नहीं निकल पाते या समाज के बाकी लोगों के साथ घुलमिल नहीं पाते। ऐसे में श्रम बल से बाहर रहने वाले ये लोग शिल्प के माध्यम से परिवार की आय में योगदान ज़रूर करते हैं। वास्तव में देश के कुछ हिस्सों में महिलाओं का समूह कुटीर उद्योग या लघु उद्यम की तरह शिल्प को संगठित और औपचारिक रूप दे रहा है, जिससे उसका उत्पादन, कारोबार और आय काफ़ी बढ़ रहे हैं।

यूं भी अध्ययन कहते हैं कि भारत में 2030 तक कृषि से इतर लगभग 9 करोड़ रोज़गार की ज़रूरत है। किसानों की आय बढ़ाने के सरकार के संकल्प में भी कृषि से इतर गतिविधियां कारग़र साबित हो सकती हैं, जिनमें हस्तशिल्प भी अहम भूमिका निभाएगा। इसलिए किसान परिवारों में पशुपालन, पोल्ट्री आदि के साथ ही शिल्प पर भी ज़ोर दिया जाए तो अधिक आय हो सकती है क्योंकि शिल्प उत्पाद दूध या चटनी-पापड़ के बजाय काफ़ी अधिक मार्जिन यानी मुनाफ़ा दे सकते हैं।

निर्यात में योगदान

दस्तकारी का देश के निर्यात राजस्व में भी ख़ासा योगदान है। हालांकि ग्रामीण हस्तशिल्प के कारोबार और निर्यात के आंकड़े तो अलग से नहीं मिलते मगर कुल भारतीय हस्तशिल्प निर्यात में इनकी अच्छी-खासी हिस्सेदारी है। एंटीक कलाकृतियों, पारंपरिक कलाकृतियों, सेरैमिक, कढ़ाई, ब्लॉक प्रिंटिंग, कपड़े, फर्नीचर, जेवरात, चमड़ा उत्पाद, धातु उत्पाद, रत्न जैसे सामान हस्तशिल्प में आते हैं और भारत से इनका काफ़ी निर्यात होता है। हस्तशिल्प निर्यात संवर्धन परिषद (ईपीसीएच) के अप्रैल, 2023 में जारी आंकड़ों के मुताबिक वित्त वर्ष 2022-23 में देश से 358.35 करोड़ डॉलर के हस्तशिल्प उत्पादों का निर्यात हुआ। इसमें भी सबसे बड़ी हिस्सेदारी लकड़ी के उत्पादों की रही है। वर्ष 2022-23 में तकरीबन 100 करोड़ डॉलर का निर्यात तो लकड़ी के सामान का ही हुआ था। उससे पिछले वित्त वर्ष में लकड़ी उत्पादों का निर्यात आंकड़ा 125 करोड़ डॉलर से कुछ ही कम था।

हालांकि 2021-22 के मुकाबले निर्यात का आंकड़ा लगभग 20 प्रतिशत कम रहा मगर इसका कारण रूस-यूक्रेन युद्ध, विकसित देशों में मंदी की आहट और महंगाई का लगातार बढ़ता दबाव रहा। बेशक निर्यात के आंकड़े कुछ सुस्त पड़े मगर इनकी बड़ी वजह प्रमुख बाज़ारों में आई मंदी है। यदि सरकार निर्यात के नए बाज़ार तलाशती है तो शिल्प उत्पादों का निर्यात बहुत तेज़ी से बढ़ सकता है।

समस्याएं कई

विडंबना यह है कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था और निर्यात में इतने योगदान के बाद भी शिल्पकारों की आय बहुत कम रहती है। 2019-20 की अखिल भारतीय हथकरघा जनगणना के मुताबिक 66 प्रतिशत हथकरघा बुनकर 5,000 रुपये महीने से भी कम कमाते हैं। उनकी ख़स्ता माली हालत के कई कारण हैं जैसे पारंपरिक एजेंट और कारोबारी, जो शिल्पकारों का सारा मार्जिन खा लेते हैं और उन्हें मुनाफ़ा ही नहीं होने देते। इन बिचौलियों से बचने के लिए शिल्पकार कई बार प्रदर्शनियों या शिल्पमेलों में सीधे बिक्री करने पहुंच जाते हैं। मगर उसमें उनकी काफी पूंजी खर्च हो जाती है।

Elite Academy For Education & Training Pvt. Ltd. ★ Delhi ★

Elite Academy For Education & Training Pvt. Ltd. * Delhi *

शिल्प विकास योजनाएं

केंद्र सरकार और राज्य सरकारें हस्तशिल्प और विशेषकर ग्रामीण हस्तशिल्प को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं चला रही हैं। वर्तमान केंद्र सरकार का तो इस पर ख़ास ज़ोर है। इसके तहत शिल्पकारों के लिए छह प्रमुख योजनाएं चलाई जा रही हैं।

1. मार्केटिंग सहायता एवं सेवा - देश में हस्तशिल्प के विकास में मार्केटिंग की अहम भूमिका है। इसलिए उत्पाद बेचने और उनकी मार्केटिंग करने में शिल्पियों की मदद करने के लिए सरकार विभिन्न प्रकार के प्रयास करती है। शिल्पकारों को बड़ा बाज़ार मुहैया कराने और उनके उत्पादों को लोगों तक पहुँचाने के लिए देसी और विदेशी बाज़ारों में मेले तथा प्रदर्शनी आदि कराए जाते हैं। देश में विभिन्न शिल्पकलाओं के लिए गाँधी शिल्प बाज़ार लगाए जाते है, जिनमें देश के विभिन्न हिस्सों से शिल्पियों को अपनी कला के प्रदर्शन और उत्पादों की बिक्री का मौका मिलता है। नियमित अंतराल पर सरकारी विभाग शिल्प प्रदर्शनियां भी आयोजित कराते हैं, जो गांधी शिल्प बाज़ार की तुलना में अधिक बड़े स्तर पर होती हैं। इसके अलावा, राष्ट्रीय शिल्प मेले होते हैं, जो बड़े अंतराल के बाद और बड़े स्तर पर होते हैं। इनमें बड़ी तादाद में शिल्पकारों को आने और उत्पाद बेचने का मौका मिलता है। नई दिल्ली में हर वर्ष होने वाले भारत अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेले जैसे आयोजन भी शिल्पियों को मार्केटिंग और बिक्री का सुनहरा मौका प्रदान करते हैं।

इसके अलावा, विदेशों में अंतरराष्ट्रीय शिल्प मेले, भारतीय लोक कला महोत्सव, शिल्प रोड शो, शिल्प जागरूकता कार्यक्रम आदि का आयोजन किया जाता है। सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों में भी शिल्प तथा शिल्पियों को प्रमुख स्थान दिया जाता है। शिल्पियों और इस क्षेत्र से जुड़े एमएसएमई को बड़ा बाज़ार और खरीदार मुहैया कराने के लिए नियमित रूप से बायर-सेलर मीट आयोजित कराए जाते हैं, जिनमें अक्सर विदेशी खरीदार आते हैं।

2. हस्तशिल्प क्षेत्र में कौशल विकास - शिल्प के मामले में भारत बहुत समृद्ध है मगर आधुनिक बाज़ार की ज़रूरतों को देखते हुए शिल्प उत्पादों को अधिक परिष्कृत बनाना, बेहतर पैकेजिंग देना तथा बड़े स्तर पर उत्पादन करना ज़रूरी हो गया है। इसके लिए शिल्पियों को प्रशिक्षण देने और ज़रूरी कौशल एवं सहायता उपलब्ध कराने का काम भी किया जा रहा है। इस उद्देश्य से सरकार डिज़ाइन एवं प्रौद्योगिकी विकास कार्यशालाएं चलाती है, जिसमें शिल्पियों को उत्पादों की बेहतर और आधुनिक डिज़ाइन देना और मेहनत कम एवं उत्पादन अधिक करने के लिए प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल करना सिखाया जाता है। ऐसी कार्यशालाओं में 20 से 40 शिल्पकारों को 25 से 75 दिन तक प्रशिक्षण दिया जाता है।

कलाओं को विलुप्त होने से रोकने के लिए गुरु शिष्य हस्तशिल्प प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं, जिसमें माहिर शिल्पी नई पीढ़ी के शिल्पकारों को उस कला के गुर देते हैं। इससे कौशल की कमी दूर होती है और बाज़ार को अधिक संख्या में उत्पाद भी मिलते हैं। इसी प्रकार कौशल उन्नयन कार्यक्रम भी चलाए जाते हैं, जिससे शिल्पियों को बेहतर और अधिक संख्या में शिल्प उत्पाद तैयार करने में मदद मिलती है।

3. अम्बेडकर हस्तशिल्प विकास योजना - यह क्लस्टर पर आधारित और बेहद महत्वपूर्ण योजना है। इसके तहत किसी भी क्षेत्र में तीन से पाँच किलोमीटर के दायरे में आने वाले गाँवों का क्लस्टर बना दिया जाता है, जिसमें स्थानीय शिल्प के कारीगर शामिल रहते हैं। इस क्लस्टर को पाँच वर्ष तक वित्तीय, तकनीकी और सामाजिक सहायता प्रदान की जाती है। इसका मकसद शिल्पकारों के लिए रोज़गार सृजन करना, उन्हें बेहतर तकनीक का इस्तेमाल सिखाना, डिज़ाइन बेहतर बनाकर प्रतिस्पर्धियों से आगे निकलना, बाज़ार मुहैया कराना, स्थानीय शिल्प के ब्रांड तैयार कर उनका प्रचार करना और विभिन्न संसाधन जुटाना है। इसके तहत देसी बाज़ार और विदेशी बाज़ार के लिए अलग-अलग क्लस्टर पहचाने जाते हैं और उन्हें हर प्रकार की सहायता दी जाती है। इस योजना के तहत उद्यमिता विकास कार्यक्रम चलाए जाते हैं, जो शिल्पियों को मात्र उत्पादक बनकर रह जाने के बजाय अपने उत्पादों के विनिर्माता और कारोबारी बनने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

4. शिल्पकारों को प्रत्यक्ष अंतरण - डीबीटी की तर्ज पर चलने वाली यह योजना बुज़ुर्ग शिल्पकारों के लिए है। शिल्प गुरु सम्मान, राष्ट्रीय पुरस्कार अथवा मेरिट प्रमाणपत्र या राज्य पुरस्कार पाने वाले शिल्पियों और हस्तशिल्प में उत्कृष्ट कारीगरी वाले ऐसे शिल्पियों को इसके तहत वित्तीय सहायता दी जाती है, जिनकी वार्षिक आय 1 लाख रुपये से अधिक नहीं होती और जिनकी उम्र 60 वर्ष से कम नहीं होती। इसके तहत उन्हें हर महीने अधिकतम 5,000 रुपये दिए जाते हैं। इसके अलावा, शिल्पकारों को ब्याज में रियायत दी जाती है।

5. बुनियादी ढांचा एवं प्रौद्योगिकी सहायता - इसके अंतर्गत शिल्पियों को शहरों और महानगरों में ग्राहकों से सीधे संपर्क करने और माल बेचने के लिए सुविधा उपलब्ध कराई जाती है। नई दिल्ली में दिल्ली हाट तथा कई शहरों में शिल्पग्राम इसके उदाहरण हैं। इसी तरह शहरों में शिल्पियों के लिए इंपोरियम और हस्तशिल्प म्यूज़ियम तथा कच्चे माल के डिपो बनाए गए हैं। विभिन्न विभाग शिल्प निर्यातकों और उद्यमियों को तकनीकी उन्नयन में मदद करते हैं। कच्चे माल तथा तैयार उत्पादों के मानकीकरण के लिए जांच प्रयोगशालाएं बनाई गई हैं।

6. अनुसंधान एवं विकास - इसमें विभिन्न हस्तशिल्पों के आर्थिक, सामाजिक एवं संवर्धन से जुड़े पहलुओं पर अध्ययन तथा सर्वेक्षण कराए जाते हैं। इससे शिल्पियों की स्थिति और उनके जीवन स्तर में बदलाव जैसी बातों का भी पता चलता है।

इसके अलावा पीढ़ी-दर-पीढ़ी एक ही तरीके से काम करने वाले शिल्पी आधुनिक समय की मांग के अनुसार ख़ुद को ढाल नहीं पाते और नई प्रौद्योगिकी का भी इस्तेमाल नहीं करते। इससे उनका उत्पादन कम रहता है, नए और विविधता भरे डिज़ाइन के बदले वे एक ही ढर्रे पर उत्पाद बनाते रहते हैं और समूह यानी क्लस्टर का फ़ायदा नहीं उठा पाते। इन कारणों से भी उनकी आय बहुत कम रह जाती है। जहां कुछ शिल्पी आधुनिक तरीके अपनाकर महीने के 25,000 से 30,000 रुपये तक कमा रहे हैं वहीं ज़्यादातर शिल्पकार 10,000 रुपये से भी कम आय में संतोष कर लेते हैं।

चूंकि शिल्पकार आधुनिक मशीनों के बजाय पारंपरिक तरीके से काम करते हैं, इसलिए बड़े शहरों के बजाय इनकी ज़्यादातर आबादी ग्रामीण इलाकों में रहती है। लेकिन गाँवों में होने की वजह से यह न तो संगठित और औपचारिक जामा पहन पाया है तथा न ही मेहनत के एवज में सही पारिश्रमिक पाने की हालत में है। एक और बड़ी दिक्कत पूंजी की है, जो शिल्पकारों और उन्हें काम देने वाले सूक्ष्म, लघु एवं मझोले उद्यमों (एमएसएमई) को बहुत परेशान करती है। हालांकि सरकार ने मुद्रा ऋण और दूसरी योजनाओं के माध्यम से छोटे उद्योगों के लिए पूंजी की समस्या दूर करने का प्रयास किया है किंतु अक्सर इनके साथ इतनी अधिक और जटिल शर्तें जुड़ी होती हैं कि लोग आवेदन ही नहीं करते और करते भी हैं तो उनकी अर्ज़ी खारिज हो जाती है। ऐसे में महिलाओं का समूह या शिल्पियों का क्लस्टर धनाभाव के कारण बाज़ार की मांग के अनुरूप उत्पादन नहीं कर पाता और कारोबार का मौक़ा गंवा बैठता है।

सरकारी योजनाएं

ऐसा भी नहीं है कि सरकार शिल्पियों की समस्याओं पर ध्यान नहीं दे रही है। सरकारें हमेशा ही शिल्प को बढ़ावा देती आई हैं और मोदी सरकार के तहत इसमें पहले से अधिक सक्रियता हो गई है। मुद्रा और दूसरी योजनाओं के ज़रिये शिल्पियों को कर्ज़ देकर पूंजी की समस्या दूर करने का प्रयास हो रहा है, तकनीक के इस्तेमाल को बढ़ावा दिया जा रहा है, बुनियादी ढांचा मज़बूत किया जा रहा है और कई योजनाएं भी चलाई जा रही हैं (देखें बॉक्स)। सरकार के राष्ट्रीय हस्तशिल्प विकास कार्यक्रम के अंतर्गत अम्बेडकर हस्तशिल्प विकास योजना, मेगा क्लस्टर योजना, विपणन सहायता एवं सेवा योजना, अनुसंधान एवं विकास योजना चलाई जा रही हैं, जो शिल्पकारों और उनके साथ जुड़े एमएसएमई को बुनियादी ढांचे और वित्त से लेकर प्रौद्योगिकी तक सभी प्रकार की मदद मुहैया कराती हैं। इन योजनाओं के सफल क्रियान्वयन और प्रचार के कारण कई गाँवों में शिल्प क्लस्टर भी बने हैं, जिनसे शिल्पियों को संगठित होकर काम करने और उत्पादकता बढ़ाने में मदद मिली है।

कैसे सुधरे हालात

बढ़ें निर्यात बाज़ार :- लेकिन सरकार के इतने प्रयास शायद नाकाफ़ी होंगे और उस पर नए नज़रिए से विचार करना होगा।

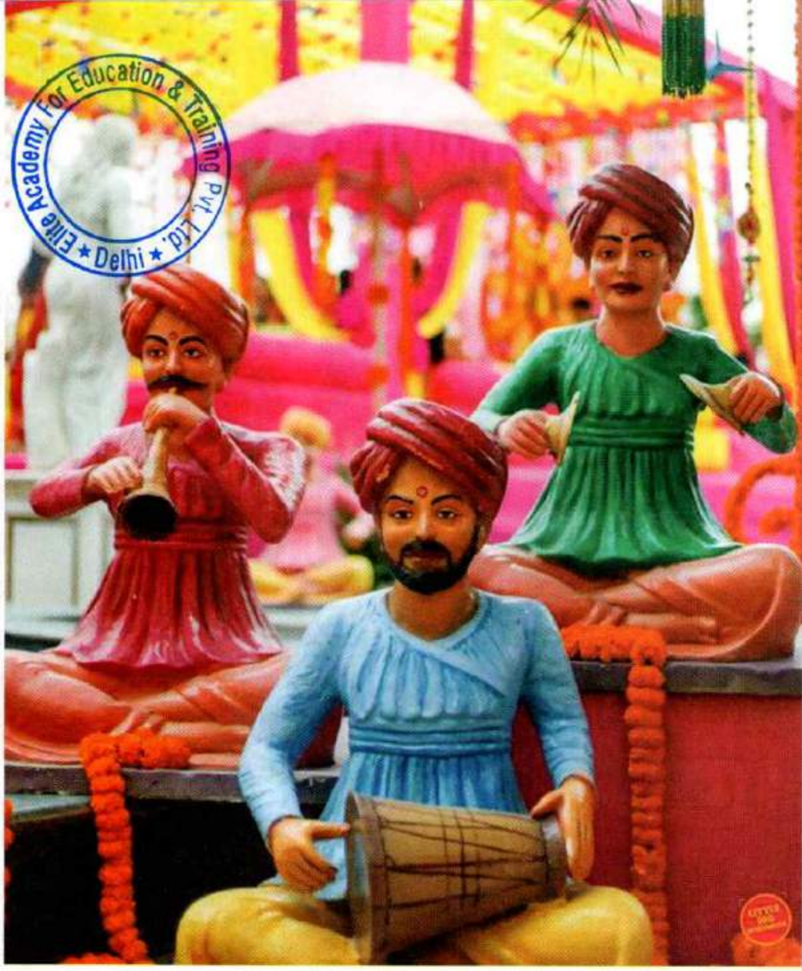

निर्यात के आंकड़े बताते हैं कि अमेरिका, ब्रिटेन, संयुक्त अरब अमीरात, जर्मनी, फ्रांस, लैटिन अमेरिका, इटली, कनाडा और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों में भारतीय हस्तशिल्प की बहुत मांग है। लेकिन यूरोप में युद्ध की आंच और ब्याज दर कटौती के कारण वहां मांग घटी है और भारत से शिल्प निर्यात भी कम हुआ है। ऐसी दिक्कतों से निपटने का सबसे अच्छा तरीक़ा निर्यात के नए बाज़ार तलाशना है ताकि एक क्षेत्र में मांग ठहरने या कम होने पर दूसरे क्षेत्र से उसकी भरपाई हो सके। सरकार के इसके लिए नए देशों में शिल्प मेले कराने चाहिए या दूसरे माध्यमों से भारतीय शिल्प का प्रचार करना चाहिए ताकि निर्यात बढ़ाने के लिए हमें नए बाज़ार मिल सकें।

हाल ही में उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद और वाराणसी जैसे शहरों को टाउन ऑफ एक्सपोर्ट एक्सीलेंस यानी निर्यात उत्कृष्टता के शहर की श्रेणी में रखा गया है। ज़ाहिर है, इससे मुरादाबाद के मशहूर पीतल उद्योग और वाराणसी में रेशमी साड़ी के उद्योग को बढ़ावा मिलेगा तथा उनके शिल्पकारों को भी मदद मिलेगी। पूरे देश नियमित अंतराल पर ऐसे हस्तशिल्प और विशेषकर ग्रामीण शिल्प के केंद्रों को तलाश कर उत्कृष्ट शहर का दर्जा दिया जाना चाहिए। इससे ख़त्म हो रही या कम चर्चित शिल्पकलाओं को अगले कुछ वर्षों में नया जीवन मिलेगा और शिल्पियों को रोज़गार बढ़ेगी तथा आय मिलेगा।

पश्मीना शॉल

जम्मू और कश्मीर की पश्मीना शॉल समूचे विश्व में प्रसिद्ध है। इसे पालतू चंगथांगी बकरियों के कच्चे बिना काते हुए ऊन से बनाया जाता है। यह शॉल पतला व बारीक होता है और ओढ़ने वाले को पर्याप्त गर्माहट देता है। इस गर्म शॉल को बनाते समय ऊनी कपड़े को एक विस्तृत प्रक्रिया के माध्यम से एक महीन शॉल में बदल दिया जाता है और यह एक विशेष काम है क्योंकि हर कदम पर कोमलता बनाए रखनी होती है। आमतौर पर इसे तीन पैटर्न में बुना जाता है, टवील या साडे बुनाई, लोकप्रिय हीरा या चासम-ए-बुलबुलऔर विशेष हेरिंगबोन शैली या गदा कोंड। पश्मीना शॉल की गणना भारत के सबसे प्रसिद्ध पारंपरिक शिल्पों में की जाती है।

ग्रामीण पर्यटन :- सरकार पिछले कुछ समय से ग्रामीण पर्यटन पर जोर दे रही है और कॉरपोरेट क्षेत्र की नजर भी इस पर पड़ी है। ग्रामीण पर्यटन के तहत पर्यटकों को किसी क्षेत्र विशेष की पारंपरिक जीवनशैली, पारंपरिक खानपान, रीति-रिवाजों और संस्कृति से परिचित कराया जाता है। यदि इसमें उस क्षेत्र के शिल्प पर विशेष जोर दिया जाए और कम से कम एक दिन या शाम गाँवों में शिल्पियों के कामकाज और उत्पादों को दिखाने पर दिया जाए तो शिल्पियों की आय बढ़ेगी और उनकी कला का प्रचार भी होगा, जिसका परिणाम बेहतर कारोबार और कमाई में नजर आएगा।

तकनीक का पकड़ें दामन :- मगर शिल्पियों को अपना कारोबार और आय बढ़ानी हैं तो केवल सरकार के प्रयासों के भरोसे बैठना सही नहीं होगा। सरकार विभिन्न कार्यक्रमों और कार्यशालाओं के ज़रिये दस्तकारों को नई प्रौद्योगिकी सिखाने का भरसक प्रयत्न कर रही है मगर उसका इंतज़ार करने के बजाय पहला मौक़ा मिलते ही अपने काम के लिए ज़रूरी तकनीक और दूसरे हुनर सीखना चाहिए। इससे उनके उत्पादों की गुणवत्ता, डिज़ाइन और तादाद में इज़ाफा होगा। इससे उनकी आय भी बढ़ेगी और उनके उत्पादों का ब्रांड भी तैयार होगा।

एमएसएमई और क्लस्टर :- शिल्पकार यदि अकेला काम करे तो बिचौलियों के हाथों उसका शोषण होने का डर ज़्यादा होता है। उसके बजाय 40-50 शिल्पियों के क्लस्टर या एमएसएमई के ज़रिये काम करना बेहतर होगा। इससे उत्पादन और आय बढ़ते हैं तथा अधिक मांग वाले बाज़ार तक पहुंच बन पाती है।

ई-कॉमर्स का इस्तेमाल :- ई-कॉमर्स की पहुँच बढ़ती जा रही है और नए अध्ययनों के मुताबिक अब भारत के छोटे शहरों ही नहीं बल्कि कस्बों में भी इन प्लेटफॉर्मों पर जमकर खरीदारी की जा रही है। ऐसे में देसी बिक्री और निर्यात के लिए ई-कॉमर्स बड़ा सहारा बन सकते हैं। यदि सरकार किसी नीति या अभियान के तहत हस्तशिल्प निर्यातकों और विनिर्माताओं को ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म पर पहुँचने में मदद करे तो इनकी बिक्री कई गुना बढ़ सकती है, जिसका फायदा अंत में शिल्पियों को ही मिलेगा। कई छोटे ब्रांड और ई-कॉमर्स कंपनियां शिल्पकारों को अपने प्लेटफॉर्म पर जगह देने के लिए अलग से कोशिश करते हैं, जिनका फ़ायदा इन शिल्पियों को उठाना चाहिए।

नीतियों में मिले ज़्यादा तवज्जो :- समस्या यह है कि शिल्पियों को अक्सर मामूली कारीगर मानकर हेय दृष्टि से देखा जाता है और सरकारी नीतियों में भी ऐसे छोटे शिल्पकारों को अनदेखा कर दिया जाता है। यदि सरकारी नीतियों में शिल्प क्लस्टरों को जगह मिले तो उनमें निवेश भी बढ़ेगा और रोज़गार, कारोबार तथा आय में भी इज़ाफा होगा।

शिल्पकारों के सामने समस्याएं हैं तो समाधान के रास्ते भी हैं। मगर हमें उनके प्रति अपनी दृष्टि बदलनी होगी। नवाचार और समावेशन पर चर्चा के दौरान अक्सर अनौपचारिक क्षेत्र को नज़रअंदाज कर दिया जाता है। बंजारे, लुहार, कुम्हार जैसे सामाजिक रूप से हाशिये पर पड़े समुदाय अक्सर इसी अनौपचारिक अर्थव्यवस्था में काम करते हैं और देश में कामगारों में उनकी संख्या 70 फीसदी से भी ज्यादा है। रोज़गार, आय और विस्तार की सबसे अधिक संभावना भी इन्हीं में है। हमें इनमें खाद-पानी डालना होगा ताकि रोज़गार या नौकरियों की कमी का रोना रोने के बजाय समाज का हरेक तबका परिवार चलाने के योग्य बन सके और देश की प्रगति तथा राजस्व में योगदान कर सके। ❑

हथकरघा और हस्तशिल्प कारीगरों के लिए ई-कॉमर्स पोर्टल

वस्त्र मंत्रालय ने बिचौलियों की भूमिका समाप्त करते हुए 35 लाख से अधिक हथकरघा बुनकरों और 27 लाख हस्तशिल्प कारीगरों के उत्पाद सीधे उपभोक्ताओं को उपलब्ध कराने के लिए हस्तशिल्प और हथकरघा क्षेत्र के लिए ई-कॉमर्स पोर्टल बनाया है। केंद्रीय वस्त्र, उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण तथा वाणिज्य और उद्योग मंत्री श्री पीयूष गोयल ने 22 अप्रैल, 2023 को गुजरात में पोर्टल लॉन्च किया। इस वर्चुअल भारतीय स्टोर के माध्यम से कारीगरों को कीमतों में हेरफेर करने वाले बिचौलियों के बिना उचित पारिश्रमिक मिल सकेगा। शहर में रहने वाले खरीददार सीधे शत-प्रतिशत प्रामाणिक और सर्वोत्तम हस्तशिल्प उत्पाद खरीद सकेंगे।

भारतीय हस्तनिर्मित पोर्टल – ये पोर्टल वस्त्र, गृह सज्जा, आभूषणों, अन्य साजों-सामान सहित उत्पादों की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करता है। इसके सभी उत्पाद कुशल कारीगरों द्वारा हस्तनिर्मित हैं। ये भारत की विविध सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करते हैं। पोर्टल पर बेचे जाने वाले कई उत्पाद पर्यावरण अनुकूल और टिकाऊ सामग्री का उपयोग करके बनाए गए हैं। ये पर्यावरण हितैषी लोगों के लिए बेहतरीन विकल्प है। यह भारत में हस्तनिर्मित सभी वस्तुओं के लिए वनस्टॉप शॉप है और भारतीय कारीगरों और उनके शिल्प को खोजने और उनका समर्थन करने का उत्कृष्ट माध्यम है। पोर्टल कुल 62 लाख बुनकरों और कारीगरों को भविष्य के ई-उद्यमी बनने का अवसर भी प्रदान करेगा।

Elite Academy For Education & Training Pvt. Ltd. ★ Delhi ★

पोर्टल की विशेषताएं

- एक प्रामाणिक भारतीय हथकरघा और हस्तकला वर्चुअल स्टोर
- भारतीय कालातीत विरासत की सुगंध
- बाधा रहित खरीदारी के लिए वापसी विकल्पों के साथ मुफ़्त शिपिंग।
- सुचारू लेनदेन अनुभव के लिए सुरक्षित और भुगतान के लिए कई विकल्प।
- इस पोर्टल पर विविध प्रकार के प्रामाणिक विक्रेता पंजीकृत हो सकते हैं, जैसे कारीगर, बुनकर, निर्माता कंपनियां, स्वयं सहायता समूह, सहकारी समितियां आदि।
- विक्रेताओं को कमीशन रहित पूर्ण लाभ।
- बिचौलियों का कोई हस्तक्षेप नहीं जिससे भारतीय शिल्पकारों की क्षीण स्थिति में सुधार सुनिश्चित हो सके।
- सुचारू ऑर्डर प्रोसेसिंग के लिए कई लॉजिस्टिक पार्टनरों के साथ एकीकरण।
- 'व्यापार करने में आसानी' सुनिश्चित करने के लिए पंजीकरण से ऑर्डर पूरा होने तक विक्रेताओं की मुफ्त सहायता।
- कारीगरों/बुनकरों को एक साझा मंच के माध्यम से सीधे खरीदारों से जोड़ा जाएगा।
- टोल फ्री ग्राहक सहायता – 18001-216-216

मध्यम वर्ग के लिए जीवन

मध्यम वर्ग भारतीय अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जो समाज की रीढ़ के रूप में कार्य करता है और आर्थिक विकास और स्थिरता में योगदान देता है। पिछले नौ वर्षों के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा उठाए गए निर्णायक कदमों से मध्यम वर्ग को काफी फायदा हुआ है। यह मुख्य रूप से प्रधानमंत्री का मध्यम वर्ग के प्रति निष्ठा और जीवन की सुलभता के लिए उनके दृष्टिकोण से संभव हुआ है। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व वाली सरकार ने मध्यम वर्ग को समर्पित अनेक पहल शुरू की, जिसमें सस्ती दवाओं और उपकरणों की आसान उपलब्धता, शिक्षा को अधिक सुलभ बनाने के लिए सस्ता ऋण, कम ब्याज वाले व्यक्तिगत ऋण, सुविधाजनक और सस्ती यात्रा के लिए मेट्रो और वायुमार्ग का विस्तार और कम लागत वाली इंटरनेट सेवाएं प्रदान करना शामिल है।

इसलिए मोदी सरकार ने मध्यम वर्ग पर कर के बोझ को कम करने का लक्ष्य रखा है, जिसके परिणामस्वरूप उनके हाथों में अधिक व्यय योग्य आय है। इन सुधारों के प्रत्यक्ष परिणाम के रूप में, भारतीय मध्यम वर्ग की विशाल क्षमता सामने आई है, जिसमें अनेक अवसर दरवाजे पर दस्तक दे रहे हैं।

फिट मध्यम वर्ग के लिए स्वस्थ जीवन

प्रधानमंत्री मोदी की सरकार ने मध्यम वर्ग के लिए किफायती स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए विभिन्न पहल शुरू की हैं। प्रधानमंत्री मोदी के सभी के लिए सस्ती और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा के मिशन के अनुरूप, 2017 में कोरोनरी स्टेंट और घुटने के प्रत्यारोपण की कीमत पर एक सीमा रखी गई।

लो-कॉस्ट फार्मा: प्रधानमंत्री भारतीय जनऔषधि परियोजना (पीएमबीजेपी)

2014-15 से जनवरी 2023 के बीच जन औषधि केंद्रों में 90 गुना वृद्धि

पीएमबीजेपी दवाओं की कीमत बाजार में उपलब्ध दवाओं की तुलना में 50% से 90% कम है

पिछले आठ वर्षों में लगभग ₹ 18,000 करोड़ की बचत हुई

दुनिया का सबसे बड़ा स्वास्थ्य बीमा कार्यक्रम: आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना

करीब 18 करोड़
परिवारों को मुआवजा दिया गया

₹ 50,400 करोड़
अस्पताल में प्रवेश के लिए मौद्रिक लाभ

4.3 करोड़
अधिकृत अस्पतालों में प्रवेश

26,000 से अधिक
सूचीबद्ध अस्पताल

आयुष्मान भारत और जन औषधि केन्द्रों ने मिलकर गरीब और मध्यम वर्ग के रोगियों को स्वास्थ्य देखभाल व्यय में लगभग ₹ 1 लाख करोड़ बचाने में मदद की

बेहतर अवसरों के लिए शिक्षा में निवेश

मोदी सरकार ने पब्लिक स्कूलों और कॉलेजों के लिए अनुदान बढ़ाकर, वित्तीय सहायता कार्यक्रमों का विस्तार करके और उच्च शिक्षा प्राप्त करने के इच्छुक छात्रों के लिए कम ब्याज दर वाले ऋण प्रदान करके शिक्षा को और अधिक किफायती बनाने के लिए विभिन्न नीतियों को लागू किया है। जुलाई 2020 में घोषित राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) ने भारत की शिक्षा प्रणाली को एक नई दिशा दी। इसने शिक्षा क्षेत्र के लिए नए मानक स्थापित किए, सरकार ने अपना ध्यान स्कूलों की स्थापना से शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करने की ओर केंद्रित किया, जो छात्रों को भविष्य के लिए तैयार करता है।

शिक्षा बन रही सुलभ : कम ब्याज वाले ऋण के माध्यम से फाइनेंसिंग

बचत ₹ 1.84 लाख से अधिक

- 5 साल के लिए ₹ 10 लाख के लोन पर ब्याज की दर
- देय ऋण राशि (रुपये में)

मई 2014	मई 2022	छात्रों के लिए बचत
₹ 14,19,540	₹ 12,35,340	₹ 1,84,200
14.75%	8.65%	6.10%

प्रधानमंत्री मोदी हिमाचल प्रदेश के ऊना से दिल्ली के लिए वंदे भारत एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाकर रवाना करते हुए।

> "समृद्ध और विकसित भारत के सपनों को पूरा करने के लिए मध्यम वर्ग एक बहुत बड़ी ताकत है। जिस प्रकार भारत की युवा शक्ति भारत की विशेष शक्ति है, उसी प्रकार भारत का बढ़ता मध्यम वर्ग भी इसकी बहुत बड़ी शक्ति है। हमारी सरकार ने मध्यम वर्ग को सशक्त करने के लिए बीते सालों में कई फैसले लिए हैं और Ease of Living को सुनिश्चित किया है।
>
> - प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी"

मध्यम वर्ग को सामाजिक सुरक्षा

मोदी सरकार द्वारा शुरू की गई योजनाओं जैसे प्रधानमंत्री आवास योजना-शहरी (पीएमएवाई-यू) के तहत क्रेडिट लिंक्ड सब्सिडी स्कीम (सीएलएसएस) और किफायती व मध्यम-आय आवास परियोजनाओं के लिए विशेष विंडो (एसडब्ल्यूएएमआईएच) ने मध्यम वर्ग के अपना घर बनाने के सपने को पूरा करना आसान बनाया है।

हुआ सुगम

किराएदार से मकान मालिक बनता मध्यम वर्ग

प्रधानमंत्री आवास योजना-शहरी: सीएलएसएस

होम लोन का बोझ

₹48,000 करोड़

कम हुआ

6.15 लाख

मध्यम आय वर्ग के लाभार्थियों ने सब्सिडी का लाभ उठाया

किफायती और मध्यम आय वाली आवासीय योजना के लिए विशेष विंडो

2019 से 30 टियर 1 और टियर 2 शहरों में **20,500** से अधिक घरों का निर्माण पूरा हुआ

अगले तीन वर्षों में 81,000 घर बनाने का लक्ष्य

मोदी प्रशासन ने ब्याज दरों को कम करने के उद्देश्य से नीतियों को लागू किया है, इस प्रकार क़र्ज़ लेना आसान बनाकर आर्थिक विकास को प्रोत्साहित किया है।

ब्याज दरों में बड़ी गिरावट: उपभोक्ताओं की जीत

गृह ऋण: आरओआई में **3.65% की गिरावट** के कारण प्रत्येक ऋण पर लगभग ₹82,990 प्रति वर्ष की बचत।

2014 और 2022 के बीच कार ऋण की ब्याज दरों में **3% की कमी**

ब्याज दर में गिरावट से ऑटो और गृह ऋण (व्यक्तिगत) को बढ़ावा

(% ऋण का लाभ उठाया गया)

14.9% दिसंबर 2021

20.2% दिसंबर 2022

मध्यम वर्ग के हाथ में अधिक पैसा

केंद्रीय बजट 2023-24 ने बढ़ाई मध्यम वर्ग के लिए रियायतें

पूर्ण कर छूट
₹ 7 लाख तक की कुल आय पर

₹ 50,000 की मानक कटौती
वेतनभोगी व्यक्तियों के लिए

सरचार्ज की दर 37% से घटाकर 25% की गई
₹2 करोड़ से ऊपर की आय पर

2013 और 2022 के बीच प्रभावी आयकर दर में 4% से अधिक गिरावट

मध्यम वर्ग के लिए बढ़े उद्यमी अवसर

मेक इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत, मोदी सरकार के इन दो मंत्रों ने रोजगार सृजन को बढ़ावा दिया है। सरकार अधिक नौकरियां पैदा करने के लिए भारत के उद्यमशीलता के माहौल पर जोर दे रही है, जिसका बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा है। मध्यम वर्ग अब नौकरी मांगने वाले से नौकरी देने वाला बन गया है।

आत्मनिर्भर भारत: भारत को आत्मनिर्भर बनाना

आपातकालीन क्रेडिट लाइन गारंटी योजना से 1.3 करोड़ से अधिक MSME लाभान्वित हुए।

गारंटी कवर में ₹50,000 करोड़ का इज़ाफा

Elite Academy For Education & Training Pvt. Ltd. ★ Delhi ★

विनिर्माण क्षेत्र में बढ़ रही नौकरियां

तकनीक से मध्यम वर्ग सशक्त

भारत को डिजिटल रूप से तैयार करने पर मोदी प्रशासन का ध्यान आपूर्ति और मांग दोनों क्षेत्रों में हस्तक्षेप स्पष्ट है। यह मोबाइल फोन के बढ़ते कवरेज, भीतरी इलाकों में नेटवर्क कनेक्टिविटी और मोबाइल डेटा की कम कीमतों में दिखता है। मोबाइल फोन, लैपटॉप और टैबलेट जैसे डिजिटल उपकरणों के घटक भागों की लागत को कम करने के उपायों ने सस्ती कीमतों और बेहतर पहुंच की अनुमति दी है।

बजट पर कनेक्टिविटी: सस्ता, बेहतर इंटरनेट समाधान

दुनिया का सबसे सस्ता इंटरनेट डेटा: पिछले नौ सालों में इंटरनेट डेटा की कीमत 25 गुना कम हुई

इंटरनेट कनेक्शन में **232% की वृद्धि**

ब्रॉडबैंड कनेक्शन में **1,238% की वृद्धि**

प्रति वायरलेस डेटा सब्सक्राइबर औसत मासिक डेटा खपत में **266 गुना वृद्धि**

*सभी डेटा 2014 और 2022 के बीच वृद्धि के संदर्भ में

ज़ाहिर है, मोदी सरकार ने मध्यम वर्ग को समर्थन और सशक्त बनाने के उद्देश्य से विभिन्न नीतियों और पहलों को लागू किया है। इन प्रयासों ने प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से मध्यम वर्ग के हाथों में पैसा बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया है। **पिछले नौ वर्षों में, सरकार ने स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा, आवास और वित्तीय संसाधनों तक अधिक पहुंच प्रदान करने के साथ-साथ उद्यमिता, नवाचार और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने का प्रयास किया है।** मध्यम वर्ग के लोगों ने बड़े पैमाने पर बचत की है और कम करों और कम ब्याज दरों के कारण उनके पास व्यय योग्य आय में वृद्धि हुई है। जीएसटी के बाद घरेलू सामान और रेस्टोरेंट का खाना सस्ता हो गया है।

2014 के बाद से, प्रधानमंत्री मोदी के बुनियादी ढांचे पर जोर देने से मध्यम वर्ग के घरेलू खर्च में कमी आई है। UDAN योजना ने हवाई यात्रा को सस्ता कर दिया है और इसके परिणामस्वरूप मध्यम वर्ग के परिवार अब ट्रेनों को तरजीह नहीं देते हैं। इसलिए लोग आराम का त्याग किए बिना सार्वजनिक परिवहन पर स्विच कर रहे हैं और पैसे बचा रहे हैं। इस प्रकार, मध्यम वर्ग में निवेश करके, प्रधानमंत्री मोदी ने व्यक्तिगत विकास और सफलता के अधिक अवसरों के साथ, मजबूत और अधिक समृद्ध समुदायों के निर्माण में मदद की है।

CBC 22201/13/0011/2324

हस्तशिल्प विकास कार्यक्रम

-परमेश्वर लाल पोद्दार

भारत सरकार ने हस्तशिल्प क्षेत्र की बाधाओं को गंभीरता से समाप्त करने का प्रयास किया है और इस क्षेत्र हेतु राष्ट्रीय हस्तशिल्प विकास कार्यक्रम चलाया है। हस्तशिल्प हमारी अर्थव्यवस्था के असंगठित क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह मुख्य रूप से एक ग्रामीण आधारित क्रियाकलाप है जिसकी पहुँच पिछड़े और दुर्गम क्षेत्रों में भी है।

हस्तशिल्प हमारी अर्थव्यवस्था के असंगठित क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह मुख्य रूप से एक ग्रामीण आधारित क्रियाकलाप है जिसकी पहुँच पिछड़े और दुर्गम क्षेत्रों में भी है। मूल रूप से, हस्तशिल्प ग्रामीण क्षेत्रों में एक अंशकालिक गतिविधि के रूप में शुरू हुआ था, हालांकि यह वर्षों से बाज़ार की महत्वपूर्ण मांग के कारण अब एक समृद्ध आर्थिक गतिविधि में बदल गया है। हस्तशिल्प न केवल लाखों कारीगरों को मौजूदा समय में रोज़गार उपलब्ध करवा रहा है, बल्कि इस क्षेत्र में बड़ी संख्या में नए लोगों के लिए भी संभावना है। हस्तशिल्प से वर्तमान में लगभग 70 लाख कारीगर जुड़े हुए हैं जिसमें बड़ी संख्या में महिलाएं और कमज़ोर वर्ग के लोग सम्मिलित हैं। हस्तशिल्प क्षेत्र रोज़गार सृजन के अलावा निर्यात में भी काफी योगदान दे रहा है। अपनी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करते हुए यह देश के लिए पर्याप्त विदेशी मुद्रा अर्जित करता है (चित्र-1)। इस क्षेत्र को अपनी असंगठित प्रकृति के साथ-साथ अतिरिक्त बाधाओं जैसे जागरूकता की कमी, पूंजी और नई तकनीक तक खराब पहुँच, बाज़ार की जानकारी की कमी और खराब संस्थागत ढांचे के कारण नुकसान उठाना पड़ रहा है। भारत में बड़ी संख्या में कारीगर उपलब्ध होने के बावजूद विश्व निर्यात में भागीदारी कम है। हस्तशिल्प क्षेत्र में संभावित छुपे हुये अवसरों की अब भी तलाश की जा रही है।

भारत सरकार ने हस्तशिल्प क्षेत्र की बाधाओं को गंभीरता

लेखक ग्रामीण विकास और बैंकिंग मामलों के विशेषज्ञ हैं। वर्तमान में नाबार्ड के पुनर्वित्त विभाग, प्रधान कार्यालय, मुंबई में कार्यरत हैं।
ई-मेल : poddarparmeshwar@gmail.com

Elite Academy For Education & Training Pvt. Ltd. ★ Delhi ★

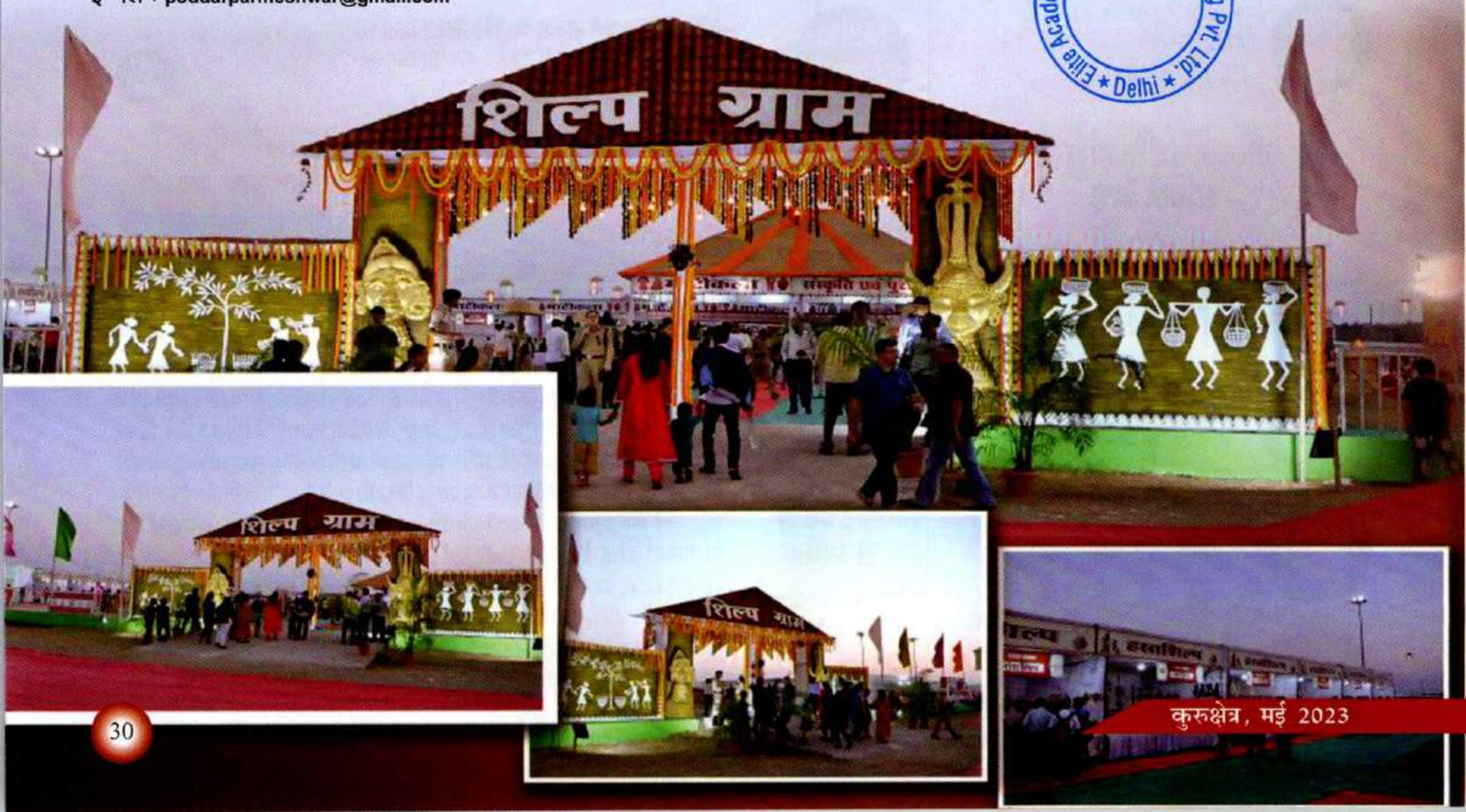

से समाप्त करने का प्रयास किया है और इस क्षेत्र हेतु राष्ट्रीय हस्तशिल्प विकास कार्यक्रम चलाया है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत हस्तशिल्प क्षेत्र के विकास हेतु निम्नवत सहयोग दिया जा रहा हैः-

विपणन समर्थन और सेवाएं

हस्तशिल्प क्षेत्र के विकास में विपणन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। देश भर के कारीगरों को व्यापार विकास और आय सृजन के पर्याप्त अवसर प्रदान करने वाले विभिन्न विपणन मंच प्रदान करने का प्रयास किया जाता है। भारत एक विशाल देश है और घरेलू बाजार अपने आप में हस्तशिल्प वस्तुओं के लिए एक अत्यधिक संभावित बाज़ार है। यह दुनिया की सबसे बड़ी विकासशील अर्थव्यवस्था है, हालांकि दुनिया के निर्यात आंकड़ों में इसका योगदान बहुत कम है। विपणन समर्थन कार्यक्रम के माध्यम से हस्तशिल्प उत्पादों की बिक्री और निर्यात के आंकड़ों को बढ़ाया जाएगा। भारत के हस्तशिल्प क्षेत्र हेतु घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय दोनों बाज़ारों पर ध्यान दिया जा रहा है। विभिन्न प्रदर्शनियों और मेलों, लाइव प्रदर्शनों, क्रेता-विक्रेता मीट, ब्रांड प्रचार कार्यक्रमों, सेमिनारों, मेलों, विशिष्ट बाजार निर्माण आदि पर ध्यान केंद्रित करने के साथ-साथ कारीगरों को संवेदनशील बनाने के प्रयास किए जा रहे हैं और अंतरराष्ट्रीय गुणवत्ता मानकों और पैकेजिंग, नैतिक और पर्यावरण आश्वासन आदि पर संगोष्ठी और कार्यशालाओं के माध्यम से निर्यातकों को जागरूक किया जा रहा है। अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार और फैशन प्रवृत्तियों का विश्लेषण करने और समझने के लिए फैशन शो/स्टैंडअलोन शो भी आयोजित किए जा रहे हैं ताकि कारीगर बड़े स्तर के मंचों का पूरी तरह से लाभ उठा सकें।

हस्तशिल्प उत्पादों के प्रचार व ब्रांड बनाने हेतु प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक और सोशल मीडिया के माध्यम से प्रचार हेतु सहयोग दिया जा रहा है। इसके अलावा डिजिटल विपणन, वर्चुअल मंच पर मेले/प्रदर्शनी/कार्यक्रम हेतु भी सहयोग प्रदान किया जा रहा है।

हस्तशिल्प क्षेत्र में कौशल विकास कार्यक्रम

हस्तशिल्प अपने सौंदर्यशास्त्र, संबद्ध पारंपरिक मूल्यों, विशिष्टता, गुणवत्ता और शिल्प कौशल के लिए जाने जाते हैं। पारंपरिक ज्ञान और शिल्प अभ्यास आमतौर पर एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को प्राकृतिक शिक्षा के माध्यम से हस्तांतरित किए जाते हैं। हालांकि, नए उपकरणों और प्रौद्योगिकी के आगमन के साथ, शिल्प सीखने की प्रक्रिया नाटकीय रूप से बदल गई है। मानकीकृत उत्पादन प्रक्रियाएं, कुशल जनशक्ति, हस्तकला उत्पादों के लिए डिज़ाइन डेटाबेस, त्वरित और कुशल प्रोटोटाइप, संचार कौशल और अन्य सॉफ्ट स्किल्स हमेशा बदलते हस्तशिल्प क्षेत्र के लिए अनिवार्य आवश्यकताएं बन गए हैं। इन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उप-योजना 'हस्तशिल्प क्षेत्र में कौशल विकास' की संकल्पना की गई है और इसके निम्नलिखित चार घटक हैः

डिज़ाइन और प्रौद्योगिकी विकास कार्यशाला

यह बाज़ार की वर्तमान डिज़ाइन आवश्यकताओं को पूरा करने पर केंद्रित है और इसका उद्देश्य कारीगरों के मौजूदा कौशल का उपयोग करके हस्तशिल्प क्षेत्र की वर्तमान आवश्यकताओं के अनुसार नए डिजाइन/प्रोटोटाइप विकसित करना है।

गुरु-शिष्य हस्तशिल्प प्रशिक्षण कार्यक्रम

इस योजना का उद्देश्य कौशल अंतर को पाटने और बाजार की मांग को पूरा करने के लिए पारंपरिक शिल्प ज्ञान

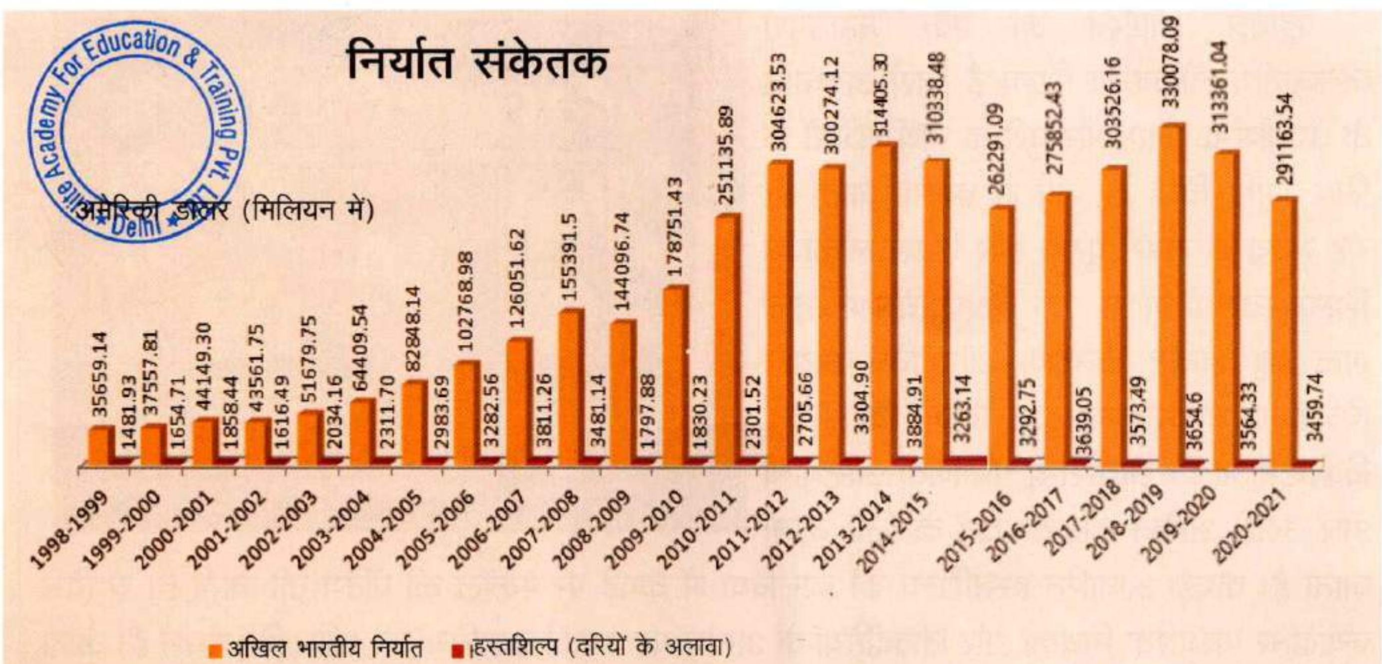

(स्रोतः विकास आयुक्त कार्यालय (हस्तशिल्प), वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार)

को मास्टर शिल्पकार (गुरु) से नई पीढ़ी के कारीगर (शिष्य) तक स्थानांतरित करना है। इसमें तकनीकी और सॉफ्ट स्किल प्रशिक्षण प्रदान करके हस्तशिल्प क्षेत्र में एक प्रशिक्षित कार्यबल तैयार किया जा रहा है।

व्यापक कौशल उन्नयन कार्यक्रम

योजना का उद्देश्य कौशल अंतराल को पाटने, हस्तशिल्प क्षेत्र में पारंपरिक शिल्प की सदियों पुरानी प्रथा को पुनर्जीवित करने और राष्ट्रीय कौशल योग्यता ढांचे के आधार पर मांग आधारित और स्वरोजगार उन्मुख प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए उद्योग के प्रयासों को पूरक बनाना है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत चिह्नित संस्थानों में औपचारिक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। इस कार्यक्रम का उद्देश्य कारीगरों के कौशल उन्नयन, डिजाइन, नवाचार और सॉफ्ट कौशल में व्यापक विकास करना है।

बेहतर टूलकिट वितरण कार्यक्रम

'बेहतर टूलकिट' और 'कुशल हाथ' हस्तकला के दो रत्न हैं जो कारीगरों की उत्पादकता बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण हैं। बेहतर टूलकिट उत्पाद की गुणवत्ता और कारीगर की उत्पादकता को बढ़ाते हैं। इसके अलावा, वे बड़े पैमाने पर समान गुणवत्ता वाले उत्पादों के उत्पादन में हस्तशिल्प कारीगरों की सहायता करते हैं। अत्यधिक प्रतिस्पर्धी अंतरराष्ट्रीय हस्तशिल्प बाजार में अस्तित्व के लिए उत्पादन का स्केल-अप और गुणवत्ता की एकरूपता प्रमुख तत्व हैं। इन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए शिल्पकारों के बीच बेहतर टूलकिट वितरण का प्रावधान किया गया है।

अम्बेडकर हस्तशिल्प विकास योजना

अम्बेडकर हस्तशिल्प विकास योजना एक क्लस्टर विशिष्ट योजना है। इस योजना में कारीगरों के सतत विकास के लिए आवश्यकता आधारित क्लस्टर विशिष्ट दृष्टिकोण की परिकल्पना की गई है। हस्तशिल्प समूहों की भौगोलिक पहचान में तीन किलोमीटर के दायरे या व्यास के भीतर कुछ गाँव या नगरपालिका क्षेत्र शामिल हैं। शिल्प समूहों में कारीगर एकल शिल्प या एकाधिक शिल्प के उत्पादों का निर्माण कर सकते हैं। पहचान किए गए क्लस्टर को पाँच साल की अवधि के लिए वित्तीय, तकनीकी और सामाजिक हस्तक्षेप के रूप में समर्थन दिया जाएगा। वर्तमान में, हस्तशिल्प क्षेत्र रोजगार सृजन और निर्यात की दिशा में काफी योगदान दे रहा है, लेकिन इस क्षेत्र को अपनी असंगठित प्रकृति के साथ-साथ शिक्षा की कमी, पूंजी और नई तकनीकों के लिए खराब जोखिम, बाजार की जानकारी की कमी और खराब संस्थागत ढांचे के कारण नुकसान उठाना पड़ा है। इन बाधाओं को दूर करने के लिए, केंद्रीय योजना के रूप में अम्बेडकर हस्तशिल्प विकास योजना (एएचवीवाई) 2001-02 में शुरू की गई। इस योजना का उद्देश्य सामुदायिक सशक्तीकरण के माध्यम से शिल्प समूहों को उत्कृष्टता के केंद्र के रूप में विकसित करना और पूरे देश में हस्तशिल्प कारीगरों का सतत विकास, सामाजिक उत्थान सुनिश्चित करना है। यह योजना क्लस्टर कारीगरों को सामाजिक और आर्थिक रूप से सशक्त बनाएगी। यह योजना रोजगार सृजन, तकनीकी उन्नयन, डिजाइन

पट्टचित्र

पट्टचित्र ओडिशा का एक महत्वपूर्ण जनजातीय लोककला शिल्प है जिसे अनुष्ठान के उपयोग के लिए और पुरी के तीर्थयात्रियों के लिए स्मृति चिन्ह के रूप में बनाया जाता है। यह राज्य के सबसे पुराने और सबसे लोकप्रिय शिल्प स्वरूपों में से एक है। पट्टचित्र संस्कृत शब्द पट्ट अर्थात् कैनवास और चित्र अर्थात् चित्रकला से व्युत्पन्न हुआ है जो कि अपनी विशिष्टताओं के साथ-साथ पौराणिक आख्यानों और उसमें अंकित लोककथाओं के लिए जाना जाता है। कपड़ा आधारित हस्तशिल्प की इस विधा में कपड़े पर स्क्रॉल की पेंटिंग की जाती है। ये चित्र ज्यादातर पारंपरिक मिथकों और किंवदंतियों के आधार पर उनकी कहानियों को परिभाषित करते हैं। कला की इस पारंपरिक शैली में प्राकृतिक रंगों का उपयोग किया जाता है।

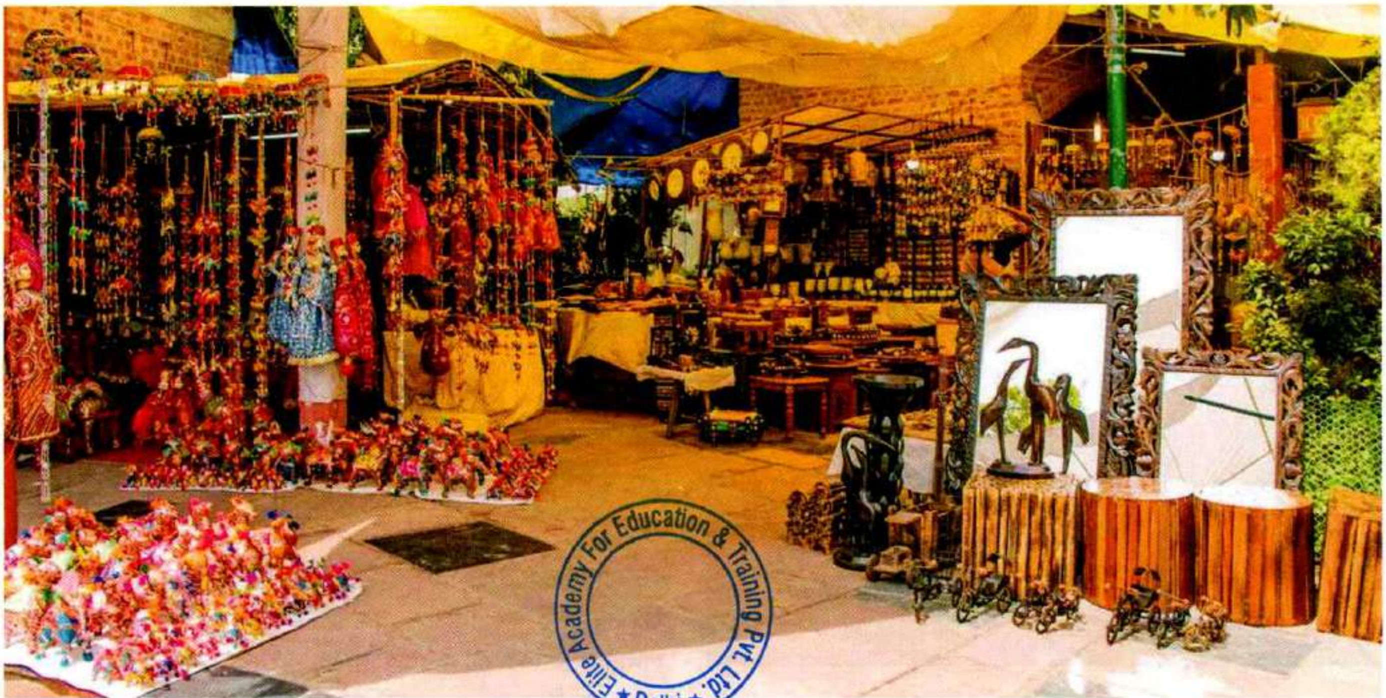

Elite Academy For Education & Training Pvt. Ltd. ★Delhi★

इनपुट के माध्यम से प्रतिस्पर्धात्मकता, विपणन समर्थन कार्यक्रम, ब्रांड प्रचार, संसाधन जुटाना और अन्य आवश्यकता आधारित गतिविधियों को सुनिश्चित करेगी।

कारीगरों को प्रत्यक्ष लाभ

शिल्पकारों को बेहतर जीवनयापन, आसान ऋण तक पहुँच और उनके हुनर को सम्मानित करने हेतु भी कई प्रयास किए गए हैं। इसके तहत निमन्वत कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं:-

वृद्धावस्था में कारीगरों को सहायता

यह योजना कारीगरों को उनके बुढ़ापे के दौरान समर्थन देने के लिए प्रस्तावित है। यह योजना भारत में हस्तशिल्प क्षेत्र को बढ़ावा देने हेतु लागू की गई है। इस योजना हेतु मास्टर शिल्पकार जो शिल्प गुरु पुरस्कार, राष्ट्रीय पुरस्कार या योग्यता प्रमाणपत्र या राज्य पुरस्कार प्राप्त करते हैं और हस्तशिल्प में असाधारण शिल्प कौशल के कारीगर वित्तीय सहायता के लिए विचार किए जाने के पात्र होंगे। इसके अंतर्गत, सरकार से अधिकतम 5,000/- (पाँच हजार रुपये मात्र) प्रति माह के मासिक भत्ते का प्रावधान है।

ब्याज अनुदान व मार्जिन मनी की सुविधा

इस योजना के माध्यम से हस्तशिल्प कारीगरों के लिए ब्याज अनुदान के साथ बैंक ऋण सुविधा का प्रावधान है। इसके अंतर्गत सभी अनुसूचित बैंकों/राज्य सहकारी बैंकों/क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों से मुद्रा ऋण प्राप्त करने वाले कारीगरों के लिए 6 प्रतिशत ब्याज अनुदान उपलब्ध होगा। मार्जिन मनी की सहायता वित्तीय वर्ष 2018-19 के दौरान प्रस्तावित की गई। कारीगरों को रियायती ऋण की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए मुद्रा ऋण प्राप्त करने वाले कारीगरों को मार्जिन मनी प्रदान की जाएगी। हस्तशिल्प कारीगरों को मुद्रा ऋण के तहत स्वीकृत राशि का 20% अनुदान उनके ऋण खाते में एकमुश्त अनुदान के रूप में प्रदान किया जाएगा, जो 20,000/- रुपये से अधिक नहीं होगा।

हस्तशिल्प कारीगरों के लिए बीमा योजना

प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना और आम आदमी बीमा योजना का उद्देश्य हस्तशिल्प कारीगरों को जीवन बीमा कवर प्रदान करना है। शिल्पकार समय-समय पर निर्धारित शर्तों के अधीन योजनाओं का लाभ लेने के पात्र होंगे।

हस्तशिल्प पुरस्कार

इस योजना के तहत, विकास आयुक्त (हस्तशिल्प) का कार्यालय हस्तशिल्प क्षेत्र के विकास और उसे बढ़ावा देने के लिए उत्कृष्ट मास्टर शिल्पकारों को उनके योगदान को मान्यता देने हेतु हस्तशिल्प क्षेत्र में सर्वोच्च हस्तशिल्प पुरस्कार प्रदान करता है। जीवन में एक बार प्रदान किया जाने वाला यह पुरस्कार उन्हें हमारी पुरानी शिल्प परंपराओं और शिल्प कौशल में उत्कृष्टता को बनाए रखने के लिए प्रोत्साहित करता है। इस प्रकार यह योजना कारीगरों को प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण प्रदान करती है।

> एक देश भौतिक और बौद्धिक दोनों ही दृष्टियों से धन में दरिद्र बना रहता है, यदि वह अपने हस्तशिल्प और अपने उद्योगों का विकास नहीं करता है।
>
> -महात्मा गाँधी

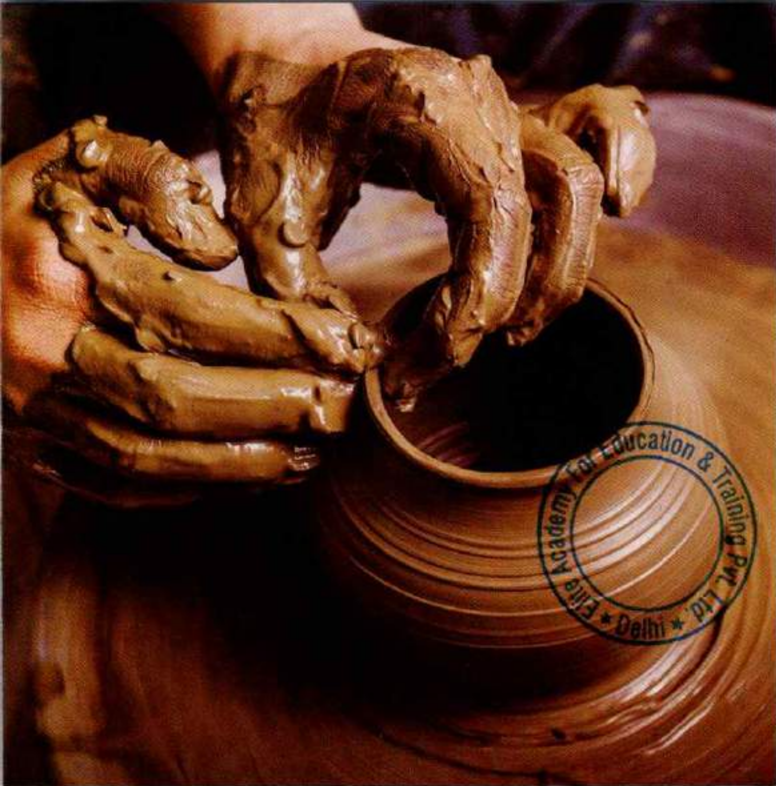

शिल्प गुरु पुरस्कार और रष्ट्रीय पुरस्कार दो श्रेणियों में प्रदान किए जाते हैं।

बुनियादी ढांचा और प्रौद्योगिकी समर्थन

हस्तशिल्प क्षेत्र की प्रमुख बाधाओं में बुनियादी संरचना और नई प्रौद्योगिकी की कमी भी शामिल है। इस कमी को दूर करने हेतु निम्नवत सहयोग दिया जा रहा हैः-

शहरी हाट की स्थापना

इसका उद्देश्य हस्तशिल्प कारीगरों/हथकरघा बुनकरों को प्रत्यक्ष विपणन सुविधाएं प्रदान करने के लिए कस्बों/महानगरीय शहरों में एक स्थायी विपणन अवसंरचना स्थापित करना है। यह उन्हें अपने उत्पादों को व्यापक लक्षित दर्शकों /ग्राहक वर्ग को साल भर बेचने में सक्षम करेगा।

एम्पोरिया

इसके तहत एम्पोरिया की स्थापना के लिए सहायता प्रदान की जाएगी। इन्हें कार्यान्वयन एजेंसियों के अपने/किराए के भवन में व्यावसायिक रूप से व्यवहार्य स्थानों में स्थापित किया जाएगा। इसका मूल उद्देश्य स्थानीय हस्तशिल्प कारीगरों को उनके क्षेत्र में विपणन मंच प्रदान करना है

मार्केटिंग और सोर्सिंग हब

'वन स्टॉप शॉपिंग' की अवधारणा पर व्यावसायिक रूप से व्यवहार्य शहरों/कस्बों आदि में हस्तशिल्प के लिए मार्केटिंग कॉम्प्लेक्स (हब) स्थापित करने का प्रस्ताव है। यह थोक विक्रेताओं/खुदरा विक्रेताओं/उपभोक्ताओं और विदेशी खरीदारों को हस्तशिल्प उत्पादों की पूरी श्रृंखला का प्रदर्शन करके संभावित लक्ष्य खंड तक पहुँचने के लिए एक विपणन मंच प्रदान करेगा।

हस्तशिल्प संग्रहालय

हस्तशिल्प संग्रहालय का उद्देश्य एक ऐसा मंच स्थापित करना है जिसके माध्यम से भारत की पारंपरिक कला और शिल्प को कलाकारों, विद्वानों, डिज़ाइनरों और शिल्प प्रेमियों के बीच लोकप्रिय बनाया जा सके। संग्रहालय का प्राथमिक उद्देश्य शिल्प कौशल और डिज़ाइन या इसके कार्यात्मक पहलुओं में वैचारिक नवाचारों में उत्कृष्टता प्रदर्शित करने वाली वस्तुओं को इकट्ठा करना और संरक्षित करना है। आई.ए. शिल्प/उत्पादों की विस्तृत वैचारिक और ऐतिहासिक जानकारी सहित डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से भी इसे लोकप्रिय बनाएगा।

शिल्प आधारित संसाधन केंद्र

इस केंद्र का उद्देश्य व्यापक हैंडहोल्डिंग के लिए पहचाने गए शिल्प में एकल खिड़की समाधान प्रदान करने के लिए एक संस्थागत तंत्र तैयार करना है। इस केंद्र का लक्ष्य हस्तशिल्प के क्षेत्र में सर्वांगीण विकास करना तथा प्रशिक्षण की सहायता से लुप्तप्राय शिल्पों को पुनर्जीवित करना तथा हस्तशिल्प की निरंतर प्रगति के लिए पारंपरिक एवं गैर-पारंपरिक शिल्पकारों को अधिक से अधिक रोज़गार के अवसर प्रदान करना है। यह केंद्र कच्चे माल की उपलब्धता, आवश्यक प्रौद्योगिकी, कुशल मानव संसाधन और क्लस्टर का विवरण भी प्रदान करेंगे जहां से इन नवीन उत्पादों को प्राप्त/उत्पादित किया जा सकता है। यहाँ कारीगरों और उद्यमियों को तकनीकी और तकनीकी सहायता, विपणन सूचना, उद्यम विकास, सूक्ष्म वित्त गतिविधि, उत्पाद की जानकारी आदि दी जाती है।

सामान्य सुविधा केंद्र

सामान्य सुविधा केंद्र का उद्देश्य पैमाने की अर्थव्यवस्था, मूल्य प्रतिस्पर्धा, गुणवत्ता नियंत्रण, निरंतर आधार पर डिज़ाइन और प्रौद्योगिकी इनपुट का अनुप्रयोग, उत्पाद विविधीकरण का दायरा और उच्च इकाई मूल्य प्राप्ति और विश्व व्यापार संगठन के संगत मानकों का अनुपालन सुनिश्चित करना है। इस तरह की एक सामान्य सुविधा से उत्पादन लागत में महत्वपूर्ण कमी आएगी, उच्च मूल्य वाले उत्पादों की विविध श्रेणी का उत्पादन, नमूना विकास, ऑर्डर निष्पादन में प्रतिक्रिया समय में कमी और अंतिम उत्पादों की उच्च गुणवत्ता सुनिश्चित होगी।

कच्चा माल डिपो

इसका उद्देश्य कारीगरों/उद्यमियों को उचित दर पर गुणवत्तापूर्ण, प्रमाणित और श्रेणीकृत कच्चा माल आसानी से उपलब्ध कराना है।

निर्यातकों/उद्यमियों को प्रौद्योगिकी उन्नयन सहायता

इसका उद्देश्य निर्यातकों/उद्यमियों को तकनीकी उन्नयन सुविधा प्रदान करना है। सुविधा केंद्र उत्पाद, उत्पादकता, गुणवत्ता आदि का समर्थन करने के लिए पैकेजिंग मशीनरी सहित आधुनिक मशीनरी के साथ एक बुनियादी ढांचा होना चाहिए।

परीक्षण प्रयोगशाला

मशीनरी और उपकरण, सपोर्ट फिक्सचर और फर्नीचर, कच्चा माल प्रसंस्करण अनुभाग, निरीक्षण अनुभाग, पैकेजिंग और वेयरहाउसिंग अनुभाग, ज्ञान साझा करने और भविष्य के संदर्भ आदि के लिए मास्टर रूम सहित रखरखाव अनुभाग के प्रावधान के साथ परीक्षण प्रयोगशाला पर्याप्त और पर्याप्त स्थानों में बनाई जाएगी।

शिल्पग्राम

क्राफ्ट विलेज एक आधुनिक समय की अवधारणा है जिसमें शिल्प को बढ़ावा देने और पर्यटन को एक ही स्थान पर लिया जा रहा है। कारीगर एक ही स्थान पर रहते और काम करते हैं और उन्हें अपने उत्पादों को बेचने के लिए अवसर भी प्रदान किया जाता है जिससे आजीविका सुनिश्चित हो सके। शिल्प वस्तुओं का प्रदर्शन और बिक्री यहां की जाती है। इसके अंतर्गत मौजूदा गाँवों में बुनियादी ढांचे में सुधार के लिए सहायता प्रदान की जाएगी, जहां समान शिल्प का अभ्यास करने वाले शिल्पकार पर्याप्त संख्या में रहते हैं और नए गाँवों की स्थापना भी की जाएगी जहां शिल्पकारों का पुनर्वास किया जा सकता है। इसका उद्देश्य उन गाँवों का चयन करना होगा जिन्हें उत्पादों की बिक्री सुनिश्चित करने के लिए किसी पर्यटन सर्किट से जोड़ा जा सकता है। इसके तहत बुनियादी ढांचे के सुधार/निर्माण के लिए धन मुहैया कराया जाएगा जिसमें सड़कें, कारीगरों के घर और उनके वर्कशेड क्षेत्र, सीवरेज, पानी, स्ट्रीट लाइट, फुटपाथ, दुकानें और प्रदर्शन क्षेत्र शामिल होंगे। इन्हें कार्यान्वयन एजेंसी द्वारा किया जाएगा और शिल्पकारों को नए वर्कशेड और प्रदर्शन क्षेत्रों के साथ पुनर्वासित किया जाएगा। प्रदर्शन क्षेत्र स्टॉल के रूप में होंगे जहां कारीगर अपना उत्पाद बेच सकेंगे।

अनुसंधान एवं विकास

किसी भी कला के विकास हेतु समय-समय पर अनुसंधान किया जाना आवश्यक है, अन्यथा उसकी लोकप्रियता समाप्त हो जाती है, परिणामस्वरूप बाज़ार में उसकी मांग खत्म हो जाती है। हस्तशिल्प क्षेत्र को वर्तमान समय में प्रासंगिक बनाए रखने और इसके विकास हेतु अनुसंधान किए जा रहे हैं। इस योजना के तहत, नियोजन उद्देश्यों के लिए उपयुक्त इनपुट उत्पन्न करने के लिए सर्वेक्षण और अध्ययन प्रायोजित/आयोजित किए जाते हैं। साथ ही, हस्तशिल्प क्षेत्र में नवीनतम विकास पर कारीगरों को जागरूक करने के लिए ऑनलाइन और ऑफलाइन मोड में कार्यशाला, संगोष्ठी, सम्मेलन, रेडियो कार्यक्रम आदि आयोजित किए जाते हैं। इसके अंतर्गत विशिष्ट शिल्प का सर्वेक्षण/अध्ययन और शिल्प समूहों और विशिष्ट शिल्प पॉकेट, वर्तमान बाज़ार प्रवृत्ति और स्थिति, मौजूदा निर्यात और भविष्य के निर्यात आदि पर डेटा बेस का मानचित्रण और प्रलेखन, कच्चे माल, प्रौद्योगिकी, डिज़ाइन, सामान्य सुविधाओं आदि की उपलब्धता से संबंधित समस्या, लुप्तप्राय शिल्प, डिज़ाइन, विरासत और पारंपरिक ज्ञान सहित शिल्प की रक्षा के लिए एक तंत्र विकसित करने के लिए संगठनों को वित्तीय सहायता प्रदान की जा रही है।

दरी की बुनाई

दरी एक ऐसा वस्त्र उत्पाद है जिसे जमीन पर बिछाया जाता है। यह बैठने और सजावटी उपयोग दोनों ही काम में लाया जाता है। दरी एक उत्कृष्ट ग्रामीण और पारंपरिक हस्तशिल्प है।मध्य प्रदेश में बनाई जाने वाली दरी राज्य द्वारा उत्पादित दो कालीन किस्मों में से एक होती है। ये मोटे सूती कालीन सर्वश्रेष्ठ भारतीय हस्तशिल्प में से एक हैं। ये पंजा नामक एक तकनीक द्वारा बुने जाते हैं। ये जीवंत रंगों, बोल्ड पैटर्न, पक्षियों और जानवरों के रूपांकनों तथा ज्यामितीय बुनाई सहित लोक डिजाइनों में निर्मित किये जाते हैं।

बजट 2023-24 में हस्तशिल्प विकास हेतु की गई घोषणा

बजट में नव-परिकल्पित प्रधानमंत्री विश्वकर्मा कौशल सम्मान (पीएम-विकास) योजना की घोषणा की गई है जो देश के कारीगरों को उनके उत्पादों की गुणवत्ता, पैमाने और पहुँच में सुधार करने में सक्षम बनाएगी, उन्हें सूक्ष्म, लघु और मध्यम स्तर के उद्यमों (एमएसएमई) की मूल्य श्रृंखला के साथ एकीकृत किया जाएगा। इस योजना में न केवल वित्तीय सहायता शामिल होगी बल्कि उन्नत कौशल प्रशिक्षण, आधुनिक ज्ञान तक पहुँच, डिजिटल तकनीक और कुशल हरित प्रौद्योगिकियाँ, ब्रांड प्रोन्नति, स्थानीय और वैश्विक बाज़ारों के साथ जुड़ाव, डिजिटल भुगतान और सामाजिक सुरक्षा को भी सम्मिलित किया गया है। इससे अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़े वर्ग, महिलाएं और कमजोर वर्ग के लोगों को काफी लाभ होगा।

बजट में यूनिटी मॉल की घोषणा की गई है। राज्यों को उनके स्वयं के ओडीओपी (एक जिला एक उत्पाद), जीआई उत्पाद और अन्य हस्तशिल्प उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए और उनकी बिक्री करने के लिए और शेष राज्यों के ऐसे उत्पादों को स्थान उपलब्ध करवाने के लिए अपनी-अपनी राजधानियों में या सबसे प्रमुख पर्यटन केंद्र पर या उनकी वित्तीय राजधानी में एक यूनिटी मॉल स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। ❑

शिल्पग्राम, उदयपुर

शिल्पकला : आजीविका के साथ पर्यटन का महत्वपूर्ण घटक

Elite Academy For Education & Training Pvt. Ltd. ★ Delhi ★

-डॉ. पीयूष गोयल

गाँवों में बसता भारत आज भी शिल्पकारी की अनूठी कलाओं का संगम अपने में समेटे और पीढ़ी-दर-पीढ़ी अपनी विरासत को संजोए हुए है। पर धीरे-धीरे ग्रामीण अर्थव्यवस्था में पलायन, घटते व्यापार, मांग और आपूर्ति के साथ-साथ उन कलाकारों का भी अभाव दिखाई देने लगा है, जिन्होंने विरासत में इसे पाया था। गाँव की संस्कृति और विरासत को जीवंत रखने के लिए ग्रामीण शिल्प को ग्रामीण पर्यटन से जोड़ने और पर्यटक स्थलों पर 'शिल्पग्राम' की स्थापना की जा रही है।

भारतीय शिल्पकारी का प्रमाण हमें प्राचीन सिंधु घाटी की सभ्यता से दिखाई देता है, जहाँ से मिली वस्तुएं एक परिष्कृत शिल्प संस्कृति की ओर इशारा करती हैं। भारत के अलग-अलग हिस्सों में पारम्परिक कलाओं और अनुभवों को शिल्पकारों ने भिन्न-भिन्न रूप में गढ़ा है। भारत की संस्कृति में विभिन्न देवी-देवताओं की आकृतियों, मानवीय भावनाओं और विचारों को शिल्पकारों द्वारा पत्थरों पर मनन के साथ उकेरा गया है। भारतीय कला और सनातन संस्कृति, विभिन्न काल और सभ्यताओं को इस तरह से शिल्पकारों द्वारा परिभाषित किया गया है, कि जैसे "उस अदृश्य महान कलाकार ने सम्पूर्ण भारतवर्ष में जगह-जगह शिल्पकारी और चित्रकारी के बेजोड़ नमूनों को कभी ना बुझने वाले दीप की तरह प्रज्जवलित कर रखा है।"

लेखक जैव प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली में बतौर वैज्ञानिक कार्यरत हैं। ई-मेल : goyal.dbt@nic.in

देश में शिल्पकला की अक्षुण परम्परा : गाँवों में बसता भारत आज भी शिल्पकारी की अनूठी कलाओं का संगम अपने में समेटे और पीढ़ी-दर-पीढ़ी अपनी विरासत को संजोए हुए है। अलग-अलग राज्यों में विभिन्न प्रकार के रंगों और पैटर्न में बनाए हुए कपड़ों, शाल, पेंन्टिग, जूते-जूतियां, साड़ी, कुर्ते, दरी, कालीन या बाँस, काष्ठ और कांच से बनाए हुए बेहतरीन सामान, गहने इत्यादि में ग्रामीण भारत की झलक को देखा जा सकता है, पर धीरे-धीरे ग्रामीण अर्थव्यवस्था में पलायन, घटते व्यापार, मांग और आपूर्ति के साथ-साथ उन कलाकारों का भी अभाव दिखाई देने लगा है, जिन्होंने विरासत में इसे पाया था। आज भी कुछ जिले और शहर जैसेः- भदोही का कालीन व्यापार, बनारस की सिल्क साड़ी, मुरादाबाद का पीतल का व्यापार, आगरा का चमड़े और नक्काशी

का बाज़ार, लखनऊ की चिकन काश्तकारी, मैसूर की सिल्क जैसे भारतीय आकर्षण की वस्तुओं और परम्पराओं को सहेजे हुए हैं। पर्यटक और आगंतुक पारम्परिक भारतीय परिधानों और वस्तुओं को देश-विदेश के विभिन्न हिस्सों में ले जाते हैं। भारतीय ग्रामीण शिल्प को ग्रामीण पर्यटन से जोड़ने और पर्यटक स्थलों पर शिल्पग्राम की स्थापना की जा रही है, जिससे स्थानीय स्तर पर गाँवों के साथ-साथ शिल्पकला और परम्परा का विकास हो सके।

भारत का पहाड़ी हिमालयी क्षेत्र अपने ऊन, कश्मीरी स्वेटर, कंबल, थुलमास (रजाई), तिब्बती कालीन, तीतर (महिलाओं के लिए कशीदाकारी अंगरखे) के लिए प्रसिद्ध है। तिब्बती शिल्पकार मानव खोपड़ी से बने मग और जांघ की हड्डी से बनी बाँसुरी को बेचते हुए दिखाई दे जाते हैं। कहीं-कहीं पर सोलहवीं-सत्रहवीं शताब्दी में प्रचलित मुगलकालीन शिल्प और चिकन की काश्तकारी को सूती व रेशमी कपड़ों पर, पीतल के बर्तनों, लाख के डिज़ाइनदार बक्सों, तामपत्रों, लघुचित्रों पर प्राचीन धरोहरों के पास बिकता हुआ देखा जा सकता है, तो कभी राजस्थानी शिल्पकारी में आभूषणों में की गई मीनकारी (तामचीनी का काम) और कुन्करी (रत्नों के साथ) जड़ाऊ काम जिसमें नाक के छल्ले, हार, कंगन, बक्से, कीमती पत्थरों और सोने-चाँदी के आभूषण अपनी विरासत और सुंदरता के कारण प्रसिद्ध हैं। राजस्थान में सदियों से शिल्पकला और परम्परा को संरक्षण दिया जा रहा है। राज्य में जयपुर, उदयपुर, जोधपुर, जैसलमेर में महलों, हवेलियों और मंदिरों में की गई अद्भुत नक्काशी है, तो उन्हीं महलों और हवेलियों में संजों कर रखी गई दस्तकारी और चित्रकारी भारतीय कला की पराकाष्ठा को दर्शाता है। असम के लोग शिल्पकलाओं में हमेशा से निपुण रहे हैं, और राज्य की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को दर्शाते हैं। हथकरघा बुनाई और कढ़ाई राज्य के प्राथमिक शिल्प हैं, जिसमें कपास, मूंगा रेशम, पाट रेशम, एरी सिल्क के उत्पाद राज्य के कछार और सुआलूची ज़िले में देखे जा सकते हैं। नागों और धुबरी ज़िले के भटद्रवा और गौरीपुर में फाइबर से सीटें, मैट और कुशन निर्माण होता है। बेंत, बांस और लकड़ियों के उत्पाद व छत की टाइल्स के साथ गोलाघाट की चित्रित काष्ठकला राज्य की लोककला को दर्शाती है। धातु शिल्प, मिट्टी के बर्तन, शीतलपट्टी के मटके तथा गौरीपुर के टेराकोटा उत्पाद बेहतरीन हस्तशिल्प का नमूना हैं। असम के कामरूप ज़िले के हाजो और सरथेबारी में पीतल और बेल धातु की शिल्पकारी से बने उत्पाद असमिया अनुष्ठानों में उपयोग किए जाते हैं।

भारत का जम्मू और कश्मीर क्षेत्र पश्मीना शॉल, पन्ना, रेशम और ऊन के कालीन, पपीर की लुद्‌गी या मेच के बक्से, हाथ से बुने हुए ऊन के रेशमी आसन और रेशमी वस्त्रों के लिए जाना जाता है। बिहार और छत्तीसगढ़ राज्य मधुबनी चित्रकला, जो भारतीय चित्रों के शुरुआती रूपों में से एक है, के लिए विश्व प्रसिद्ध है। गोवा जैसे राज्य अपने मिट्टी के बर्तनों, समुद्री कौड़ियों और ताड़ के पत्तों से बने सजावटी सामानों के लिए प्रसिद्ध है, तो दक्षिण भारतीय राज्य परिष्कृत मोती, चंदन की नक्काशी, जड़े हुए फर्नीचर, शीशम की नक्काशी, मसाले, इत्र, समुद्री-शेल कॉन्कोक्शन्स, कांच के बने उत्पाद, जड़ित चूड़ियाँ, हाथ से बुनी हुई साड़ियाँ, कोंडापल्ली के खिलौने, करीमनगर ज़रदोजी, कांचीपुरम रेशम, हाथी दाँत, पीतल व सींग के उत्पाद, लकड़ी के खिलौने, नारियल से बने उत्पाद आदि के लिए प्रसिद्ध है। भारत के पश्चिम बंगाल राज्य के गाँव हस्तशिल्प उत्पाद जैसे टेराकोटा, शोलापीठा शिल्प, मिट्टी के बर्तनों, लोक कांस्य और कांथा सुईवर्क के लिए जाने जाते हैं, तथा छह ग्रामीण शिल्पकलाओं जिसमें पंचमुरा का टेराकोटा, डोकरा, चरीदा के छऊ मुखौटे, कुष्मंडी के लकड़ी के मुखौटे, बंगाल पिंगला के जैविक रंगों से बने पटचित्र और मदुर की डोकरा ज्वैलरी को प्रतिष्ठित भौगोलिक संकेतक

ओडिशा की ढोकरा शिल्पकला और बस्तर की लोहे की कलाकृति

छत्तीसगढ़ की हस्तशिल्प कलाएं

छत्तीसगढ़ की हस्तशिल्प कला का इतिहास बहुत पुराना है, जिसमें मटरपरई भित्ति शिल्पकला, तुम्बा शिल्पकला, मिट्टी (टेराकोटा) कला, काष्ठ कला, कंघी कला, पत्ता शिल्प, बाँस शिल्प, लौह शिल्प, ढोकरा शिल्प, प्रस्तर शिल्प, कोरण्डम काष्ठ कला आदि प्रमुख हैं।

मटरपरई भित्ति शिल्पकला : मट- 'मिट्टी', परई 'कागज व खल्ली की लुगदी' आदि को सड़ा कर बनाई गई कला 'मटपरई कला' छत्तीसगढ़ की प्राचीन संस्कृति से जुड़ी हुई कला है। अभिषेक सपन छत्तीसगढ़ के एकमात्र ऐसे कलाकार हैं जिन्होंने विलुप्त हो चुकी मटपरई कला को जीवंत कर जनमानस तक पहुँचाने की कोशिश की है।

तुम्बा शिल्प कारीगरी : बस्तर की वनवासी संस्कृति में तुम्बा या तुमा (हिंदी में लौकी) उनकी जीवन यात्रा का हमसफर है। तुम्बा शिल्प को छत्तीसगढ़ में बस्तर, नारायणपुर जिले के आदिवासियों द्वारा गर्म लोहे के चाकू के इस्तेमाल से तुम्बा पर विभिन्न पारम्परिक चित्रों को उकेर कर तैयार किया जाता है। मनमोहक तुम्बा लैम्प की बड़ती मांग और कला को बढ़ाने के उद्देश्य से छत्तीसगढ़ हस्तशिल्प विकास बोर्ड ने शिल्पकारों के सम्वर्धन और संरक्षण के लिए बस्तर जिले के लोहंडीगुडा विकासखण्ड के ग्राम उसरीबेड़ा में परम्परागत वस्तुओं से आकर्षक सजावटी वस्तुओं के निर्माण और प्रशिक्षण कार्यक्रम की सुविधा तथा सामान के विक्रय की योजना बनाई है। तुम्बा (गोल लौकी) का प्रयोग पहले बर्तन बनाने में भी किया जाता था। पश्चिम बंगाल में आज भी बाउल लोक गायक तुम्बा (लौकी) से बनी डुगडुगी का प्रयोग बाउल लोक गायकी में करते हैं।

मिट्टी और काष्ठ शिल्पकला : छत्तीसगढ़ के बस्तर में मिट्टी शिल्पकला 'टेराकोटा' से पशु-पक्षी खिलौने, मूर्तियां बनाई जाती हैं। रायगढ़, सरगुजा व राजनांद गाँव भी टेराकोटा शिल्पकला के लिए मशहूर हैं। छत्तीसगढ़ की मुडिया जनजाति लकड़ी (काष्ठ) से बनाए हुए खिलौने, मूर्तियों, तीर-धनुष, घोटुल की साज-सज्जा, झूले आदि से जुड़ी हुई है। अनगढ़ शैली की काष्ठ शिल्पकला

छत्तीसगढ़ की शिल्पकला पत्ते और बांस से बने घरेलू उत्पाद

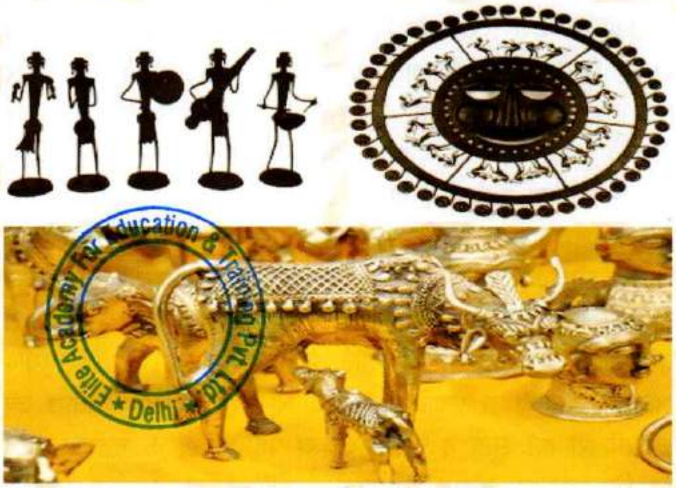

घडवा और ढोकरा शिल्प कलाकृतियां

सरगुजा में देखी जा सकती है।

पत्ता और बाँस शिल्पकला : छीन, तेंदू और पलाश के पत्तों से बनाई गई टोकरी, सूप इत्यादि पत्ता शिल्पकला का अनूठा उदाहरण हैं। गरियाबंद में रहने वाली कमार जनजाति बाँस शिल्पकला में अद्‌भुत हैं। बाँस से बनी वस्तुएं जो पहले घरों में इस्तेमाल होती थीं, को समय के साथ प्लास्टिक ने बदल दिया है। विलुप्त हो रही बाँस शिल्पकला को जीवंत रखने के लिए कई स्वयंसहायता समूहों द्वारा दूरस्थ ग्रामीण अंचलों में प्रयास किए जा रहे हैं। फ्रांस के अल्बान, पोलिन, गैले और ऐलोड़ी ने छत्तीसगढ़ के बतौली ग्राम के दूरस्थ अंचलों की बाँस शिल्पकला को पुनर्जीवन देने के लिए हाथ आगे बढ़ाया है।

बस्तर ज़िले की घड़वा कला में कांस्य, तांबें तथा टिन जैसी मिश्र धातुओं का प्रयोग किया जाता है। जयदेव बघेल को इस कला का जन्मदाता माना जाता है। मोम और मिट्टी के माध्यम से धातु को मनचाही आकृति दी जाती है, जिसे ढोकरा कला के नाम से जाना जाता है। यह रायगढ़ तथा बस्तर में काफी प्रसिद्ध है। इस पारम्परिक शिल्पकला को पश्चिम बंगाल, झारखण्ड, उड़ीसा और दक्षिणी भारत की खानाबदोश जनजातियों के द्वारा बढ़ावा दिया गया है। पारंपरिक रूप से धार्मिक मूर्तियों, गहने, दीये, पशु मूर्तियों और जहाजों के रूप में यह शिल्प भारतीय बाजारों में भरपूर मात्रा में देखी जा सकती है।

छत्तीसगढ़ के प्रतिभावान गेंदाराम सागर को प्रस्तर शिल्पकारी के लिए कई सम्मान प्राप्त हुए हैं। बस्तर में प्रस्तर शिल्प का अस्तित्व प्राचीन समय से ही है, जब आदिवासी पत्थर को तराश कर रूप देने के कौशल में माहिर नहीं थे, और अनघढ़ पत्थरों से ही अनुष्ठान पूरे कर लेते थे। बस्तर की अगरिया जनजाति का लोहे की काले रंग में कलाकृतियां बनाने का सफर भी कालांतर से पीढ़ी-दर-पीढ़ी चला आ रहा है।

(जीआई) टैग मिला है। 2013 में राज्य सरकार ने विभिन्न ज़िलों में 'ग्रामीण शिल्प हब' स्थापित करने के लिए यूनेस्को के साथ मिलकर काम किया था।

उड़ीसा जटिल नक्काशीदार सोपस्टोन, ढोकरा शिल्प, आदिवासी बुनाई और बांस के सामान के लिए लोकप्रिय है। महाराष्ट्र में बढ़िया मलमल और हाथ से बुने हुए रेशम का सामान मिलता है। गुजरात के गाँव पीतल, लोहे और मिट्टी की वस्तुओं, लकड़ी के फर्नीचर, कढ़ाई, चांदी के आभूषण, दरी कालीन, कंबल जैसे हस्तशिल्प कार्यों और कपड़ा उत्पादन के तरीकों, टाई डाई के वस्त्रों, चकला पैचवर्क एवं ग्लास वॉल हैंगिंग के लिए विश्व विख्यात है।

मध्य प्रदेश के रीवा की रजवाड़ों के समय से मशहूर सुपारी हस्तशिल्प कला का अकेला बचा कुंदर शिल्पकार परिवार पिछले 32 वर्षों से तीसरी पीढ़ी में मिली विरासत को निभा रहा है। किसी भी तरह का प्रोत्साहन, बिक्री के अभाव में भविष्य अंधकारमय होने के साथ दुर्लभ कलाकृतियां सिर्फ आर्डर पर ही बनाते हैं। सबसे बड़ी सुपारी को खिलौने के अलग-अलग हिस्सों में तराश कर पर्यावरण के अनूकूल सुपारी खिलौने बनाए जाते हैं। फिलहाल तो यह शिल्प पूरी तरह से विलुप्तता की कगार पर है।

भारत के रुहेलखण्ड क्षेत्र के गाँव विविध परम्परागत हस्तकलाओं की भूमि रहे हैं जिसमें चटाई निर्माण, हाथ के पंखे, सूप, मिट्टी के बर्तन आदि शामिल हैं, जिनका निर्माण 'भरा' नामक जंगली घास से निकली हुई एक विशिष्ट प्रकार की छाल (बरुआ) से किया जाता है। यहाँ की ज़्यादातर कलाएं व्यावसायिक रूप ले चुकी हैं जिसमें शीशम, साल, सागौन की लकड़ी और बेंत से बने फर्नीचर और वस्तुएं, पतंग, मांझा, जरी का काम (सिकलापुर एवं आलमनगर, बरेली), पीतल की वस्तुएं (मुरादाबाद), हुक्का (भोजपुर पीपल साना, मुरादाबाद), चाकू, टोपियां (रामपुर), बांसुरी (पीलीभीत), लकड़ी से निर्मित बच्चों की गाड़ियां (बजीरगंज, बदायूँ), लकड़ी की वस्तुएं (अमरोहा, मुरादाबाद), सींग और हड्डियों की वस्तुएं (सम्भल, मुरादाबाद) आदि प्रमुख हैं। बदायूँ तथा बरेली जिले के गाँवों में कारीगरों के ऐसे समूह हैं, जो सूप का निर्माण सरकरा नाम के पौधे की झाड़ियों से प्राप्त सिरकी से करते हैं।

पीलीभीत नगर के लगभग 2000 लोग बाँस, तुर अरहर की लकड़ी तथा रंग आदि का प्रयोग करके बाँसुरी निर्माण से जुड़े हुए हैं। इसी तरह लकड़ी से बनाई जाने वाली वस्तुओं में ढोलक, छड़ी, चकला-बेलन, बैठने में प्रयुक्त पिढ़ियां आदि क्षेत्र की मुख्यता हैं। अमरोहा के सैकड़ों व्यक्ति ढोलक निर्माण तथा सम्भल में मृत पशुओं से प्राप्त सींग से बनी वस्तुएं कंघी, सिगरेट-केस, चूड़ी रखने के डिब्बे, श्रृंगार दानी, पर्स इत्यादि अमेरिका तथा जापान में निर्यात की जाती हैं। सुन्दरता के लिए इन पर सीप, मोती, लकड़ी, हड्डियों आदि की मदद से नक्काशी की जाती है।

भारत के शिल्पग्राम : ग्रामीण शिल्प रोज़मर्रा के उपयोग और पारम्परिक शिल्प उत्पादन को संदर्भित करता है। शिल्पकार केवल एक ही वस्तु का निर्माता नहीं होता, उनका इन्द्रधनुषी सृजन कई कार्यों में ग्राहक की आवश्यकताओं को पूरा करना होता है। जया जेटली ने अपनी पुस्तक 'विश्वकर्माज़ चिल्ड्रेन-इंडियाज़ क्राफ्ट्स पीपुल' में भारत के शिल्प और शिल्पकार को लोक एवं शास्त्रीय परम्परा का अभिन्न अंग बताया है, जिसका ऐतिहासिक समांगीकरण कई हजार वर्षों से विद्यमान है।

भारत में टेक्सटाइल (कपडा उद्योग) को पर्यटन से जोड़ने की पहल में सरकार ने आठ शिल्पग्राम रघुराजपुर (ओडिशा), तिरुपति (आंध्र प्रदेश), वदज (गुजरात), नैनी (उत्तर प्रदेश), अनेगुंडी (कर्नाटक), महाबलीपुरम (तमिलनाडु), ताजगंज (उत्तर प्रदेश), आमेर (राजस्थान) के प्रमुख पर्यटन स्थलों में स्थापित किए हैं, जो हस्तशिल्प कारीगरों की आजीविका और समृद्ध

प्रस्तर शिल्प और पत्थर को मूर्त रूप देते हुए शिल्पकार

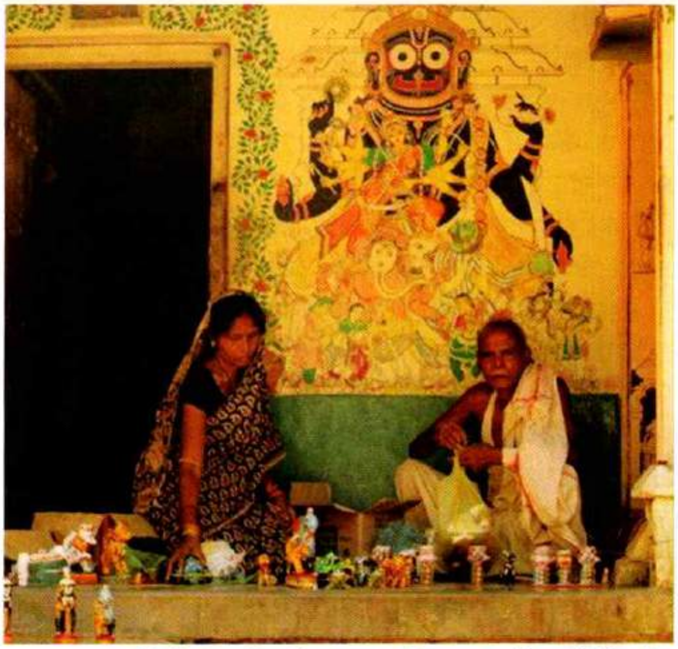

रघुराजपुर, पुरी की सांस्कृतिक शिल्पकला और कागज की लुगदी के बने खिलौने

कलात्मक विरासत को बढ़ावा देंगे। शिल्पग्राम में वातावरण को गाँव की शैली में दिखाया गया है, जिससे देश के दूरदराज क्षेत्रों में पनपते ग्रामीण जीवन की भावना प्रदर्शित हो सके। हमारे देश में कुछ ऐसे गाँव हैं, जिन्होंने कला की धरोहर को अपनी अलग सांस्कृतिक पहचान की तरह संभाला है। रघुराजपुर में ताड़ के पत्तों की एनग्रेविंग, टसर पेंटिंग, काग़ज़ की लुगदी के बने खिलौने, पट्टचित्र तथा कपड़ों में की गई दस्तकारी पुरी की एक सांस्कृतिक कला को दर्शाती है। वहाँ के आर्ट कॉम्प्लेक्स स्ट्रीट में जाते ही आप वहाँ की दीवार में की गई चित्रकारी (पेंटिंग्स), लकड़ियों में की गई नक्काशी और सांस्कृतिक मुखौटों की ओर आकर्षित हो जाएँगे।

राजस्थान के झालावाड़ में विश्व प्रसिद्ध धरोहर गागरोन दुर्ग के दूसरे छोर पर दो तरफ नदियों से घिरा पहाड़ी पर बसे चंगेरी गाँव को ग्रामीण पर्यटन के रूप में स्वच्छता से जोड़ने के साथ देशी-विदेशी पर्यटकों को ग्रामीण संस्कृति से रूबरू करवाना है। गाँव की कला, शिल्प को बढ़ावा और प्रदर्शित करने के लिए स्थानीय लोगों को प्रेरित किया जा रहा है। जमशेदपुर से लगभग 57 किमी. की दूरी पर स्थित अमादुबी ग्रामीण पर्यटन गाँव पूर्वी सिंहभूम के धालभूमगढ़ ब्लॉक में स्थित है, और झारखंड के करीब 54 प्रतिभाशाली आदिवासी कलाकारों का घर है। गाँव में कलाकारों द्वारा पेड़ों की पत्तियों और छाल से बने पारंपरिक पाटकर स्क्रॉल पेंटिंग के माध्यम से महाकाव्य, लोककथाओं और ग्रामीण जीवन के दृश्यों को देखना पर्यटकों को एक समृद्ध अनुभव प्रदान करता है, और वह सीधे कलाकारों के घरों में जाकर चित्रों का विस्तृत चयन भी कर सकते हैं। इकोस्फीयर स्पीति में बौद्ध मठों की यात्राएं, याक सफारी, गाँवों की यात्राएँ, ग्रामीण पारिवारिक शैलियाँ और सांस्कृतिक कार्यक्रम देखे जा सकते हैं। पोचमपल्ली, तेलंगाना में पर्यटक पोचमपल्ली रेशम की मशहूर साड़ियों के बुनने की प्रक्रिया देख सकते हैं। चोलामंडल आर्टिस्ट्स गाँव में कलाकारों की एक पूरी बिरादरी रहती है, जिन्हें अभी इंजमबक्कम, चेन्नई में एक नई जगह प्रदान की गई है।

हिमालय की पृष्ठभूमि में रची-बसी आंद्रेतता कला हिमाचल प्रदेश के पालमपुर के पास मिट्टी के बर्तनों की कलाकारी के लिए जानी जाती है, जो कि नोहरा रिचड्र्स के दिमाग़ की उपज है। मंत्रमुग्ध कर देने वाली यह जगह सांस्कृतिक धरोहर और नये कलाकारों को अलग ही क्षेत्र प्रदान करती है। नालन्दा के ह्वेनसांग मेमोरियल हॉल के निकट बने खूबसूरत शिल्पग्राम में बेगमपुर, बड़गाँव, कपटिया, नोना, मुस्तफापुर, सूरजपुर, दामनखंधा की 2 दर्जन महिलाओं के द्वारा राजस्थान के मार्बल डस्ट की मूर्तियों को राजगीर, नालन्दा, बोधगया व वैशाली जैसे पर्यटन स्थलों में विक्रय किया जाता है। तमिलनाडु के शिवगंगा ज़िले में कराईकुडी या चेतेनाद गाँव वास्तुकला, समृद्ध विरासत और चेतेईर समुदाय की समृद्धि को दिखाता है। संगमरमर के फर्श, इतालवी टाइल्स, बेल्जियम दर्पण और वास्तुकला की भव्यता के साथ यहाँ नक्काशीदार सागौन, ग्रेनाइट स्तंभों से बने दरवाजे और फ्रेम दिखाई देंगे। यह कहना ग़लत नहीं होगा कि कलाओं से धनी ये गाँव हमारी संस्कृति और परंपरा को संरक्षित रखने में बहुत ही मददगार साबित हो रहे हैं।

शिल्पकला के संरक्षण और संवर्धन के लिए 'आत्मनिर्भर भारत' और 'वोकल फॉर लोकल' जैसे सरकारी प्रयासों से सम्पदा, संसाधन, उत्पाद और हुनर को बढ़ावा मिला है, जिससे 'लोकल फॉर ग्लोबल' का सपना साकार किया जा सके। उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में 'एक ज़िला-एक उत्पाद' जैसी अभिनव पहल शुरू हो चुकी है, जिसका उद्देश्य परम्परागत ग्रामोद्योग के संरक्षण, संवर्धन एवं समग्र विकास के माध्यम से रोजगार के अवसर पैदा

सुपारी हस्त शिल्पकला

करना है। मध्य प्रदेश में हथकरघा वस्त्र बुनाई की समृद्ध परम्परा के चलते रीवा, सागर, निवाड़ी, मण्डला, शहडोल में हस्तशिल्प निगम की हथकरघा गतिविधियाँ बढ़ी हैं, तो उज्जैन और महेश्वर में डिजाईन स्टूडियो की स्थापना की गई है। मध्य प्रदेश की चंदेरी, महेश्वरी साड़ियों में वारासिवनी (बालाघाट), सौंसर (छिन्दवाड़ा), पढ़ाना–सारंगपुर (राजगढ़) के हथकरघा कारीगरों की कुशलता तथा छपाई में बाग की ब्लॉकप्रिंट, भैरोगढ़ की बाटिक प्रिंट और तारापुर के नांदना प्रिंट ने अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। महाराष्ट्र में प्रदेश के 04 ज़िलों – बैतूल, होशंगाबाद, मण्डला, महेश्वर, सागर में स्थानीय शिल्पियों को बाज़ार उपलब्ध कराने के लिए 'मृगनयनी एम्पोरियम' शुरू किए गए हैं। हस्तशिल्प विकास निगम के द्वारा केवड़िया (गुजरात), रायपुर (छत्तीसगढ़) मुम्बई वाशी (महाराष्ट्र) तथा लेपाक्षी, हैदराबाद (तेलंगाना) में भी एम्पोरियम और विक्रय काउंटर खोले गए हैं। हथकरघा एवं हस्तशिल्प उत्पादों के ब्रॉण्ड 'मृगनयनी'; खादी एवं ग्रामोद्योग के दैनिक उपयोग की वस्तुओं के ब्रॉण्ड 'कबीरा' एवं 'विंध्यवैली' तथा रेशम वस्त्रों के ब्रॉण्ड 'प्राकृत' को ई–कॉमर्स प्लेटफॉर्म से जोड़ा गया है।

ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा : प्राचीन सभ्यता–संस्कृति और महान परंपराओं से जुड़ने के लिए सरकार ने पहली बार वर्ष 2022 में ग्रामीण पर्यटन रणनीति का खाका तैयार किया है। इससे स्थानीय समुदायों के स्थायी जीवन के विकास के साथ प्रकृति, समृद्ध हस्तकला, कला–संस्कृति और सांस्कृतिक विरासत से भारतीय आतिथ्य को जोड़ने में मदद मिलेगी। 'स्वदेश दर्शन' कार्यक्रम के तहत देश में एक मज़बूत पर्यटन पारिस्थितिकी तंत्र के द्वारा ग्रामीण और आसपास के क्षेत्रों में इको सर्किट, हिमालयन सर्किट, डेज़र्ट सर्किट, ट्राइबल सर्किट और वाइल्ड लाइफ सर्किट जैसी ग्रामीण पर्यटन परियोजनाओं के विकास की संभावना है।

पर्यटन मंत्रालय ने ग्रामीण पर्यटक स्थलों जो समृद्ध कला, संस्कृति, हथकरघा, धरोहर और शिल्प की दृष्टि से गौरवशाली हों, के विकास पर बल दिया है। ज़रूरत है कि गाँव में उनके वास्तविक स्वरूप के साथ ही रहने और पारम्परिक खान–पान में बदलाव ना किए जाएं। साथ ही, बाहर से किसी भी तरह के खाद्य पदार्थ आदि को लाने पर रोक होनी चाहिए, जिससे स्थान और स्थानीय लोगों में स्वच्छता के साथ उन्हें आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकेगा। युवाओं को शिक्षा और दुभाषिये के रूप में ग्रामीण पृष्ठभूमि और पर्यटन संस्कृति की जानकारी के द्वारा रोज़गार सृजन पर ध्यान देना होगा। उत्तर प्रदेश की सरकार ने प्रदेश की समृद्ध ऐतिहासिक, धार्मिक और सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देने के लिए फिलहाल प्रदेश के 18 ज़िलों में दो गाँवों का चयन ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए किया है।

समय के साथ ग्रामीण शिल्पकला आधुनिक रूप लेती जा रही है। विरासत के इन शिल्पकारों की कला हाट बाज़ारों, पर्यटन स्थलों, विभिन्न राज्यों के एम्पोरियम में उनके उत्पाद तक सिमट कर रह गई है, और वह अक्सर स्वयं अपनी मेहनत का उचित पारिश्रामिक भी नहीं पा पाते हैं। ग्रामीण पर्यटन की परिकल्पना उन्हें स्थानीय स्तर पर गाँवों को सुंदर, स्वच्छ और अपनी कल्पना शक्ति के आधार पर सुंदर बनाने के अवसर के साथ आर्थिक लाभ प्रदान करेगी और खानाबदोश की तरह उन्हें दूरदराज के क्षेत्रों में अपनी कलाकृतियों के प्रदर्शन और बिक्री के लिए नहीं जाना पड़ेगा तथा गाँवों से पलायन भी रुकेगा। ❑

बिहार की हस्तशिल्प कला

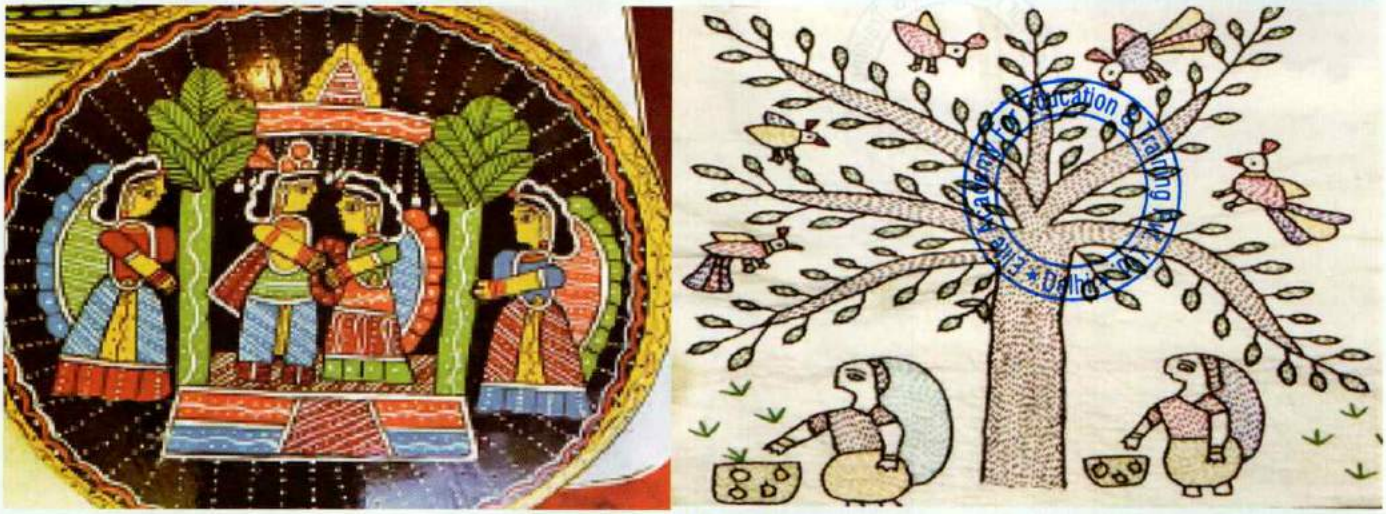

बिहार की टिकुली और सुजनी हस्तकला

बिहार राज्य की मंजूषा, सिक्की, सुजनी, टिकुली लोक कलाएं वहाँ के लोगों के जीवनशैली का हिस्सा हैं। पेपर माशे, नालंदा की बावन बूटी, ओबरा और मिथिला, तिरहुत, मगध, आंग और भोजपुर सहित ऐसी कई अन्य प्रमुख शिल्प कलाकृतियां बिहार के सांस्कृतिक महत्व को दर्शाती हैं, और बाहर की दुनिया से अनभिज्ञ हैं।

सुजनी कला : बिहार के मुज़फ्फ़रपुर की ग्रामीण महिलाएं नवजात शिशुओं को लपेटने के लिए साधारण कपड़े के छोटे पैच पर कढ़ाई करके तैयार करती थीं। ज़रूरत के साथ यह कला मुजफ्फ़रपुर जिले के भुसरा गाँव की 600 ग्रामीण महिलाओं के लिए 'आजीविका' और 'आत्मनिर्भरता' का साधन बन गई। वर्ष 2006 में इसे जीआई टैग मिला, और 2010 में इसे संगठित करने का प्रयास हुआ। जीआई टैग हस्तशिल्प, कृषि उत्पादों पर इस्तेमाल किया जाने वाला एक टैग है, जिसकी विशिष्ट भौगोलिक उत्पत्ति होती है, और उनमें ऐसे गुण होते हैं, जो उसके मूल के कारण होते हैं।

सुजनी कढ़ाई में 'सु' का अर्थ है, 'सुविधा' और 'जानी' का अर्थ है, 'जन्म', जिसे सुई की सहायता से पतले पेपर पर उकेर कर कपड़े के नीचे रखकर कॉपी करके मेहनत और बारिकी के साथ आकार दिया जाता है। महिला जीवन फाउंडेशन की निदेशक संजू देवी को 2014 में इस कला के लिए यूनेस्को से उत्कृष्टता का विश्व शिल्प परिषद पुरस्कार मिला था। सुजनी शिल्प का काम गाँव के घरों में नवजात शिशुओं की शाल बनाने के लिए आम था, अब नए बच्चों के लिए उनके सपनों और आशाओं का प्रतिनिधित्व करता हुआ दिखाई देता है। दानापुर, बिहार की माला गुप्ता भी नानी-दादी से सीखी परम्परगत सुजनी कला को स्वरोज़गार से जोड़कर देश-विदेश में पहचान दिला रहीं हैं। बिहार राज्य के दीघा, दानापुर, मनेर और दरभंगा में संगठन बनाकर 300 महिलाओं को आर्थिक रूप से मज़बूत करने के साथ स्टार्टअप परियोजना का हिस्सा हैं। उनके उत्पाद फोल्डर, झोला,

मधुबनी चित्रकला

हैंडीक्राफ्ट राज्य की राजधानी में खादी माल, बिहार संग्रहालय एवं इम्पोरियम तथा विभिन्न हस्तशिल्प की दुकानों के साथ ऑनलाइन दुनिया भर में विक्रय के लिए उपलब्ध हैं।

मंजूषा कला : भागलपुर की इस कला को भी लोकप्रिय बनाने के लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। चित्रकारों की मांग पर जिला प्रशासन ने ऐतिहासिक 'सिल्क सिटी' की प्रमुख इमारतों, जिलाधिकारी कार्यालय, सर्किट हाउस, हेलिपैड, पार्क सैंडिस कंपाउंड और गंगा नदी पर बने विक्रमशिला सेतु को इस पेंटिंग के द्वारा सजाया है। दिवंगत चक्रवती देवी इस लोककला की वरिष्ठ चित्रकार मानी जाती हैं, जिनकी दो पीढ़ी इस विरासत को संभाल रही है। कलाकारों का मानना है कि इस चित्रकला के फलने-फूलने के लिए जरूरी है, कि बिहुला विषहरी की लोकगाथा के अलावा अंग क्षेत्र की जीवनशैली, संस्कृति और मान्यताओं को इस चित्रशैली में जोड़ा जाए, जिससे इसमें प्रवाह बना रहे। कुछ कलाकार अब इस शैली को परिधानों पर भी उतार रहे हैं।

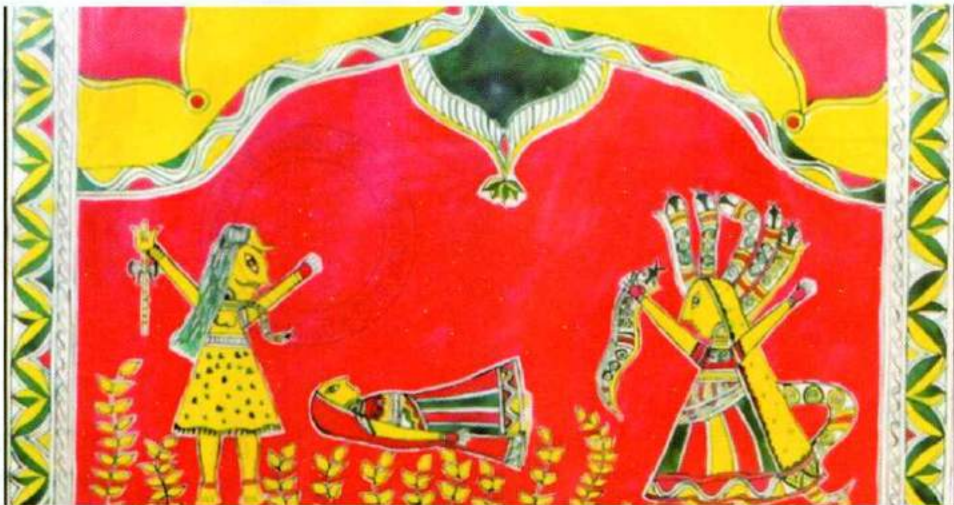

मंजूषा चित्रकला

Elite Academy For Education & Training Pvt. Ltd. ★ Delhi ★

मधुबनी चित्रकला : बिहार के एक सुरम्य गाँव मधुबनी यानी 'शहद का जंगल' की यह स्थानीय चित्रकला जिसमें ज़्यादातर मूल रूप से प्रकृति जैसे कमल के फूल, बाँस, चिड़िया, सांप आदि की कलाकृतियों से सम्बंधित है। भारतीय इतिहास के अनुसार, इस कला की उत्पत्ति रामायण युग में हुई थी, जब सीता स्वयंवर के अवसर पर राजा जनक ने इस अनूठी कला से पूरे राज्य को सजाने के लिए आयोजन किया था। महिलाओं नें शताब्दियों से इस कला का अभ्यास करके अपना प्रभुत्व बनाए रखा है। विशेष आयोजनों पर इस चित्रकारी को घरों और गाँव की दीवारों पर बनाते हैं। बिहार के दरभंगा, पूर्णिया, सहरसा, मुज़फ़्फ़रपुर, मधुबनी और नेपाल के कुछ क्षेत्रों में रंगोली के रूप में सजने वाली यह अद्वितीय कला धीरे-धीरे कपड़ों, दीवारों एवं कागज़ पर भी उतर आई है, जिसे भित्ति चित्र और अरिपन या अल्पना के रूप में चटक घरेलू रंगों जैसे- हल्दी, केले के पत्ते, और लाल रंग के लिए पीपल की छाल, दूध आदि से माचिस की तीली व बाँस की कलम का प्रयोग करके बनाया जाता है। रंगों की पकड़ बनाने के लिए बबूल के वृक्ष की गोंद का इस्तेमाल किया जाता है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मधुबनी व मिथिला पेंटिंग के सम्मान को बढ़ाने के लिए मधुबनी रेलवे स्टेशन की दीवारों पर मिथिला कलाकारों ने लगभग 10,000 स्क्वायर फीट में इन कलाकृतियों को निशुल्क अलंकृत किया है। समय के साथ-साथ इस विधा में पासवान जाति के समुदाय के लोगों के द्वारा राजा शैलेश, जिसे वह अपने देवता के रूप में पूजते हैं, के जीवन वृतांत को भी चित्रित किया जाने लगा। वर्ष 2018-19 में भारतीय रेल के समस्तीपुर मंडल में भी एक ट्रेन पर मधुबनी पेंटिंग करके इसे चलाया गया था। जापान के निगाटा प्रांत में टोकामाची पहाड़ियों पर मधुबनी पेंटिंग के इतिहास से जुड़ा हुआ एक मिथिला संग्रहालय स्थित है, जिसमें 15,000 अति सुंदर, अद्वितीय और दुर्लभ मधुबनी चित्रों के खजाने को रखा गया है।

बिहार राज्य के राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान (निफ्ट) ने स्थानीय युवा हस्तशिल्पियों और बुनकरों को स्टार्टअप से जोड़ने और कला को निखारने के लिए सिडबी के साथ एक करार के तहत युवा शिल्पकारों को प्रशिक्षित करने का विचार किया है।

पूर्वोत्तर भारत के पारंपरिक शिल्प

भारतीय हस्तशिल्प का इतिहास सदियों पुराना है। भारत के प्रत्येक राज्य और उसके विभिन्न स्थानों का हस्तशिल्प विविध परंपराओं और संस्कृतियों सहित स्थान विशेष की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की झलक प्रस्तुत करते हैं। सदियों से, ये अनोखे शिल्प ग्रामीण समुदायों के भीतर संस्कृति और परंपरा के रूप में सन्निहित हैं। इस लेख में पूर्वोत्तर भारत के कुछ चुनिंदा पारंपरिक ग्रामीण शिल्पों के बारे में चर्चा की गई है।

-अनुपमा गोरे

भारत एक सांस्कृतिक और पारंपरिक विविधता वाला देश है। भारत के प्रत्येक क्षेत्र का अपना अनोखा पारंपरिक शिल्प और हस्तकला है जो राज्य विशेष ही नहीं समूचे भारत देश को दुनिया में पहचान दिलाते हैं। शिल्पकारों की पीढ़ी-दर-पीढ़ी द्वारा इन शिल्पकलाओं का विकास हुआ है। समय के साथ इन शिल्प कलाओं में नवाचार भी हुए हैं। भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और परंपराएँ इन हस्तशिल्प के मूल आधार हैं। कोई भी पारंपरिक हस्तशिल्प उसे बनाने वाले समुदाय की सांस्कृतिक पहचान का आइना होता है। युगों से, भारत में बने हस्तशिल्प ने अपनी विशिष्टता को कायम रखा है। प्राचीनकाल में, इन हस्तशिल्पों को यूरोप, अफ्रीका, पश्चिम एशिया और सुदूर पूर्व के दूर-दराज के देशों में निर्यात किया जाता था। हमारे देश के शिल्पकारों और उनकी पीढ़ियों ने सदियों से इन महत्वपूर्ण भारतीय हस्तशिल्पों की समग्र विरासत को सहेजकर रखा है। ये हस्तशिल्प भारतीय संस्कृति को प्रकट करते हैं। देश के भीतर विभिन्न राज्यों

लेखिका स्वतंत्र रचनाकार और कहानीकार हैं। ई-मेल : vartika28vedika5@gmail.com

बांस और बेंत से संबंधित पारंपरिक हस्तशिल्प

Elite Academy For Education & Training Pvt. Ltd. ★ Delhi ★

मिज़ोरम के बांस व बेंत से बने हस्तशिल्प उत्पाद

में कुटीर उद्योग के रूप में इन हस्तशिल्पों का एक व्यापक आधार है।

आश्चर्यजनक कला और हस्तशिल्प के रूप में हमारा देश अपनी सदियों पुरानी पारंपरिकता की जड़ों को सहेज कर रखे हुए है। भारत के पारंपरिक शिल्प भारतीय संस्कृति को एक मजबूत आधार प्रदान करते हैं जिसने देश को न केवल विश्वव्यापी मान्यता प्रदान की है बल्कि ये पर्यटकों को भी आकर्षित करते हैं। ये तमाम हस्तशिल्प अपने आप में एक महत्वपूर्ण कुटीर उद्योग हैं। इस प्रकार राजस्व को बढ़ाने में भी ग्रामीण पारंपरिक शिल्प कलाओं का योगदान होता है। भारतीय हस्तशिल्प देश के हर राज्य और क्षेत्र के इतिहास और संस्कृति की झलक दिखाते हैं। आगे हम पूर्वोत्तर भारत के कुछ चुनिंदा पारंपरिक ग्रामीण शिल्पों के की चर्चा करेंगे।

बांस और बेंत से निर्मित हस्तशिल्प उत्पाद

पूर्वोत्तर भारत में बांस और बेंत से संबंधित शिल्प का एक समृद्ध अतीत है। वर्तमान में भी यह हस्तशिल्प यहां की एक प्रमुख विशेषता है। ये शिल्प पर्यटन के ज़रिए राजस्व का भी अहम स्रोत हैं। बेंत और बांस की प्रचुरता के कारण अरुणाचल प्रदेश अपने ग्रामीण शिल्प आधारित उत्पादों के लिए काफी प्रसिद्ध है। यह शिल्प एक जीवंत परंपरा है और अत्यधिक विविधतापूर्ण है क्योंकि प्रत्येक जनजाति की अपनी पृथक बुनाई शैली और डिज़ाइन है। प्रत्येक जनजाति अपने हस्तशिल्प कौशल में उत्कृष्टता प्राप्त करती है जिससे बांस और बेंत से बनी वस्तुएं तथा आकर्षक उत्पाद सबको लुभाते हैं।

मिज़ोरम की मिज़ो जनजातियों की पारंपरिक कला बांस और बेंत उत्पादों पर केन्द्रित है। ये इनकी कई किस्में बनाते हैं जो दैनिक जीवन में उपयोगी होने के साथ-साथ सजावट के उद्देश्य से भी काम आते हैं। मिज़ो जनजाति के पुरुष बांस और बेंत के उत्पाद बनाने के विशेषज्ञ होते हैं। पारंपरिक मिज़ो टोपी को देखकर ऐसा लगता है जैसे इस टोपी को सूती धागे की तरह महीन बांस से बुना गया हो। मिज़ो जनजाति के द्वारा बांस और बेंत का उपयोग फूलदान, टोकरी और बर्तन बनाने के लिए भी किया जाता है। घरेलू टोकरियों को गुंथे हुए बांस से बनाया जाता है और इन्हें बेंत के समावेश के द्वारा मजबूत किया जाता है, जिससे अंतिम उत्पाद बहुत कठोर और टिकाऊ हो जाता है। इस हस्तशिल्प कला में धुंए के प्रयोग से बेंत को कुछ अनोखा रंग और पैटर्न दिया जाता है।

पूर्वोत्तर राज्य त्रिपुरा के भी प्रमुख पारंपरिक हस्तशिल्प बांस और बेंत पर आधारित हैं और ये अपनी सुंदर बुनाई और आकर्षक डिज़ाइनों के लिए जाने जाते हैं। त्रिपुरा की विभिन्न जनजातियों द्वारा बुनाई का उत्कृष्ट कार्य किया जाता है। यहां पर उत्पादन किए जाने वाले बांस व बेंत से बने शिल्पों में टेबल मैट, फर्श मैट, कमरे के डिवाइडर, सजाए गए दीवार पैनल, बेंत से बने आकर्षक फर्नीचर और आंतरिक सजावट के उत्पाद जैसे पैनलिंग, प्लाक, प्लांटर्स आदि शामिल हैं।

लकड़ी की नक्काशी

पूर्वोत्तर राज्यों में लकड़ी की नक्काशी एक महत्वपूर्ण ग्रामीण हस्तशिल्प है। मणिपुर में लकड़ी की नक्काशी दो प्रकार की लकड़ी पर की जाती है, जिसे स्थानीय रूप से वांग और हेजुगा के नाम से जाना जाता है। पेड़ों के परिपक्व होने पर उन्हें काटा जाता है और फिर लकड़ी के प्राकृतिक रंग को बनाए रखने के

अखिल भारतीय हस्तशिल्प बोर्ड के आंकड़े बताते हैं कि पिछले 50 वर्षों के दौरान भारतीय हस्तशिल्प निर्यात में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। वर्ष 2022 में भारत ने 15,500 करोड़ रुपये के हस्तशिल्पों का निर्यात दुनिया के देशों में किया था जो कि वर्ष 2021 में 12,600 करोड़ रुपये था। इस प्रकार हम देखते हैं कि भारतीय हस्तशिल्प निर्यात के क्षेत्र में राजस्व में प्रति वर्ष बढ़ोतरी हो रही है।

सिक्किम की लेप्चा बुनाई

लिए लट्ठों को ठीक से सीज किया जाता है। मणिपुरी संस्कृति के पारंपरिक स्वरूपों को काष्ठ शिल्पकारों के द्वारा उकेरा जाता है।

उत्तर-पूर्व के बुनाई और कढ़ाई से संबद्ध हस्तशिल्प

बुनाई और कढ़ाई पूर्वोत्तर के असम राज्य का एक प्रमुख कुटीर उद्योग है। इस महत्वपूर्ण शिल्प ने असम के कपड़ों को अंतर्राष्ट्रीय फलक पर पहचान दिलाई है। इनमें हाथ से बुने हुए सूती, मुगा, पट (शहतूत रेशम) और एरी (ऊनी रेशम) जैसे मुख्य सह उत्पाद शामिल हैं। राज्य के सामान्य घरेलू हथकरघा में मेखला चादर, गमोचा, साड़ी, शॉल, चटाई और नैपकिन अहम स्थान रखते हैं। असम में इन पारंपरिक शिल्पों के डिज़ाइन विभिन्न स्थानीय जनजातियों और जातीय समूहों के प्रतीक हैं।

हाथ से बुने हुए वस्त्रों की समृद्ध विविधता का घर मेघालय रेशम की तीन किस्मों का उत्पादन करता है। वे मुगा, एरी (स्थानीय रूप से रिंडिया के नाम से जाने जाते हैं) और शहतूत हैं। यह कला मेघालय के आदिवासियों का एक प्राचीन शिल्प है और इसे मुख्य रूप से महिलाएं ही बनाती हैं। मेघालय की विभिन्न जनजातियां अद्भुत हस्तशिल्प बुनती हैं और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह उद्योग कुटीर आधारित पर्यावरण के अनुकूल है।

बुनाई नगालैंड की कला और हस्तशिल्प का एक अभिन्न अंग है। इस बुनाई का कार्य मुख्य रूप से महिलाओं द्वारा किया जाता है। राज्य की पारंपरिक शैली स्थानीय शिल्पकारों की समृद्ध कलात्मक कौशल और रचनात्मक कल्पना में प्रकट होती है, जिन्होंने अपने पूर्वजों से यह कला विरासत में प्राप्त की है। इस शिल्प से सम्बंधित विभिन्न उत्पादों में शॉल, स्लिंग बैग, हेडगियर और रैपअराउंड परिधान शामिल हैं जिन्हें आमतौर पर 'मेखला' कहा जाता है।

भारतीय हस्तशिल्प आधुनिक मशीनरी और उपकरणों की सहायता के बगैर हाथ के कौशल द्वारा बनाए गए सृजनात्मक मौलिक उत्पाद होते हैं। वर्तमान समय में, हाथ से बने उत्पादों और कलाकृतियों को एक फैशन और अनोखे सौंदर्य की वस्तु माना जाता है। इस दृष्टि से भी भारतीय हस्तशिल्पों की ख्याति और मांग बढ़ती है जो कि इस कुटीर उद्योग के विकास और इसमें काम करने वाले शिल्पकारों की जीविका के लिए सकारात्मक है।

टेल्ला पोंकीः लकड़ी के खिलौनों का शिल्प

यह आंध्र प्रदेश का 400 वर्ष पुराना पारंपरिक हस्तशिल्प है जिसमें नाजुक लकड़ी से खिलौने बनाए जाते हैं। इन्हें टेल्ला पोंकी के नाम से जाना जाता है, जिसमें खिलौने के हर एक भाग को अलग से तराशा जाता है फिर इन टुकड़ों को मक्कू, इमली के बीज के पाउडर और चूरा के पेस्ट के साथ जोड़ा जाता है। बाद में सुखाने के बाद, प्रत्येक हिस्से जोड़े जाते हैं और खिलौनों को या तो तेल और पानी के रंग या वनस्पति रंगों और तामचीनी पेंट से रंगा जाता है। इन खिलौनों को हर साल संक्रांति के उत्सव में प्रदर्शित किया जाता है और इस शोकेस को बोम्माला कोलुवु के नाम से जाना जाता है।

सिक्किम की पारंपरिक लेप्चा बुनाई इस राज्य की हथकरघा बुनाई का पर्याय है। इस बुनाई का कार्य लेप्चा जनजाति के द्वारा किया जाता है। इस तरह की बुनाई प्राचीनकाल से चली आ रही है। लेप्चा जनजाति के बारे में कहा जाता था कि वे अपने कपड़े बुनने के लिए स्टिंगिंग बिछुआ (सिसनू) पौधों से सूत कातते थे। स्थानीय रूप से थारा के नाम से जाने जाने वाले लेप्चा की बुनाई को बैकस्ट्रैप के साथ लंबवत करघे में बुना जाता है जिससे कपड़े की चौड़ाई कम हो जाती है। लेप्चाओं की पारंपरिक पोशाक के अलावा चादर, पर्दे, बैग, कुशन कवर, बेल्ट, टेबल मैट, ट्रे के कपड़े आदि बनाने के लिए विभिन्न रंगों के पारंपरिक डिजाइन का उपयोग किया जाता है। ❑

बाँस से जुड़े कुछ महत्वपूर्ण तथ्य

बाँस विशाल वुडी घास हैं और बाँस की 1200 से अधिक प्रजातियाँ दुनिया भर में मौजूद हैं, जिनका आकार लघु से लेकर विशालकाय तक 60 मीटर से अधिक है। बांस ग्रह पर सबसे तेजी से बढ़ने वाले पौधों में से हैं और पूर्वोत्तर भारत की सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक परंपरा का एक अभिन्न अंग हैं। बांस हस्तशिल्प को बम्बू आर्ट एंड क्राफ्ट के रूप में भी जाना जाता है, यह उद्योग हमारी भारतीय सांस्कृतिक विरासत से संबंधित है।

बांसकला कितनी उपयोगी है, यह तथ्य हमारे अर्थशास्त्रियों से भी छिपा नहीं है। इस हस्तशिल्प उद्योग के माध्यम से रोजगार सृजन के साथ-साथ रोजगार के नए अवसर प्रदान किए जा सकते हैं। इस उद्योग को विशेष क्षेत्र की आवश्यकता नहीं है, इस उद्योग को एक छोटी-सी जगह या एक छोटे से स्व में शुरू किया जा सकता है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि बांस पर्यावरण अनुकूल है, जिसकी आज के समय में बहुत आवश्यकता है। बांस प्लास्टिक, स्टील और सीमेंट के लिए आवास, फर्नीचर निर्माण और कृषि उपकरण और नए डिज़ाइन और बेहतर प्रौद्योगिकियों के साथ एक अच्छा विकल्प है। यह एक पारिस्थितिकीय रूप से स्थायी कच्चा माल भी है जो हमारे वनों के शोषण की भरपाई कर सकता है। उल्लेखनीय है कि बांस एक प्रमुख खाद्य फसल भी है।

राष्ट्रीय बांस मिशनः बांस क्षेत्र की संपूर्ण मूल्य श्रृंखला के समग्र विकास के लिए पुनर्गठित एनबीएम 2018-19 में शुरू किया गया था और इसे एक हब (उद्योग) और स्पोक मॉडल में लागू किया जा रहा है। यह स्थानीय रूप से विकसित बांस की प्रजातियों के माध्यम से स्थानीय कारीगरों का समर्थन करता है, जो 'वोकल फॉर लोकल' के लक्ष्य को साकार करेगा और कच्चे माल के आयात पर निर्भरता को कम करते हुए किसानों की आय बढ़ाने में मदद करेगा। राष्ट्रीय बाँस मिशन के अनुसार, भारत में बाँस के तहत सबसे अधिक क्षेत्र (13.96 मिलियन हेक्टेयर) है। भारत 136 प्रजातियों के साथ बांस की विविधता के मामले में चीन के बाद दूसरा सबसे अमीर देश है। भारत में बाँस का वार्षिक उत्पादन 14.6 मिलियन टन है भारत में बाँस की टहनी का उत्पादन और खपत ज़्यादातर उत्तर-पूर्वी राज्यों तक ही सीमित है।

बांस को 'वृक्ष' श्रेणी से हटानाः भारतीय वन अधिनियम 1927 में 2017 में संशोधन कर बांस को वृक्ष की श्रेणी से हटाया गया। नतीजतन, कोई भी कटाई और पारगमन अनुमति की आवश्यकता के बिना बांस और उसके उत्पादों में खेती और व्यवसाय कर सकता है।

बांस के बहुमुखी उपयोग

बांस का उपयोग विभिन्न तरीकों से किया जा सकता है, जिसमें भोजन, लकड़ी का विकल्प, भवन और निर्माण सामग्री, हस्तशिल्प और कागज शामिल हैं। इसकी बहुमुखी प्रकृति और कई उपयोगों के कारण इसे 'गरीबों की इमारती लकड़ी' भी कहा जाता है। पर्यावरणीय रूप से लाभकारी बाँस को गंभीर रूप से खराब हुए स्थलों और बंजर भूमि को पुनः प्राप्त करने के लिए लगाया जा सकता है। यह अपने अजीबोगरीब झुरमुट गठन और रेशेदार जड़ प्रणाली के कारण एक अच्छी मिट्टी बांधने की मशीन है और इसलिए यह मिट्टी और जल संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह पेड़ों की तुलना में 35% अधिक ऑक्सीजन छोड़ता है और प्रति हेक्टेयर 12 टन कार्बन डाई ऑक्साइड को अलग कर सकता है।

विश्व बांस दिवस

विश्व बाँस दिवस 18 सितंबर को मनाया जाता है। इसकी आधिकारिक तौर पर स्थापना 2009 में बैंकाक में आयोजित 8वीं विश्व बांस कांग्रेस में विश्व बांस संगठन द्वारा की गई थी। विश्व बांस संगठन पर्यावरण और अर्थव्यवस्था की खातिर बांस और बांस के उत्पादों के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए समर्पित बांस व्यवसायियों के लिए एक अंतरराष्ट्रीय समन्वयक निकाय है।

Elite Academy For Education & Training Pvt. Ltd. ★ Delhi ★

हथकरघा और हस्तशिल्प क्षेत्र का विकास और बढ़ावा

-रीता प्रेम हेमराजानी, मधुलिका तिवारी

हथकरघा और हस्तशिल्प क्षेत्र देश के ग्रामीण क्षेत्रों में एक असंगठित और विकेन्द्रीकृत उद्योग है और अत्यंत श्रम साध्य होने के कारण रोज़गार सृजन के मामले में ये कृषि के बाद दूसरे स्थान पर है। बेहतरीन हस्तशिल्प और हैंडलूम उत्पादों के मानक तय करने के लिए कई कदम उठाए गए हैं जैसे हैंडलूम मार्क, सिल्क मार्क, इंडिया हैंडलूम ब्रांड (आईएचबी) गुणवत्ता प्रमाणन को इंगित करने वाले कुछ उपाय हैं। साथ ही, इन शिल्पों की पहचान के लिए वहाँ की भौगोलिक पहचान टैगिंग पर भी काम किया जा रहा है।

सभी सभ्यताओं में कला और शिल्प ग्रामीण समुदाय की संस्कृति और जीवनशैली का एक अभिन्न हिस्सा रहे हैं और देश के विभिन्न क्षेत्रों की विविध प्रकृति और उनके लचीलेपन ने कई अलग-अलग प्रकार की कलाओं और शिल्पों को जन्म दिया। आमतौर पर जब हम अपने देश भारत की बात करें तो इसकी विविधता, विरासत, संस्कृति, परंपरा, व्यापार, अर्थव्यवस्था, धार्मिक उत्सव, लैंगिक समानता, सांस्कृतिक कार्यक्रम और विभिन्न कलाएं इसे कुछ खास बनाती हैं।

भारतीय शिल्प और कला का इतिहास भी उतना ही प्राचीन है जितना सिंधु घाटी सभ्यता का और तभी से सभ्यताओं के विकास के साथ-साथ इसमें भी बदलाव आता रहा है। सदियों तक इस क्षेत्र पर पड़े राजनीतिक और सांस्कृतिक प्रभावों के बावजूद इस क्षेत्र की विशिष्टताएं संरक्षित हैं। भारत ने विभिन्न

लेखिका राष्ट्रीय हथकरघा विकास निगम लिमिटेड में प्रबंध निदेशक और वरिष्ठ अधिकारी हैं।
ई-मेल : mdnhdc@nhdc.org.in; madhulikatiwari@nhdc.org.in

Elite Academy For Education & Training Pvt. Ltd. ★ Delhi ★

ढोकरा - धातु ढलाई की कला

लकड़ी पर नक्काशी

कोंडापल्ली खिलौने

संस्कृतियों को अपने में आत्मसात किया और एक मज़बूत और जीवंत देश के रूप में उभरा।

राजनीतिक परिवर्तन अर्थव्यवस्था को और विभिन्न शासकों के आपस में समीकरणों को प्रभावित करते रहे हैं। कला और कलाकारों को आमतौर पर देशभर के शासकों द्वारा संरक्षण दिया जाता रहा है भले ही ये शासक कहीं के भी हों। भारत में, शासक वर्ग (क्षत्रिय) व्यापारी वर्ग से अलग रहता था। इसलिए व्यापार और वाणिज्य सदियों की निरंतरता को बरकरार रखते हुए अन्य वर्गों की तरह ही विशिष्ट बने रहे।

आसानी से उपलब्ध कच्चे माल, पर्यावरण, विरासत में मिलने वाली कलाओं, धार्मिक विश्वासों और स्थानीय कृषि परंपराओं जैसे मिले-जुले कारणों से यहाँ पर विभिन्न कलाओं का विकास हुआ। यहाँ प्रत्येक क्षेत्र की एक अलग ही पहचान थी और व्यापार और कारोबार ने इस पहचान को परिभाषित और मजबूत किया। उदाहरण के लिए, उत्तर प्रदेश के गोरखपुर के पास मिट्टी के बर्तनों का विकास वहाँ आसपास उपलब्ध विशेष मिट्टी के कारण हुआ और यह औरंगाबाद गाँव के लिए आजीविका का एक स्रोत है। इसी तरह, कांजीवरम साड़ी पर वहाँ के मंदिरों के डिज़ाइन और नमूने बनाए जाते हैं और इसे शुभ अवसरों पर पहना जाता है। इसी तरह, मध्य प्रदेश की साड़ियां राजघरानों के संरक्षण में रहीं।

इसी तरह जामदानी, कोटा डोरिया, पैठणी पर अपने क्षेत्र का विशिष्ट प्रभाव है। रंगाई उद्योग भारत के पश्चिमी भाग में विकसित हुआ और इसीलिए इस क्षेत्र में बागरू, लहरिया, बंधेज, सांगानेरी ब्लॉक प्रिंटिंग देखी गई। राजस्थान जैसे लाख उत्पादक क्षेत्रों के आसपास लाख की चूड़ी और लाख के आभूषण बनाए जाते थे। संगमरमर राजस्थान के आसपास पाया जाता है और इसीलिए वहाँ के राजसी महलों में बहुत सारी जड़ाई और नक्काशीदार फर्नीचर और सजावटी सामान देखे जा सकते हैं। दुनिया के सात अजूबों में से एक ताजमहल में प्रदर्शित भारतीय कारीगरों के शिल्प कौशल को किसी परिचय की आवश्यकता नहीं है। इसी तरह, दक्षिण भारत में फर्नीचर में चंदन की लकड़ी पर बहुत अधिक जड़ाई का काम दिखाई देता है और इसमें हाथी की आकृतियाँ बहुत प्रचलित हैं जोकि यहाँ के मंदिरों से बहुत करीब से जुड़ी हुई हैं।

पूर्वोत्तर के बांस से बने हस्तशिल्प

इसी तरह पूरे भारत में रेशम के धागों की विभिन्न किस्मों से रेशम (सिल्क) की बुनाई की जाती है। अधिकांश रेशम का उत्पादन शहतूत से होता है, पूर्वी भारत में टसर रेशम अधिक लोकप्रिय है क्योंकि यहाँ बड़े पैमाने पर टसर कोकून उगाया जाता है। रेशम के क्षेत्र में भारत की स्थिति अनूठी है, यहाँ पर पूर्वोत्तर क्षेत्र में उगाए जाने वाले एरी और मुगा सहित रेशम की सभी चार किस्में मिलती हैं। रेशम के ज़िक्र के बिना भारत के ग्रामीण शिल्प का उल्लेख अधूरा है। 'पश्मीना' लद्दाख और जम्मू-कश्मीर में बनाया जाने वाला एक ऐसा वस्त्र है जो एक खास किस्म की बकरी की ऊन से बनता है। पश्मीना से

Elite Academy For Education & Training Pvt. Ltd. * Delhi *

1. बनारसी साड़ी 2. भुज, गुजरात का शीशे की (मिरर) कढ़ाई का काम 3. महाराष्ट्र की पैठानी साड़ी 4. आसाम की मुगा सिल्क साड़ी 5. कांचीपुरम सिल्क साड़ी 6. पाटन, गुजरात की पटोला साड़ी

बनी कनी शॉल, सोजनी और आरी कढ़ाई के कपड़ों की बहुत अधिक मांग है।

ईस्ट इंडिया कंपनी के आगमन और औद्योगिक क्रांति के साथ, शहरी परिदृश्य पश्चिमी देशों की तरह बदल गया। देश की अर्थव्यवस्था बाकायदा क्षतिग्रस्त हो रही थी और उसमें भी कपड़ा व्यापार सबसे बुरी तरह प्रभावित हुआ था। गाँवों में कम आवागमन और लंबे समय से चली आ रही परंपराओं की वजह से वहाँ बहुत बदलाव नहीं आया था जिससे वहाँ की कला और हस्तशिल्प अपनी गति से चलते रहे। परंपराएं, धर्म, संस्कृति, पहनावा, घर की सजावट और भोजन आदि एक-दूसरे से और जीवनशैली से इस कदर जुड़े हुए थे कि वे बिना किसी औपचारिक दखल के पीढ़ियों से चले आ रहे थे। ब्रिटिश शासन के दौरान कला और शिल्प के उत्पादन में गिरावट आई क्योंकि सरकार ने इसके संरक्षण और व्यावसायीकरण के लिए कुछ कदम नहीं उठाए थे। हालांकि यह कलाएं स्थानीय ज़रूरत और प्रोत्साहन के कारण बची रहीं।

पीतल के बर्तन या इसी तरह की अन्य धातुएं धार्मिक समारोहों में इस्तेमाल किए जाने की स्थानीय ज़रूरत के अनुरूप बनाई जाती थीं। साथ ही, महीन कारीगरी वाले चांदी के महंगे सजावटी शिल्प उत्पादों जैसे फिलगिरि या बिदरी के काम को अभिजात वर्ग और शाही परिवारों द्वारा प्रोत्साहित और संरक्षित रखा गया था। इसी तरह, शुद्ध सोने और चांदी की ज़री या मलमल वाली बनारसी साड़ियों जैसे ब्रोकेड, जिसे बुनी हुई हवा के रूप में भी जाना जाता है, को भी धनी वर्ग द्वारा संरक्षण दिया गया था। इनमें से कुछ कलाओं को उन परिवारों के जुनून के कारण संरक्षित रखा गया था, जैसे पाटन, गुजरात के साल्वी परिवार, मूल पटोला साड़ी बुनकर (प्रतिरोधी रंगाई तकनीक का उपयोग करके) और अहमदाबाद में मनसा की अश्वली साड़ी भी एक खास किस्म की साड़ी है, यह रंगीन धागे के साथ अतिरिक्त बाने की मीनाकारी से बनाई जाती है। इसी तरह, पश्चिम बंगाल की धनियाखली साड़ियां स्वतंत्रता संग्राम की प्रतीक हैं।

पॉटरी, स्टोन क्राफ्ट, मेटल क्राफ्ट, वुड कार्विंग, बुने हुए/कशीदाकारी/पेंट/प्रिंटेड टेक्सटाइल (कपड़ा) और आभूषण भारत के कुछ प्रमुख शिल्प हैं। हथकरघा और हस्तशिल्प क्षेत्र देश के ग्रामीण क्षेत्रों में एक असंगठित और विकेन्द्रीकृत उद्योग हैं और अत्यंत श्रम साध्य होने के कारण रोज़गार सृजन के मामले में ये कृषि के बाद दूसरे स्थान पर हैं।

बेहतरीन हस्तशिल्प और हैंडलूम उत्पादों के मानक तय करने के लिए कई कदम उठाए गए हैं जैसे हैंडलूम मार्क, सिल्क मार्क, इंडिया हैंडलूम ब्रांड (आईएचबी) गुणवत्ता प्रमाणन को इंगित करने वाले कुछ उपाय हैं। साथ ही, इन शिल्पों की पहचान के लिए वहाँ की भौगोलिक पहचान टैगिंग पर भी काम किया जा रहा है। सरकार इन शिल्प वस्तुओं के उत्पादन और विपणन के लिए बनाई गई विभिन्न योजनाओं के माध्यम से हथकरघा और हस्तशिल्प क्षेत्र की सहायता करती है। ❑

पारंपरिक हस्तशिल्प कौशल से महिलाएं बन रहीं आत्मनिर्भर

Elite Academy For Education & Training Pvt. Ltd. ★ Delhi ★

-डॉ. मनीष मोहन गोरे

भारत के प्रत्येक राज्य और उसके विभिन्न स्थानों का हस्तशिल्प विविध परंपराओं और संस्कृतियों सहित स्थान विशेष की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की झलक प्रस्तुत करते हैं। सदियों से ये अनोखे शिल्प ग्रामीण समुदायों के भीतर संस्कृति और परंपरा सहित विशिष्ट कौशल को अपने में समेटे हुए हैं। ये तमाम हस्तशिल्प अपने आप में महत्वपूर्ण कुटीर उद्योग हैं। ये ग्रामीण हस्तशिल्प उत्कृष्ट कौशल, उद्यमिता, ग्रामीण जीविकोपार्जन के महत्वपूर्ण स्रोत हैं। बरसों से इन उद्यमों में पुरुषों के साथ महिलाएं कंधे से कंधा मिलाकर काम करती आई हैं। ग्रामीण हस्तशिल्प और उनसे संबद्ध कौशल महिला सशक्तीकरण का पर्याय बनते जा रहे हैं।

भारत एक सांस्कृतिक और पारंपरिक विविधता वाला देश है। विभिन्न संस्कृतियों और परंपराओं से एक अतुल्य भारत की छवि उभरती है जिसका प्रकटीकरण अनेक प्रकार के ग्रामीण हस्तशिल्पों के रूप में होता है। आश्चर्यजनक कला और हस्तशिल्प के रूप में यह देश अपनी सदियों पुरानी पारंपरिकता की जड़ों को सहेजकर रखे हुए है। भारत के पारंपरिक शिल्प भारतीय संस्कृति को एक मज़बूत आधार प्रदान करते हैं जिसने देश को न केवल विश्वव्यापी मान्यता प्रदान की है बल्कि ये पर्यटकों को भी आकर्षित करते हैं। भारत के प्रत्येक राज्य और उसके विभिन्न स्थानों का हस्तशिल्प, विविध परंपराओं और संस्कृतियों सहित स्थान विशेष की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की झलक प्रस्तुत करते हैं। सदियों से ये अनोखे शिल्प ग्रामीण समुदायों के भीतर संस्कृति और परंपरा सहित विशिष्ट कौशल को अपने में समेटे हुए हैं।

ये तमाम हस्तशिल्प अपने आप में महत्वपूर्ण कुटीर उद्योग हैं। ये ग्रामीण हस्तशिल्प उत्कृष्ट कौशल, उद्यमिता, ग्रामीण जीविकोपार्जन के महत्वपूर्ण स्रोत हैं। बरसों से इन उद्यमों में पुरुषों के साथ महिलाएं कंधे से कंधा मिलाकर काम करती आई हैं। इस प्रकार ग्रामीण हस्तशिल्प और उनसे संबद्ध कौशल महिला

लेखक सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली में वैज्ञानिक के पद पर कार्यरत हैं।
ई-मेल : mmg@niscpr.res.in

पिपली शिल्प से संवरता ओडिशा की महिलाओं का भविष्य

सशक्तीकरण का पर्याय बनते जा रहे हैं। ग्रामीण महिलाएं इन हस्तशिल्पों के माध्यम से आत्मनिर्भर हो रही हैं। इस लेख में भारत के उन चुनिंदा पारंपरिक ग्रामीण शिल्पों के बारे में चर्चा की गई है, जिनमें महिलाओं ने भागीदारी सुनिश्चित करके उत्कृष्ट योगदान दिया है। स्वयं के सशक्तीकरण सहित इन ग्रामीण हस्तशिल्पों के उत्थान तथा ग्रामीण जीविकोपार्जन में महिलाओं की अहम भूमिका रही हैं।

चाभरी और बिन्ना हस्तशिल्प

चाभरी और *बिन्ना* जैसे पारंपरिक शिल्प जंगली घास और ताड़ के पत्तों से बनाए जाते हैं। जम्मू व कश्मीर की संस्कृति में *चाभरी* दरअसल एक पारंपरिक ट्रे या कंटेनर को कहते हैं जिसका उपयोग परिवार के सदस्यों और मेहमानों को भोजन परोसने के लिए किया जाता है। अतीत में, जम्मू व कश्मीर में परिवार के सदस्यों द्वारा पारंपरिक बैठने के आसन के रूप में *बिन्ना* का उपयोग किया जाता था।

चाभरी और बिन्ना कौशल में स्थानीय ग्रामीण महिलाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। अनेक स्वयंसहायता समूह जम्मू कश्मीर के इस हस्तशिल्प के विकास में अपना योगदान दे रहे हैं। कोस्टर, वॉल डेकोरेशन, पेन स्टैंड, रोटी बॉक्स, ज्वैलरी बॉक्स और लॉन्ड्री बैग बनाने में इस कौशल का इस्तेमाल होता है। इस ग्रामीण शिल्प को उपयोगी और लाभकारी बनाने सहित आधुनिक स्वरूप प्रदान करने के लिए जम्मू व कश्मीर ग्रामीण आजीविका मिशन (जेकेआरएलएम) अनोखा कार्य कर रहा है। यह हस्तशिल्प पर्यावरण की दृष्टि से टिकाऊ होने के साथ-साथ स्वयंसहायता समूह की महिला सदस्यों की आजीविका और आत्मनिर्भरता का समर्थन भी करता है।

पारंपरिक घास से बनाया जाने वाला यह ग्रामीण हस्तशिल्प एक से दूसरी पीढ़ी तक चलता हुआ आगे बढ़ रहा है। इसे जम्मू और कश्मीर की सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण घटक माना जाता है। यह एक कला का स्वरूप है जिसमें केवल आसानी से उपलब्ध कच्चे माल जैसे घास और ताड़ के पत्तों का उपयोग करके पूरी तरह से हस्तनिर्मित कार्यात्मक और सजावटी सामान बनाए जाते हैं। आरम्भ में स्वयंसहायता समूह की महिलाओं द्वारा बड़ी संख्या में असंगठित तरीके से श्रम किया जाता था और वे आमतौर पर घरेलू उपयोग के लिए चाभरी और बिन्ना बनाती थीं। उन्हें उनकी बिक्री करने पर कम कीमत मिलती थी। हालांकि, आज के समय में पर्यावरण अनुकूल वस्तुओं की बढ़ती मांग होने के कारण अब इन हस्तशिल्प उत्पादों की कीमत में इज़ाफा हुआ है।

जम्मू व कश्मीर ग्रामीण आजीविका मिशन ने *चाभरी* और *बिन्ना* को लेकर ग्रामीण उद्यमिता और संबद्ध आजीविका गतिविधि के दायरे का निर्धारण करने के बाद महिला कारीगरों की पहचान करने के लिए सर्वेक्षण किया। ग्रामीण समुदायों में घास के हस्तशिल्प बनाने के लिए कार्यशालाएं भी आयोजित की गईं। जम्मू व कश्मीर ग्रामीण आजीविका मिशन द्वारा महिलाओं को सशक्त बनाने और उनके लिए आय के वैकल्पिक स्रोत का सृजन करने के उद्देश्य से कई पहल की गई हैं। इस दिशा में चिह्नित स्वयंसहायता समूह सदस्यों को इस पारंपरिक हस्तकला में प्रशिक्षित किया गया और उनकी क्षमताओं को बढ़ाने के लिए अनेक कौशल विकास प्रशिक्षण प्रदान किए गए। इन प्रयासों से प्रीमियम घास हस्तकला उत्पादों के लिए बाज़ार की मांग को बड़े पैमाने पर पूरा करने सहित उत्पादन आधार की वृद्धि को प्रोत्साहन मिला है। पारंपरिक शिल्पों के संरक्षण को बढ़ावा देने की दिशा में लगभग 100 स्वयंसहायता समूह शामिल हैं।

अगर इन ग्रामीण हस्तशिल्पों की पृष्ठभूमि में झांकें तो हमें असंख्य दिक्कतें देखने को मिलती हैं। यदि घास के हस्तशिल्प के कलाकारों की बात करें तो उनकी ओर किसी भी संस्था या सरकार का उचित ध्यान नहीं जा रहा था। श्रम की तुलना में उत्पादों से कम वित्तीय रिटर्न, बाज़ार और विपणन ज्ञान की कमी, मशीन से बने उत्पादों से जुड़ी प्रतिस्पर्धा, बुनियादी सुविधाओं की कमी और पारंपरिक शिल्प में युवा पीढ़ी में उत्साह की कमी जैसी तमाम बाधाएं थीं, जिन्हें संबोधित किया गया।

सामाजिक जागरूकता है कारगर उपाय

किसी भी पारंपरिक हस्तशिल्प से जुड़े शिल्पकारों और स्वयंसहायता समूह के सदस्यों के ज्ञान और क्षमताओं को आगे बढ़ाने के लिए शहरी तथा ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में कार्यशालाओं के आयोजन से सामाजिक जागरूकता आती है। महिलाओं द्वारा व्यवसाय के सफलतापूर्वक संचालन को सुगम बनाने हेतु आवश्यक उपकरण संबंधी कौशल प्रदर्शन, डिज़ाइन निर्देश, रचनात्मक और उत्पाद विकास सेमिनार, मूल्य निर्धारण, विपणन, ब्रांडिंग और माइक्रोफाइनेंसिंग का आयोजन किया जाना अनिवार्य अपेक्षाएं होती हैं। उन्हें प्रचार के लिए आधुनिक विपणन तकनीकों, बाज़ार में अपने उत्पादों की स्थिति और उसके अनुसार कीमतें निर्धारित करने के तरीकों के बारे में भी सिखाया जाना कारगर साबित होता है।

चाभरी और *बिन्ना* की महिला शिल्पकारों को इस हस्तशिल्प के नए और पुराने दोनों डिज़ाइनों का उपयोग करके संतुलन बनाने के लिए तकनीकों का उपयोग करने के तरीके पर प्रशिक्षण दिया गया। शिल्पकारों और शहरी डिज़ाइनरों के बीच सहयोग को बढ़ावा देने और क्षमता की जांच करने के लिए जम्मू व कश्मीर ग्रामीण आजीविका मिशन द्वारा संचालित जागरूकता पहल ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जम्मू-कश्मीर के इन दोनों हस्तशिल्पों में 100 महिलाओं को सशक्त बनाने में सफलता मिली जो अब इस कौशल में आत्मनिर्भर हैं और वित्तीय स्वतंत्रता हासिल कर चुकी हैं। इन हस्तशिल्प के उत्पादों के लिए बाज़ार की प्रतिक्रिया अत्यधिक सकारात्मक रही है। उनके ग्राहकों में कई ई-कॉमर्स खुदरा विक्रेता, शैक्षणिक संस्थान और महानगरीय और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों के ग्राहक शामिल हैं। महज 50,000

पोखरण की महिलाएं बनीं मिसाल

पश्चिमी राजस्थान के सीमावर्ती ज़िले जैसलमेर की पोखरण तहसील की महिलाओं ने हस्तकला के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने का एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया है। परमाणु परीक्षण करने के बाद भारतीयों का गौरव बना पोखरण अब महिला सशक्तीकरण के मामले में तेज़ी से विश्व पटल पर अपनी पहचान बना रहा है। जोधपुर से 175 किमी. और जैसलमेर शहर से 110 किमी. दूर स्थित इस क्षेत्र की अर्थव्यवस्था को मज़बूती मिल रही है क्योंकि यहाँ की महिलाओं ने स्थानीय हस्तकला को आय का एक महत्वपूर्ण स्रोत बना लिया है। इससे न केवल अर्थव्यवस्था मज़बूत हो रही है बल्कि क्षेत्र को एक नई पहचान भी मिल रही है। ग्रामीण महिलाओं को प्रशिक्षण और आवश्यक कौशल प्रदान करने के लिए बैंक सहित गैर-सरकारी संगठनों का समर्थन प्राप्त हो रहा है।

वर्ष 2019 से लेकर अभी तक इस क्षेत्र की सैकड़ों ग्रामीण महिलाओं को हस्तकला विकास का प्रशिक्षण देकर स्वरोजगार के लिए तैयार किया गया है। 21 दिनों के प्रशिक्षण के दौरान, महिलाओं को चरखा चलाना, गट्टा भरना (चरखा का वह हिस्सा जिस पर धागा लगा होता है), सहित हथकरघा और खादी करघा चलाकर कपड़े बुनना सिखाया जाता है। इसी तरह, ग्रामीण महिलाओं को कटवर्क कढ़ाई का प्रशिक्षण भी दिया जाता है। सबसे प्रशंसनीय बात यह है कि 'घूंघट' से चेहरे को ढंकने वाली महिलाएं भी अपनी पारंपरिक हस्तकला बुनाई और कटवर्क प्रशिक्षण प्राप्त करके इस कला को बढ़ावा देने के लिए आगे आ रही हैं।

हस्तशिल्प से संबंधित कौशल ने पोखरण की ग्रामीण महिलाओं में आत्मविश्वास जगाया है

रुपये की लागत से उनका सालाना टर्नओवर 5 लाख रुपये तक पहुँच गया है। घास के उत्पाद बनाने के पारंपरिक शिल्प की बहाली के लिए, इन महिलाओं को केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्रालय की आत्मनिर्भर महिलाओं की प्रेरणादायक कहानियों में सम्मिलित किया गया है।

पिपली शिल्प - ओडिशा में ग्रामीण महिलाओं के लिए आजीविका और सम्मान का आधार

पिपली सुई का काम एक प्राचीन शिल्प है जो ओडिशा के कई हिस्सों में प्रचलित है। इस शिल्प में कपड़े के एक बड़े टुकड़े पर कपड़े के छोटे-छोटे टुकड़ों की सिलाई करके कलात्मक डिज़ाइन तैयार किए जाते हैं। यह अलंकरण कौशल केवल एक प्रतिभा नहीं है, बल्कि राज्य के कई कारीगरों के लिए एक पूर्णकालिक पेशा है। तैयार उत्पादों का उपयोग कपड़ों और सजावट के उद्देश्यों के लिए किया जाता है।

नयागढ़ ज़िले के रानपुर ब्लॉक के बृंदाबनपुर ग्राम पंचायत की रहने वाली सुश्री कल्पना महाराणा एक ऐसी ही कारीगर हैं, जिन्होंने ओडिशा आजीविका मिशन (ओएलएम) के सहयोग से एक सफल एप्लिक वर्क वेंचर स्थापित किया है। औसतन, वह अपने उत्पादों को बेचकर मासिक आधार पर लगभग 11,000 रुपये से 15,000 रुपये कमाती हैं। शुरुआत में, कल्पना को स्टार्टअप विलेज एंटरप्रेन्योरशिप प्रोग्राम (एसवीईपी) के अंतर्गत 50,000 रुपये का ऋण दिया गया था। ऋण के सफल पुनर्भुगतान के बाद, उन्हें बृंदाबन ग्राम पंचायत स्तरीय संघ (जीपीएलएफ) के माध्यम से सामुदायिक निवेश कोष (सीआईएफ) से 60,000 रुपये प्राप्त हुए।

कल्पना महाराणा अपने धैर्य, दृढ़ संकल्प और ओडिशा आजीविका मिशन के समर्थन के माध्यम से, अपने लिए एक विशिष्ट उद्यम बनाने में सफल रहीं। उनके प्रयास ने न केवल उनकी घरेलू आय बढ़ाने में मदद की है, बल्कि इससे गाँव के अन्य लोगों को रोज़गार भी मिला है। कल्पना आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने के लिए अन्य महिलाओं और लड़कियों को हस्तशिल्प उत्पाद का प्रशिक्षण देकर अपने कौशल और ज्ञान को भी साझा कर रही हैं।

अपने वेंचर के जरिए आज कल्पना ने अपने गाँव की 6 लड़कियों को रोज़गार दिया है। वे खूबसूरत बैग, एप्लीक वॉल-हैंगिंग और घर की सजावट की अन्य वस्तुओं का निर्माण करती हैं। तैयार उत्पादों को वितरित करने के लिए आवश्यक समय और निवेश के आधार पर इन उत्पादों की कीमत 100 रुपये से 5000 रुपये के बीच है।

नारियल शेल हस्तशिल्प

केरल के इस सुंदर पर्यावरण अनुकूल हस्तकला के लिए सौंदर्य और विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है क्योंकि नारियल के कठोर बाह्य आवरण पर उत्कृष्ट पैटर्न बनाना बहुत मुश्किल काम होता है। यह पारंपरिक हस्तशिल्प केरल के शिल्पकारों के पारंपरिक हस्तशिल्पों में से एक है। इसका प्रयोग विभिन्न आकार और आकृतियों वाले सजावटी उत्पादों को बनाने में किया जाता है।

कल्पना अपने गाँव में एक आइकन के रूप में उल्लेखनीय उदाहरण बन गई हैं, जो एक सफल व्यवसाय चला रही हैं और दूसरों के लिए भी रोज़गार के अवसर सृजित कर रही हैं। उनकी वित्तीय स्वतंत्रता, सभी बाधाओं के बावजूद, अधिकांश ग्रामीण महिलाओं को उद्यमी बनने के लिए प्रेरित करती है। वह आत्म-निर्भरता और सफलता का प्रतीक बन गई हैं। ओएलएम ने मिशन द्वारा समर्थित योजनाओं और नीतियों के माध्यम से अपने सपनों को हासिल करने के लिए कई महिला उद्यमियों को बढ़ावा दिया है।

केले के रेशों से विकसित हस्तशिल्पः वेस्ट टू वेल्थ का उत्तम उदाहरण

उत्तर प्रदेश के लखीमपुर खीरी ज़िले के ईशानगर ब्लॉक के मां सरस्वती ग्राम संगठन के 25 सदस्यों द्वारा शुरू की गई। केले के रेशे की उत्पादन इकाई ने स्थानीय निवासियों खासतौर पर महिलाओं को पारंपरिक कृषि पद्धति के साथ अपशिष्ट से उपयोगी सामग्री निर्माण के लिए प्रेरित किया और उन्हें आत्मनिर्भर बनाया है। यहाँ की जलवायु परिस्थितियाँ केले की फसल के उत्पादन के अनुकूल हैं। इसके अलावा, स्थायी रूप से उत्पादित उपज की मांग के साथ मिलकर, इस कौशल ने ग्रामीणों के लिए एक वरदान के रूप में काम किया है। हालांकि केले के रेशों के उत्पादन के लिए बड़ी संख्या में मानव संसाधन की आवश्यकता होती है, लेकिन यह उद्यम श्रमसाध्य नहीं है। यह लोगों को रोज़गार प्रदान करने वाला एक लाभदायक उद्यम है और पर्यावरण के अनुकूल भी है।

केले का रेशा मूल रूप से फल तोड़ने के बाद इसके तने को छीलकर प्राप्त किया जाने वाला रेशा होता है। केले के पौधों की सभी किस्मों में भरपूर मात्रा में फाइबर पाया जाता है। फल उत्पादन के बाद, केले के पौधे के तने को काफी हद तक कृषि अपशिष्ट के रूप में फेंक दिया जाता है। मशीन की मदद से इस अवशेष को टुकड़ों में काटकर फाइबर बनाने के लिए प्रोसेस किया जाता है। इसके बाद रेशों को सुखाकर बिक्री के लिए भंडारित किया जाता है। फाइबर का उपयोग पर्यावरण के अनुकूल उत्पादों जैसे हैंडबैग, फ्लोर मैट, बेल्ट, परिधान सहित साड़ी, असबाब, कालीन आदि के उत्पादन के लिए कच्चे माल के रूप में किया जाता है।

आजकल पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ने के कारण लोग पर्यावरण के अनुकूल उत्पादों को खरीदने के लिए अधिक इच्छुक हैं। हालांकि, बाज़ार में ऐसे उत्पादों की आपूर्ति आमतौर पर मांग को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं होती है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए, केला फाइबर उद्यम में निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करके बाज़ार में एक अच्छा व्यवसाय करने की बहुत बड़ी संभावना है। यह बहुत मुश्किल नहीं है क्योंकि ईशानगर ब्लॉक में बड़ी संख्या में किसान केले की फसल लगाते हैं। इस दृष्टि से केले के रेशे की भारी मांग को पूरा करते हुए कच्चे माल की उपलब्धता सुनिश्चित की जा सकती है। इस उद्यम में बड़ी संख्या में मानव भागीदारी की आवश्यकता होती है इसलिए यह स्थानीय बेरोज़गार युवाओं के जीविकोपार्जन के लिए उपयोगी है।

केले के रेशों का वस्त्र और कागज उद्योग में बहुत उपयोग होता है। गुणवत्ता परीक्षण पास करने के बाद इसकी उत्पादन इकाई को अब सूरत, अहमदाबाद, कानपुर आदि जैसे औद्योगिक केंद्रों से थोक ऑर्डर मिल रहे हैं। हाल ही में इसे अहमदाबाद की एक कंपनी से 200 किलोग्राम केले के रेशे का ऑर्डर मिला है। उत्पाद को ऑनलाइन बिक्री के लिए इंडिया मार्ट पर भी पंजीकृत किया गया है।

संक्षेप में, स्थानीय हस्तशिल्प से संबंधित रोज़गार ने ग्रामीण महिलाओं को न केवल सशक्त और स्वावलंबी बनाया है बल्कि समाज में एक सम्मानजनक स्थान भी दिया है। जिन क्षेत्रों में रोज़गार की कमी है, वहाँ पारंपरिक हस्तशिल्पों को पुनर्जीवित करने और ग्रामीण महिलाओं को स्वरोज़गार से जोड़ने के लिए संगठित प्रयासों की आवश्यकता है। पोखरण का उदाहरण अनुकरणीय है जहां पारंपरिक बुनाई के विश्व बाज़ार में पहुँचने के साथ ही अब स्थानीय ग्रामीण महिलाएं आत्मनिर्भर बन रही हैं। ❑

Publications Division
Ministry of Information & Broadcasting
Government of India

Elite Academy For Education & Training Pvt. Ltd. ★ Delhi ★

Invites applications for empanelling

E-Resource Aggregators (ERA)

Opportunity to associate with government's premier publishing house and sell its e-Publications

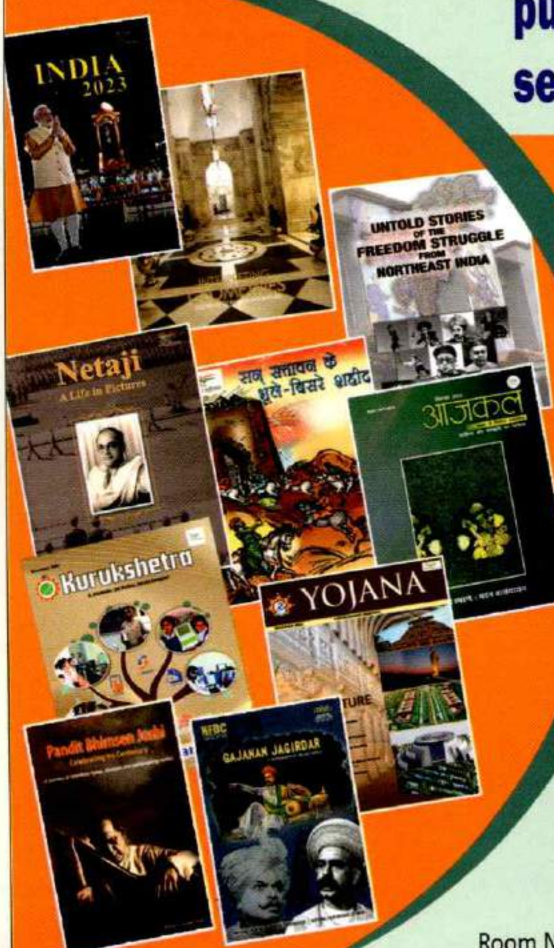

Features:

- Providing access to highly sought after e-books and e-journals of the Division
- Assured 30% share in revenue
- Zero investment
- Nominal registration fee of Rs. 2000/-

For more information
Visit www.publicationsdivision.nic.in

Contact us
Business Wing
011- 24365609
businesswng@gmail.com
Room No. 758, Soochna Bhawan, Lodhi Road, New Delhi 110003

कुल पृष्ठ : 56
आई.एस.एस.एन. 0971-8451
प्रकाशन की तिथि : 1 मई 2023
डाक द्वारा जारी होने की तिथि : 5-6 मई, 2023

R.N.I/708/57
P&T Regd. No. DL (S)-05/3164/2021-23
Licenced under U (DN)-54/2021-23
to Post without pre-payment at R.M.S. Delhi.
DL(DS)-49/MP/2022-23-24 (Magazine Post)

आज़ादी का अमृत महोत्सव

Elite Academy For Education & Training Pvt. Ltd. ★ Delhi ★

भारत 2023

भारत के प्रांतों, केंद्रशासित प्रदेशों, भारत सरकार के मंत्रालयों और विभागों तथा नीतियों, कार्यक्रमों और उपलब्धियों की आधिकारिक जानकारी देने वाला

वार्षिक संदर्भ ग्रंथ

भारत 2023 INDIA
वसुधैव कुटुम्बकम्
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

मोटे अनाजों का अंतरराष्ट्रीय वर्ष 2023

ऑर्डर के लिए संपर्क करें :
फोन : 011-24367260
ई-मेल : businesswng@gmail.com
हमारी पुस्तकें ऑनलाइन खरीदने के लिए
कृपया www.bharatkosh.gov.in पर जाएं।

प्रकाशन विभाग

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय,
भारत सरकार
सूचना भवन, सी जी ओ कॉम्पलेक्स,
लोधी रोड नई दिल्ली -110003
वेबसाइट : www.publicationsdivision.nic.in

सूचना भवन की पुस्तक दीर्घा में पधारें

@publicationsdivision   @DPD_India   @dpd_India

प्रकाशक और मुद्रक: अनुपमा भटनागर, महानिदेशक, प्रकाशन विभाग, सूचना भवन, सीजीओ कॉम्पलेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003
मुद्रक : संदीप प्रेस, सी105/2, इंडस्ट्रीयल एरिया फेस-1, नारायणा, नई दिल्ली-110028   वरिष्ठ संपादक: ललिता खुराना